१ में १०० पुस्तक.

जिसको
नजीबाबाद निवासी पण्डित कुन्दन
लालात्मज पण्डित हरिशङ्कर शास्त्री
ने निजव्ययसे शुद्धतापूर्वक
बम्बई
टाईप में मुद्रित कराया

पुस्तक मिलने का ठिकाना :-
पण्डित हरिशंकर शास्त्री
अध्यक्ष संस्कृत महाविद्यालय
हरद्वार

प्रथमबार } सम्बत् १९५७ वि० { मूल्य १)

CAWNPORE
DIAMOND JUBILE PRESS



१०० पुस्तकों की सूची ।

१, रु० में १०० पुस्तक



श्रीगणेशायनमः।

अथ गणेशपुराणप्रारम्भः

दोहा ॥ एकरदनगजवदनके, पगवंदौंकर जोरि ॥ कृपाकरहुशिवनंदन, बुद्धिबढ़ैजेहिमोरि ॥१॥ व्यासआदिनरपुंगव, नारदआदिमुनीश ॥ दिनकरब्रह्माशेषगुरु, सबकहँनावोंशीश ॥ २ ॥ चौपाई ॥ राजायुधिष्ठिरउवाच—सुनोस्वामितुमम दनगोपाला ॥ सदाकरौसंतनप्रतिपाला ॥ विप तिहमारिविलोकहुस्वामी ॥ कृपासिंधुउरअन्तर्या मी ॥ छलकीन्होंदुर्योधनराजा ॥ जीतिलीन्हम मराज्यसमाजा ॥ वनहिंनिकारिदीन्हदुखदाई ॥ काननफिरौंदुसहदुखपाई ॥ तेहितेप्रभुविनवौंकर जोरी ॥ केहिविधिपावौंराज्यबहोरी ॥ कृष्णकहा सुनुवचननरेशा ॥ तुवहितलागिकहौंउपदेशा ॥

पूजोगणपतिमनचितलाई ॥ तेहिपूजेसबदुखमिटिजाई ॥ विघ्नहरनहैजाकरनामा ॥ तेहिपूजेपैहौविश्रामा ॥ दोहा ॥ कृष्णवचनसुनिधर्मसुत, बोलेपदशिरनाइ ॥ गणपतिकवनसुनाथहैं,सोमोहिंकहौबुझाइ ॥ ३ चौपाई ॥ सुनौभूपपरमारथवादी ॥ गणनायकहैंदेवअनादी ॥ शिवकोतनयविदितत्रैलोका ॥ तिन्हेंपूजिजगहोइविशोका ॥ सुनिकहधर्मतनयकरजोरी ॥ नाथसुनोइकविनतीमोरी ॥ गणपतिआदिदेवतुमकहेऊ ॥ शंभुतनयकेहिभाँतिसोभयऊ ॥ यहससुझाइकहौयदुनाथा ॥ बारबारनावौंपदमाथा ॥ हँसिकहकृष्णसुनोतुमभूपा ॥ गणनायककीकथाअनूपा ॥ आदिदेवकोउपारनपावैं ॥ वेदपुराणहुमुनिजनगावैं ॥ आदिकल्पतेजगविस्तारा ॥ तबतेगणपतिपूजिभुवारा ॥ दोहा ॥ तीनलोकसबपूजते, सुरनरआतमशेष ॥ शंभुतनयजेहिभाँतिभो, सोअबसुनोनरेश ॥४॥ चौपाई ॥ एकसमयगिरिवरकैलासा ॥ सहितउमाशिवकरतविलासा ॥ करिकछुरामकथागुणगाना॥ महादेवतबगयेअसनाना॥ बैठीगिरिजासदनसुहाये॥ताहिसमयनारदऋषिआये॥उठिकैउमावि

नयबड़ िकीन्हा॥आसनदैचरणोदकलीन्हा॥धन्य भाग्यहैआजुहमारा॥कृपाकीन्हमुनियहँपगुधारा॥ केहिकारणआगमनतुम्हारा॥कहौऋषीश्वरकरत विचारा॥ तबबोलेनारदमृदुबानी ॥वचनएकमम सुनहुभवानी॥दोहा॥बहुदिनबीतेब्रह्मपुर, मनम हँभयेउदास॥ शिवदरशनकेकारणे, चलिआयोंकै लास॥५॥चौपाई॥शंभुकहाँगयेशैलकुमारी॥सोतु महमसोंकहौविचारी॥बोलीबचनउमाहितकारी॥ मज्जनकरनगयेत्रिपुरारी॥तबनारदबोलेमृदुबानी सुनोएकआचरजभवानी॥नरशिरमालशंभुउजरेऊ तुमजानहुतिन्हकरकछुभेऊ॥उमाकहाप्रभुमैंनहिं जानो॥ मिथ्यातुमसोंकहाबखानो ॥ तबनारद कहवचनरसाला॥तुम्हरेशिरकेहैंजयमाला॥तुम सेशिवकछुअंतरराखा॥ जोयहकथाकबहुँनहिंभा षा॥ जबआवैंशिवकरिअस्नाना ॥ तबतुमपूँछेउ सकलविधाना॥दोहा॥ असकहिनारदनाइशिर, चलेभवनहर्षाइ ॥ मुनिवरकेरेवचनसुनि, बैठिउमा बिलखाइ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ यहिअंतरशंकरचलि आये॥ देखीउमाविषादबढ़ाये ॥ तबशंकरबोले मृदुबानी ॥ केहिकारणदुखकीन्हभवानी ॥ उमा

कहाशिवपदशिरनाई ॥ संशयएकअहैममसांई ॥ तुम्हरेहृदयमुंडकीमाला ॥ सोकेहिकेशिरआहिंकृपाला ॥ तवशङ्करबोलेमुसकाई ॥ कौनेतुम्हरीमतिभरमाई ॥ मुंडमालममहृदयभवानी ॥ कथातासुकीसुनोसयानी ॥ जबजबजन्मतुम्हारोहोई ॥ रामकृपासोंव्याहौंसोई ॥ समयपाइजोत्यागहुदेहा ॥ तबतुमशिरकेमालजुएहा ॥ दोहा ॥ जितनेजन्मतुम्हारिभे, देहतजेकरिभोग ॥ तबतबशिरकेमालकिय, प्रियातुम्हारेसोग ॥७॥ यहसुनिगिरिजावचनउचारी ॥ सुनहुवचनममनाथपुरारी ॥ तुमअवतारभयोप्रभुएका ॥ काविकारममजन्मअनेका ॥ मोरमनप्रभुभयउअँदेशा ॥ सोसमस्तमोहिंकहौंमहेशा ॥ तवशङ्करकहगिरासुनाई ॥ हृदयसुमिरिनिजप्रभुरघुराई ॥ बीजमंत्ररघुनायककेरा ॥ सोममहृदयेकरतबसेरा ॥ तातेमोरहोइनहिंनाशा ॥ बीजमंत्रादियअल्पप्रकाशा ॥ बीजमंत्रतुमजानतिनाहीं ॥ तातेजन्मधरेविपुलाहीं ॥ तबगिरिजाबोलीकरजोरी ॥ विश्वनाथसुनुविनतीमोरी ॥ दासीजानिकृपाअबकीजे ॥ बीजमंत्रहमहूँकोदीजै ॥ दोहा ॥ शङ्करबोलेवचनतब, सुनहुउमाममवानि ॥

विपुलजीवबसशैलपर, केहिविधिकहौंबखानि॥८॥
चौपाई॥ जोयहमंत्रसुनैकोइपावै॥ ताकेकालानि
कटनहिंआवै॥ अजरअमरसोहोइभवानी॥ ताते
केहिविधिकहौंबखानी॥ तबगिरिजाकहगिरासु
हाई॥ देहुजीवप्रभुसकलभगाई॥ तबशङ्करचित
येकरिक्रोधा॥ भागेजीवसकलचहुँरोधा॥ आदि
पिपीलजहांतहँजाई॥ सर्वजीवउड़िचलेपराई॥
जीवरहितगिरिदेखिकृपाला॥ बैठिबिछाइनागरि
पुछाला॥ जेहितरुतरबैठेसुरनाहा॥ तहँबसिकीर
दीनयकराहा॥ दोहा॥ तेहिमेंअण्डाएकधरि,
कीरसोगयोउड़ाइ॥ जोभावीसोनामिटै, सुनोयु
धिष्ठिरराइ॥९॥ बीजमंत्रशिवउमाहिंसुनावा॥ अंड
जीवसुनिकेचितलावा॥ कहतसुनतअंडासुखभ
यऊ॥ बारहवर्षबीतितबगयऊ॥ जोजोमंत्रउमाहिं
शिवदीन्हा॥ सोसोसबअंडजसुनिलीन्हा॥ द्वाद
शवर्षजुगयेसिराई॥ माताकहँआईअलसाई॥
सोवतजानिगिरीशकुमारी॥ तबतेकीरदीन्हहुंका
री॥ यहिअंतरकहिकथासिरानी॥ उमाजगाइक
हाशिववानी॥ जहँलगिसुनाकहौंसबगाई॥ अं
तरलखिशिवकहाबुझाई॥ कथापुनितहमकहाब

खानी ॥ हुंकारीकोदीन्हभवानी ॥ उमाकहाप्रभु
मैंगइसोई ॥ देखहुनाथजीवकोउहोई ॥ तबशङ्कर
चितयेधरिध्याना ॥ सुनाबीजखगकीरनिधाना ॥
करत्रिशूललैउठेरिसाई।कीरदेखिउड़िचलोपराई ॥
भागैखगव्याकुलअतिशोका ॥ भरमतफिरैसकल
त्रयलोका ॥ जहँजहँखगशरणागतभाषा ॥ शिव
द्रोहीकाहूनहिंराखा ॥ दोहा ॥ पाछेशिवधावत
फिरे, कियेक्रोधदुखमूल ॥ जोभावीसोनामिटै, छू
टैनाहिंत्रिशूल ॥१०॥ चौपाई ॥ जबअतिकीरवि
कलमनभयऊ ॥ उड़तउड़तव्यासाश्रमगयऊ ॥
व्यासनारितेहिसमयभुवारा ॥ ऋतुमज्जनकरिसू
र्य्यनिहारा ॥ ताहिसमयआइजमुहाई ॥ वदनपंथ
खगगयउसमाई ॥ पाछेशंभुपहूँचेजाई ॥ भयदेखा
इत्रियमाथनवाई ॥ कहैशंभुसुनुऋषिकीनारी ॥
चोरहमारोदेहुनिकारी ॥ मुनित्रियकहैनाथनहिं
जानो ॥ कहाँचोरमैंकहाँबखानो ॥ तबहीबोलेशं
भुसुजाना ॥ उदरतुम्हारेचोरसमाना ॥ दोहा ॥
देनिकारिरिपुमोरहै, करौवचनविश्वास ॥ नाहिंतो
अबहींमुनित्रिया, करौंतुम्हारोनाश ॥११॥ चौ० ॥
यहिअंतरव्यासऋषिआये ॥ देखिशंभुपदशीशन

वाये ॥ समाचारसुनिकहेमुनीशा ॥ वचनहमार सुनोजगदीशा ॥ त्रियाजानिप्रभुवधनाहिंकीजै ॥ बालकहोइसोआपहिलीजै ॥ मुनिकेवचनसुनत अतिहेतू ॥ भयेप्रसन्नतबैवृषकेतू ॥ तवमुनिसोंहँसिकहेमहेशू ॥ दीनपुत्रतोहितजोअँदेशू ॥ होई पुत्रमहाविज्ञानी ॥ तासुचारित्रतिहूँपुरजानी ॥ हाथजोरिमुनिविनतीकीन्हा ॥ भयेप्रसन्नशंभुवरदीन्हा ॥ वरदैशंभुगयेकैलासा ॥ मुनिहिपुत्रकीउपजीआसा ॥ दोहा ॥ पूरेदिनबालकभयो, शुकते सुनहुभुवाल ॥ शुकाचारअसनामतेहि, राखेउ व्यासकृपाल ॥१२॥ चौपाई ॥ इहाँशंभुआयेकैलासा ॥ बैठेहृदयलागिअतित्रासा ॥ देखतशिवाक्रोधभोभारी ॥ तबहिंउमासोंकहाविचारी ॥ तुम्हरे सङ्गनकाजहमारा ॥ जाउजहाँमनरुचैतुम्हारा ॥ जबगिरिजाशिवआयसुपाई ॥ उठिकैचलीचरणशिरनाई ॥ शिवशिवभाषतउरअभिलाषा ॥ गईजहाँतहँपुत्रविसाषा ॥ मातालखिगुहकीन्हप्रणामा ॥ कहुजननीआईकेहिकामा ॥ सबप्रभावजब उमासुनावा ॥ षट्मुखहृदयसोचतबआवा ॥ करिविचारबोलेसुनुमाता ॥ राखौंइहांक्रोधकरताता ॥

पितावचनमोहिंमेटिनजाई ॥ कठिनकर्मकीन्हेतु
मसाई ॥ दोहा ॥ शिवप्रभावकोसमुझिकै, कहा
षड़ाननबात ॥ मातुतपस्याकरहुतुम, सिद्धकरहिं
गेंतात ॥१३॥ चौपाई॥ सुतकेवचनसुनतमनभाये।
उमाचलीकिष्किंधहिआये ॥ तेहिगिरिपरइकगुहा
सुहाई॥ तहांजायतोतपमनलाई॥ यहिविधिकाल
बीतिकछुगयऊ ॥ सुनोभूपआगेजसभयऊ॥ एक
समयनिजदेहनिहारी ॥ उबटनाकियगिरिराजकु
मारी ॥ तनुकरमैलजुछूटभुवारा ॥ सोउठायमन
कीन्हविचारा ॥ बालकरचिकीन्हेउहरिध्याना ॥
तनुसहजीवकरोभगवाना ॥ हरिइच्छासोभयेनरे
शा॥ गणनायकतहँकीन्हप्रवेशा॥ तनयशीशकर
परशेजबहीं॥ कीन्हसजीवरमापतितबहीं॥ दो० ॥
तनयसजीवनदेखिकै, मनअनंदतबकीन्ह ॥ अति
ज्ञानीसुनहोहुतुम, माताआशिषदीन्ह ॥ १४ ॥
चौपाई ॥ सुतसोंबोलीवचनभवानी ॥ सुनोतात
मानोममबानी ॥ गुफाद्वारधरिबैठहुजाई॥ हमयहँ
करिशिवतपमनलाई ॥ भीतरआननपावैकोई ॥
जोहमकहैंसुनौसुतसोई॥ बालकबैठद्वारपरआई ॥
उमाकरततपशिवमनलाई ॥ यहिविधिबीतिगये

कछुकाला॥ आगेसुनोकथानरपाला॥ जबतेउमा शंभुकहँलागी ॥ बैठिसमाधिअधिकअनुरागी ॥ आसनडिगोशंभुतबजागे॥ मनअनुमानकरनतब लागे॥ कहाँगईधौंशैलकुमारी॥ तनुकिजीवबिन भयेदुखारी ॥ दोहा ॥ गिरिजाहेरनकारणे, शंभु गयेतजिधाम ॥ वनमहँगिरिखोजतफिरे, मनन लहैविश्राम ॥१५॥ चौपाई ॥ षड़जनामपहँगयेम हेशा॥ बाढ़ोहर्षविषादअँदेशा ॥ दंडप्रणामपुत्रज बकीन्हा॥ आशीर्वादतबैशिवदीन्हा ॥ तबशंकर बोलेमृदुबानी ॥ दीखतातुमकतहुँभवानी॥ अ हैतातमैंमृषानभाषौं ॥ तुमबिनुआयसुकिमिकरि राषौं ॥ गईविपिनतपकरनगोसाई ॥ स्थलनाजा नोमैंमाताई ॥ सुनिशंकरसँगतनयलगाई ॥ खो जतचलेविपिनसमुदाई ॥ यद्यपिशिवजानतसब बाता ॥ हरिइच्छाराखतसुरत्राता ॥ खोजतकतहुँ उमैंनहिंपावा ॥ तबशिवहृदयक्रोधहोइआवा ॥ दोहा ॥ डमरूपटकेउभूमिपर, तीनिलोकअकुला न ॥ धेनुरूपहोइधरणितब, विनयकीनबहुआन ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ कौनभाँतिमैंचूकिउँसेवा ॥ तेहि तेक्रोधकीन्हतुमदेवा॥ शंकरकहेउधरणिसमुझाई॥

शैलसुताकहँदेउबताई ॥ तबधरणीबोलीमृदुबानी किष्किंधागिरिबसैभवानी ॥ मुनिशंकरसँगतनय लगाई ॥ खोजतचलेविपिनसमुदाई ॥ गुफामध्य इकदेखिकुमारा ॥ शिवपूछ्यातिहिंवचनउचारा ॥ गुफामध्यहैमातुहमारी ॥ करतितपस्याशिवअधि कारी ॥ यहसुनिपेलिचलैत्रिपुरारी ॥ बालकदेखि क्रोधभयोभारी ॥ दोहा ॥ गुफाद्वारधरिठाढ़भे, कर गहिशक्तिहिजोहि ॥ बिनामातुकीआयसू, जान नदेहौंतोहिं ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ यहसुनिपेलिचले प्रियपाहीं ॥ बालककोपकीन्हमनमाहीं ॥ क्रोध वंतसुतगरजाभारी ॥ शिवपरतीक्षणशक्तिपँवारी ॥ आवतशक्तिदेखिखरधारा ॥ तेजशक्तिसोकाटि निवारा ॥ लखिशंकरशरतेजअपारा ॥ बालकध नुषकाटिशिवडारा ॥ मातुसुन्योमारैममवारा ॥ गुफसोंनिकसींशक्तिअपारा ॥ मारततनयनमान तहारी ॥ क्रोधवंततबभेत्रिपुरारी ॥ जौलोंशिवशि शुहतैप्रचारी ॥ तौलोंशिवयहयुक्तिविचारी ॥ दे खायुद्धभयंकरनाना ॥ कोपेशिवभयेअनलसमा ना ॥ गहित्रिशूलतेहिनाथप्रचंडा ॥ उड़िगामाथ पराब्रह्मंडा ॥ यहिविधिबालकमारिमहेशा ॥ तन

यसमेतगुफामेंपैसा ॥ जबहींउमाशंभुकहदेखा ॥ उठतभईतबप्रीतिविशेखा ॥ दोहा ॥ आसनदैपद पद्मगहि, चरणोदकतबलीन्ह ॥ शंभुबैठिशुचिआ सन, बहुविधिआशिषदीन्ह ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ उमाशंभुसनकहमृदुबानी ॥ सुनोनाथतुमसबसु खखानी ॥ गुफाद्वारशिशुमहबैठाये ॥ तासोंकेहि विधिआवनपाये ॥ सुनतवचनतबबोले शंकर ॥ तिनसोंकीन्हा समरभयंकर ॥ विषमयुद्ध तिन्ह हमसन कीन्हा ॥ ताको मारि यहाँ पगदीन्हा ॥ जानि उमा उठिबाहरआई ॥ सुतलखितुरतपरीमु रछाई ॥ सुनोनाथयहतनयहमारा ॥ जेहिविधिजि येमोकरौबिचारा ॥ तबपूछाशिवउमहिंभुवारा ॥ के हिप्रकारभातनयतुम्हारा ॥ दोहा ॥ शंभुबचन सुनि पार्वति, जोरिपाणिशिरनाइ ॥ जेहिबिधिउपजोबा लवर, सकल कहीसमुझाइ ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ सुनि शंकरबोलेमृदुबानी। बिनामाथकिमिजियैभवानी। क्रोधितलागत्रिशूलप्रचंडा।उड़िगामाथपराब्रह्मंडा। बोलिउमासुनोममबानी॥कृपासिंधुउरअंतरज्ञानी॥ आजुकोभयोतनयजहँहोई। मातापीठीदैकरसोई॥ तेहिबालककामाथमँगावहु॥कृपाकरौममतनयजि

यावहु ॥ तबशिवदूतनलीन्हबुलाई ॥ सकलकथाक
हितिन्हैसुनाई॥ आजुकोभयोतनयलैआवहु॥जन
नीपीठिदियेजहँपावहु ॥ सोसुनिदूतदशोदिशिधा
ये ॥ हेरिखोजिपुनिशिवपहँआये॥दोहा॥ कहशमु
खनजोरिकर, सकलदूतशिरनाइ ॥ तेहिप्रकारका
बालक, हेरिरहेनहिंपाइ ॥ २० ॥ चौपाई ॥ पुनि बो
लेगणगिरासुहाई ॥ सुनोनाथकरिनीयकजाई॥सो
बालकपाछेहैनाथा ॥ आज्ञाहोयतोआनौंमाथा ॥
आयसुपाइदूतबहधाये ॥ करिसुतमाथकाटिलेआ
ये ॥ माथलायजोड़ेसोइग्रीवा ॥ प्रकटठाढ़भयेहोइस
जीवा ॥ पुत्रदेखिमातासुखपाये ॥ आशिषदैशिवह
दयलगाये ॥तनयदेखिसुखकीन्हभवानी॥शंकरसों
बोलींमृदुबानी॥ करिनीकोसुतदेहुजियाई॥ऐसेना
थबहुतदुखपाई ॥ तबशिवकिरकिटमाथमँगावा ॥
कृपाकीन्हहरतिन्हैजियावा॥दोहा॥किरकिटकोआ
शिषदियो, जियैविनाहिसोशीश॥तबगिरिजाप्रस्तु
तिकिये, धन्यधन्यजगदीश॥२१॥चौ०॥उमासंगलै
दोउबालक॥चलेजहाँजगकेप्रतिपालक॥ पहँचेहरि
पुरसहितसमाजा ॥ तहाँबिष्णुबैठसबराजा॥ तेतिस
कोटिदेवतहँसोहे ॥ हरिकोरूपदेखनमनमोहे ॥शंभु

जायपदवंदनकीन्हा ॥ उमासहितचरणोदकली
न्हा ॥ सुरनरमुनिउठिकैकरजोरी ॥ सबपरशिव
कैप्रीतिघनेरी ॥ शिवसुतयुगलदेखिसुखधामा ॥
परदच्छिणकरकीन्हप्रणामा ॥ बालकदेखिसुरनसु
खपावा ॥ हरिआशिषदैनिकटबोलावा ॥ हरिके
करयकमोदकरहा ॥ दोउबालकसोंप्रभुहँसिकहा ॥
जोसुततीनिलोकफिरिआवै ॥ आवैवेगिसोमोद
कपावै ॥ सरजनामतुरतहिशिरनावा ॥ चढ़िरथ
वेगवायुसमधावा ॥ दूसरसुतयावरविधिकीन्हा ॥
उठिहरिकैपरदच्छिणदीन्हा ॥ दोहा ॥ देखातबबु
धिवंतगण, देवनजयजयकीन्ह ॥ करमोदकअ
तिमोदसों, तेहिबालककोदीन्ह ॥२२॥ चौपाई ॥
यहिअंतरषटमुखचलिआये ॥ हरिकेचरणशीशति
ननाये ॥ देखामोदकबालकहाथा ॥ सरजनाम
कोपेरणनाथा ॥ मोदकलीन्हवदनपरमारा ॥ ए
कदंतगाटूटिभुवारा ॥ तबहरिहँसिकहगिरासुनाई ॥
षटमुखकहाकीन्हलरिकाई ॥ वहबालककेककहेकस
जाता ॥ दांतटूटिगाकायहबाता ॥ तबगुहकहायु
गलकरजोरी ॥ नाथसुनोयकविनतीमोरी ॥ सब
संसारदौरिमैंआवा ॥ बैठरहासोमोदकपावा ॥ ह

रिकहतुमसोंआगेआवा ॥ तेहिकारणइनमोदक
पावा ॥ यहसुनिगुहबड़िशंकाकीन्हा ॥ तबहरि
चरितदिखावैलीन्हा॥हँसिकैजबहरिवदनपसारा॥
तीनलोकतबदेखकुमारा॥ देखिषड़ाननलज्जितभ
यऊ ॥ तबहरिगुहैप्रबोधतभयऊ ॥ दोहा ॥ पुनि
सबदेवनजोरिकर, प्रभुहिकहासमुझाइ ॥ सोबाल
कबुधिवंतहै, कृपाकरोसुखदाइ ॥ २३ ॥ चौपाई ॥
देवगिरासुनिप्रभुमनभाये ॥ तेहिबालककोनिक
टबुलाये ॥ सावधानह्वैसुनहुनरेशा ॥ नामधरोह
रितहिगणेशा ॥ जानागणपतिदेवअनादी ॥
विधिहरिहरदियआशिर्वादी ॥ पूज्यनित्यतुमहो
हुगणेशा ॥ जोपूजैतेहिमेटकलेशा ॥ जोमेरेचर
णनमनधरई ॥ सोप्रथमहितुवपूजाकरई ॥ यहसु
निदेवनजयजयकीन्हा ॥ सुमनवर्षिबहुपूजादी
न्हा ॥ स्वामिकार्त्तिकबड़ेलजाई ॥ परेचरणगण
पतिकेआई ॥ क्षमाकरौगणनाथगुसांई ॥ चूकप
रीसोमेटउभाई॥गणपतिगुहैलाइउरलीन्हा॥शोच
मिटाइआशिषादीन्हा॥दोहा॥पूजिगणपकरजोर
कै, धरिचरणनशिरनाइ ॥ अस्तुतिकरतअनेकवि
धि, सुनोयुधिष्ठिरराइ॥२४॥चौपाई॥तुमत्रयलोक

नाथप्रभुएका॥मायावशप्रभुजीवअनेका॥जेहि
काजसतुमआयसुदीना॥सोतेहिभाँतिरहैलवली
ना॥जोप्रभुहमपरदयाकरेहू।तौप्रसन्नह्वैयहवरदेहू॥
प्रथमहिंनाथभक्तितवपाऊँ॥ पुनिदूसरवरदेहुजो
भाऊँ॥ जोकोइममपूजामनलावै॥ मनवांछित
फलसोप्रभुपावै॥ बोलेप्रभुविहँसीमृदुवानी॥
सुनेहर्षिशिवसतीभवानी॥ पुनिप्रभुपदवंदनकरि
सेवा॥ निजनिजलोकगयेसबदेवा॥ शङ्करप्रभु
पदउरमहिराखी॥ विदाभयेविनतीबहुभाखी॥
दोहा॥ गहगणपतिप्रभुचरणगहि, चलेआशिषा
पाइ॥ गिरिजासहितमहेशतब, गवनकीन्हहर्षा
इ॥२५॥ चौपाई॥ पहुँचेविश्वनाथकैलासा॥
सुतनसहितशिवपरमहुलासा॥ कहेउँकथामैंसक
लनरेशा॥यहिविधिसोंशिवतनयगणेशा॥ पूजैं
नितगणपतित्रयलोका॥ तिन्हैंपूजिजगहोयवि
शोका॥ तेहितेपूजहुगणपतिराजा॥ मिलहितो
रसबराजसमाजा॥ यहसुनिधर्मतनयाशिरनावा॥
धन्यकृष्णयहकथासुनावा॥ अबजानेउँगणनाथ
पुरारी॥ सुनतकथाछूटादुखभारी॥ औरौएकला
लसामोरे॥ कहौकृष्णविनवौंकरजोरे॥ प्रथमहिं

केहिपूजागणनाथा ॥ सोसमुझाइकहौयदुनाथा॥
॥ दोहा ॥ धर्मतनयके बचनसुनि, कहा कृष्ण
बिहँसाइ ॥ यहसबसादरभाषिहौं, सुनहु भूप मन
लाइ ॥२६॥ चौपाई ॥ प्रथमबरतराजानलकियऊ।
॥ताकेसबसंशयमिटिगयऊ॥ सुनतबचनकहधर्मकु
मारा ॥ नलपरकवनपरादुखभारा॥ सुनिहँसिकृष्ण
बचनपरकासा॥सुनहुभूपसुंदरइतिहासा॥ नवौख
ण्डकाराजाभयऊ।तेहिकछुकालराज्यसुखकियऊ॥
एकसमयाविपत्तिघरिआई॥छूटाराज्यदेशसमुदाई॥
नारिसमेतविपिनकहँगयऊ॥तापरतियाबिछोहिल
भयऊ॥ कतहूंभूपकतहुँगइरानी ॥ महाविपतिकि
मिकहौंबखानी॥ दमयन्तीबहुकरैबिलापा॥ मूर्छि
तपरीमहासंतापा॥ गतमूर्च्छाउठिचलबनमाहीं ॥
महाबिकलतनुसुधिकछुनाहीं॥फिरतविपिनइकआ
श्रमदेखा। बैठेऋषितहँपूज्यबिशेखा ॥दोहा॥ द
मयंतीमनधीरधरि, गहेऋषिनकेपाँय ॥ करजोरेठा-
ढ़ीभई, आरत बचन सुनाय॥ २७॥ चौपाई॥ सुन
हुनाथममबचनविशेखा।तुमकहुँराजानलकोदेखा॥
ऋषिनकहानहिंदेखेउँमाई।सुनतबचनरानीमुरझा
ई ॥ भइसचेतआगेचलिरानी । नदीएकतहँदेखि

सयानी ॥ तहांअप्सरामज्जनकरहीं । मंगलगा नसुनतदुखटरहीं ॥ दमयंतीतहँवांचलिआई । पूं छातिनसोंप्रीतिलगाई॥केहिकीपूजाकरैसयानी। कहोचरितताकोवरवानी ॥ गणनायककीपूजाक रहीं । जेहिपूजेसंकटदुखटरहीं ॥ त्रियापुरुषव्रतक रेजुकोई । मनवांछितफलपावैसोई ॥ दोहा ॥ दम यंतीनिजदुखकहे, सकलभाँतिसमुझाइ ॥ सुनत अप्सराप्रीतिसों, बोलीबचनसुहाइ ॥ २८ ॥ चौपाई॥ गणपतिकोव्रतकीजैरानी । मिलिहैभूपसत्यमम वानी ॥ दमयंतीगणपतिव्रतसाजा । तिनकेसँग पूजागणराजा ॥ पूजिअप्सरासुरपुरगई । रानी हृदयबिचारतभई ॥ बहुदुखविपिनअकेलीरानी । जाउँपितागृहअसजियआनी ॥ तबउठिचलीपिता गृहआई । शोकसहितकछुदिवसगमाई ॥ श्रीग णनाथकृपातबकीन्हा। आनिपासराजैतबदीन्हा॥ रानीराजाभेयकठाई । व्रतप्रभावसबबातजनाई ॥ सोईव्रतराजानलकियऊ । ताकरसबसंकटमिटिग यऊ ॥ वैसेराज्यभयेतवराजा । छूटेताकेशोकस माजा ॥ दोहा ॥ कथाबढ़ैकेकारणे, सूक्ष्मकहीस मुझाय। औरौकथागणेशकी, सुनोयुधिष्ठिरराय॥

चौपाई ॥ मान्धाता कोशलपुरराजा ॥ धर्म नीति सहसकलसमाजा।ताहिसमयनिशिचरअवतारा॥ धुंधसुतातेहिनामभुवारा ॥ तेहिसबलोकजीतिब शकीन्हा ॥ सुरनरनागसबहिदुखदीन्हा ॥ सर्बदेवमिलिकरहिंबिचारा ॥ केहिबिधिजाइनिशाचर मारा ॥ सुरगुरुकहाबचनसुनमोरा। नृपतिमान्धातावरजोरा ॥ तासोंकरियेयुद्धविचारा॥ यहिबिधि जाय निशाचर मारा ॥ सुरगुरु सहित देव तहँ आये॥मान्धाता को कथा सुनाये ॥ राजाकहा कहौं गुरु मोही ॥ केहि बल सों मारो सुरद्रोही ॥ सुरगुरुकहाभूपसुनिलीजै ॥ गणपतिकीपूजाब्रत कीजै ॥ युक्तिदेवगुरुदीन्हबताई ॥ तेहिविधिसों पूजामनलाई ॥ दोहा ॥ कृपाभईगणनाथकी, बल समूहह्वैजात॥ मान्धातापरसन्नभये, धुंधसुताहनि पात ॥ २० चौपाई ॥ यहइतिहाससकलजगजाना ॥ तातेमैंसंक्षेपबखाना ॥ गणपतिउहैकृपाकरिनाना ॥ धुंधमारअसनामबखाना ॥ औरकथा सुनुधर्मकुमारा॥ कांत्रापतिसोंसुरपतिहारा ॥ गुरु उपदेशसुरेशहिदीन्हा ॥ तबगणपतिकरपूजाकीन्हा ॥ ब्रतकेफलपायेउनभारी ॥ मारेउकंत्रासुरन

मचारी ॥ औरकथासुनुधर्मकुमारा ॥ जोसुनिकटै सकलदुखभारा ॥ महादेवकहँसंकटभयऊ ॥ त्रिपुरासुरमहादुखदयऊ ॥ गिरिजालेनात्रिपुरमनभयऊ ॥ तबशिवगणपतिपूजाकियऊ ॥ मारादैत्यमहाबलभारी ॥ तबतेनामपरोत्रिपुरारी ॥ पुनिव्रत कीन्हषड़ाननवीरा ॥ सावधानहोसुनुमतिधीरा ॥ तारकअसुरभयउपरचंडा ॥ जीताकोपिसकलब्रह्मंडा ॥ गुहगणपतिपूजाअनुरागी ॥ हतेउतारकहिवारनलागी ॥ दोहा ॥ अपरकथाअबभाषऊं, चितदैसुनहुनरेश ॥ रुक्मिणिसुतकेकारणे, पूजेदेवगणेश ॥३१॥ चौपाई ॥ व्रतफलतेप्रद्युमनसुतजायो ॥ अतिआनंदभीष्टफलपायो ॥ पुनिव्रतकरिपूजागणराजा ॥ रत्नजटितआरतीसुसाजा ॥ चीरोंपिपुनिकहेउनरेशा । पुत्रदानतबदीन्हगणेशा ॥ त्रियासाहितप्रद्युमनघरआये ॥ रुक्मिणितनयदेखिसुखपाये ॥ औरौसुनहुधर्ममतिधीरा ॥ सोसुनिकटैसकलअघपीरा ॥ महिषावतीनगरसुखधामा ॥ नीलध्वजराजाकरनामा ॥ तेहिपुरबसैब्राह्मणएका ॥ ताकेएकपुत्रअविवेका ॥ धेनुवत्सपुरकेरचरावै ॥ ब्राह्मणभिक्षामाँगिलेआवै ॥

यहिविधिसोंकछुकालबितावा ॥ बहुरित्रियागण पतिहिमनावा ॥ ब्रतप्रभावसोसंपतिपावा ॥ कछु कज्ञानबालककहँआवा ॥ दोहा ॥ नीलध्वजकीस भामहँ, बालकआवैजाइ ॥ ताहिदेखिकैभूपसुत, प्रीतिकरहिंअधिकाइ ॥ ३२ ॥ चौ० ॥ जादिनसभा नबालकजावै । राजहिनींदनभोजनभावै ॥ बहु अधिकारीद्विजसुतजाना ॥ अतिअभिमानहृदयम नआना ॥ एकदिवसब्राह्मणिब्रतकियऊ ॥ गणप तिकीपूजामनदियऊ ॥ तेहिअंतरताकरसुतआवा। मातासोंतबवचनसुनावा ॥ क्षुधालागिमोहिंमातु बहूता । जननिकहाधरुधीरजपूता ॥ गणपतिकी पूजाकरलेहूं । तापाछेतोहिंभोजनदेहूं ॥ तबवह बालकउठारिसाई । माताकेसन्मुखचलिआई ॥ दोहा ॥ गणपतिकी प्रतिमाहनी, लातनदीन्ह गिराइ ॥ मूरतिपटकीक्रोधकरि, पुनिबोलामुसखा इ ॥३३॥ चौपाई ॥ मूरतिपूजिपढ़ैकछुटोना । पू जाछोड़िबैठुयककोना ॥ यहकहिगयउसभानृप केरी । भलअनभलनाहींमनहेरी ॥ तबवाकीमा ताअकुलानी । पूजासाजउठायसुआनी ॥ थापि तकपूजामनलावा । करजोरेगणपतीमनावा ॥ जो

गणपतिद्विजसुतपदमारा॥ ताकरफलअबसुनहु
अपारा॥ जबब्राह्मणिसुतगोनृपद्वारे॥ सभासू
निलखिमहलसिधारे॥भीतरजाइसोकौतुकदेखा॥
शयनकियेदंपतिकोलेखा॥ देखिकैद्विजसुतअति
भयमाना॥ भ्रमवशबिसरेपगकेत्राना॥ दोहा॥
अपनेपदकीपानहीं, छोड़ेभूपअवास॥ राजाके
पगपनहिलै, आयेनिज पितुपास॥ ३४॥ चौ
पाइ॥ भोरभयेनीलध्वजजागे॥ चरणत्रानलखि
कहबेलागे॥ काकेपदकीहैं पदत्राना॥ रीनक
हाप्रभुमैंनहिंजाना॥ सुनीकिब्राह्मणसुतकीआ
ही॥ नीलध्वजबोलेमनमाहीं॥ तुरतैबालकपक
रिमँगावा॥ पुनिचंडालनभूपबोलावा॥ कहतेहि
द्विजसुतआनमँगाई॥ याहिविपिनमहँमारहुजा
ई॥ बालकलैचंडालसिधाये॥ समाचारपुनिमा
तापाये॥ तबगणपतिकोकीन्हेसिध्याना॥ कर
जोरेविनवैविधिनाना॥ कृपाकरौगणपतिलखिसे
वा। विप्ररूपधरिप्रगटदेवा॥ गयेजहाँनीलध्वजरा
जा॥ देखिविप्रनिजप्रस्तुतिसाजा॥ करिप्रणाम
नृपशीशनवावा॥ आशिषदैद्विजबचनसुनावा॥
दोहा॥ द्विजसुतकीन्हनपापकछु, कहिमृदुमीठीबा

त ॥ निरपराधसुनुराजवह, बालककरियनघात ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ सोसुनिराजातुरतबुलाये ॥ विप्रजानिकैशीशनवाये ॥ द्विजबालकनिजमंदिरगयऊ ॥ देखिमातुउरआनँदभयऊ ॥ धन्यदेवगणनाथगोसाँई ॥ दीन्हेबालकमोरछुड़ाई ॥ नृपघरआवेजायसोबालक ॥ तैसीप्रीतिकरैनरपालक ॥ सोबालकमतिमंदगुसांई ॥ गणपतिमहिमानहिंनबुझाई ॥ सोकारणसुनुधर्मकुमारा ॥ जसबालककोभोव्यवहारा ॥ एकदिवसनृपकोसुततहँवा ॥ ब्राह्मणिसुतचलिआवाजहँवा ॥ मुखमज्जनकरिभूपकुमारा । जलभाजनलियब्राह्मणिवारा ॥ भैअनकृपानाथगणकेरी। ताकरफलअबसुनोबहोरी॥ मुखमज्जनछूटीतबभयऊ । जलकेपात्रमाथहोइगयऊ ॥ राजपुत्रतहँभयेअलेखा ॥ यहकौतुकपुरवासिनदेखा ॥ दो० ॥ द्विजसुतदेखिचरित्रयह, मनमहँअतिभयमान। ठाढ़ाविसूरहिमनहिमन, काहकीन्हभगवान ॥३६॥ चौ०॥ सबैकहायहभयेअलेषा। जायभूपसोंकहियविशेषा॥ ब्राह्मणितनयकुँवरकहँमारा। महाराजकाकरियबिचारा॥ सुनिकैभूपाविपुलदुखमाना। कहारिसाइहतौतेहिप्राना॥ मारौशठहि

वारजनिलावहु। ताकरमुखजानिमोहिंदिखावहु॥
सुनतबचनसबमारनधाये। समाचारतबमातापाये॥
ब्याकुलह्वैसुमिरेगणदेवा। जोरिपाणिबिनवैकरिसे
वा॥ अहोनाथगणनाथगोसाईं। बालकदानदेहुमो
हिथाईं॥ मोहिसबभाँतिभरोसतुम्हारा। धावहुनाथ
नलावहुवारा॥ आरतहरनकृपाअबकीजै। संकटका
टिपुत्रमोहिंदीजै॥ आरतगिरासुनीगणराई। धौर
द्विजरूपप्रगटभयेआई॥ ब्राह्मणिकहँगणपतिसमु
झावा। तुवसुतकर्मकरेफलपावा॥ हमकहँकीन्हेसि
चरणप्रहारा। सोफलभुगतैअधमगँवारा॥ दोहा॥
ब्राह्मणिजानेगणपति, परीचरणकरजोर। अस्तु-
तिकरतअनेकाबिधि, सुनहुबचननृपमोर॥३७॥ चौ
पाई॥ यहबालकहैपरमअजाना। तापरकृपाकरेभग
वाना॥ बोलेगणपतिगिरासुहाई। देहौबालकतोरछु
ड़ाई॥ यहकहिगणपतिआयेतहँवां। संकटमेंद्विज
सुतहैजहँवां॥ चंडालनसोंकहगणनाथा। केहिका
रणकाटौशिशुमाथा॥ सबदूतनसमुझावाभेवा। रा
जकुमारहताइनदेवा॥ बोलेगणपतिवचनविशेषा॥
राजकुवँरमैंखेलतदेखा॥ धायेतबराजापहँआये॥
माथनाइकैकथासुनाये॥ सुनिमनअचरजकीन्ह

सुश्रारा ॥ कहाबोलावहुविप्रकुमारा ॥ आयसुपा
इसुसेवकधाये ॥ नृपसुतवेगिभूपपहँलाये ॥ देखि
तनयनृपअतिसुखपावा ॥ दूतनसोंतबवचनसुना
वा ॥ तेहिजनिमारहुवेगिसिधावहु ॥ ब्राह्मणित
नययहाँलैआवहु ॥ दोहा ॥ सुनितबधायेविपि
नकहँ, जातनलागीबार ॥ ब्राह्मणिकोसुतसंगलै,
आयेजहाँसुश्रार ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ देखिभूपश्र
तिश्रादरकीन्हा ॥ सँगबसायचरणोदकलीन्हा ॥
यहिकावधनचहाउइबारा ॥ बाचिजाइसोकवनवि
चारा ॥ यहिकीमातुयोगकछुजाना ॥ तासोंबाल
कबचैनिदाना ॥ असविचारिकैदूतपठाये ॥ ताकी
मातैतुरतबुलाये ॥ आईब्राह्मणिदइअशीशा ॥
प्रथमैंभूपनवायउशीशा ॥ ब्राह्मणितनयदेखिसुख
पाये ॥ तबहींराजावचनसुनाये ॥ कछुचेटकतुव
जानुसयानी ॥ सोबिधिहमसोंकहहुबखानी ॥ क
हब्राह्मणीसुनोहोराजा॥मैंपूजौंगणपतिमहराजा॥
दोहा ॥ गणपतिकीपूजाकरौं,ध्यानधरौंमनलाइ॥
रस्मनहोतेभूपसुनु, सकलकष्टमिटिजाइ ॥ ३९ ॥
चौपाई ॥ सत्यसत्यराजाकहिमानी ॥ ब्राह्मणिसों
बोलामृदुबानी ॥ केहिविधिपूजौगणपतिराई॥तब

ब्राह्मणिकहिसबसमुझाई ॥ कनकवसनभरिविपु लमँगावा । ब्राह्मणिकोदैपदशिरनावा ॥ तनय समेतपरमसुखपाई । आशिषदैब्राह्मणिघरआई ॥ गणपतिकीपूजातबभयऊ । सबसुखभयोसबैदुख गयऊ ॥ ब्रतप्रभावनीलध्वजराजा । सुतपत्नीसुख संपतिभ्राजा ॥ दोहा ॥ तातेसुनहूधर्मसुत, ब्रत करिपूजगणेश । विघ्नहरनकेनामतेहि, मेटतसकल कलेश ॥४०॥ चौपाई ॥ सुनिकैकथाजोरिकैहाथा । धर्मतनयतबनायउमाथा ॥ धन्यधन्यतुमधन्यमु रारी । मोपरकृपाकीन्हअतिभारी ॥ गणपतिकीस बकथासुनाई । मोरेतनुकेपापमिटाई ॥ अबप्रभुकृ पाकरोमनलाई । ताकीविधिकहियेसमुझाई ॥ हरिबोलेसुनुराजभुवारा । ब्रतविधिकहौंसकलसु खसारा ॥ भादोंमासचौथिजबआवै । तादिनब्रत आरम्भकरावै ॥ ब्रतारम्भकैकरिअस्नाना । बहुरि करैपूजाभगवाना ॥ काहुदेवकीकरैनानिंदा । मन महँसुमिरैबालगोविंदा ॥ रविअस्ताचलकोजब जावै । तबगणपतिपूजामनलावै ॥ दोहा ॥ गो गोबरसोंलीपिकै, चौकैचारुपुराइ । कलशधरैवेदी रचै, अक्षतदूबचढ़ाइ ॥४१॥ चौपाई ॥ पादधोय

धरैसोइआगे । पूजैपणपतिमनअनुरागे ॥ मूर्ति कनककुंकुमकीहोई । कीपषाणपूतरिकीसोई ॥ तेहिमूरतिकीपूजाकरई । मालचढ़ाइपुष्पशिरधरई ॥ धूपदीपआरतिकरिनाना । विधिसोंआनिधरैपकवाना ॥ यहसबकरिआचमनकरावै । तांबूलपुनिआनिचढ़ावै ॥ जोविधिबारहमासकिहोई । तेविधिसोआवहिदेसोई ॥ पाछेकथासुनैमनलावै । जबलगिचंद्रउदयकरिआवै ॥ चंद्रअर्घ्यदैकरेप्रणामा । करैविसर्जनपुनिसुखधामा ॥ पुनिब्राह्मणहिंदक्षिणादेई । आशिर्वादताहिसनलेई ॥ त्रियापुरुषव्रतधारैकोई । मनवांछितफलपावैसोई ॥ दो० ॥ यहिविधिव्रतधारणकरै, पूजैदेवगणेश । जोविधिबारहमासकी, सोअबसुनोनरेश ॥४२॥ चौपाई ॥ भाद्रचौथिपूजामनलावै । सुमनतरोईकेरमँगावै ॥ घृतकेसङ्गहोमजोकरई । तीनिजन्मभवसागरतरई ॥ मासकुवाँरचौथिजबआवै । दूबहरीकेफूलमँगावै ॥ घृतसँगहोमकरैजोकोई । सबविधिसेपावैफलसोई ॥ कातिकमासचौथिजबआवै । उडददालिघृतहोमकरावै ॥ पूजापूरणताकीहोई । सकलसिद्धिफलपावैसोई ॥ अगहनमासचौथिजबआवै । भटकट

इयाकेफूलमँगावै ॥ घृतसेहोमकरैसुतपावै। रिपु नाशकदुखनिकटनआवै ॥ दोहा ॥ पूसमासकी चौथिको, वंशपत्रघृतहोम। वश्यहोइराजाप्रजा, सिद्धिहोइसबकोम ॥४३॥ चौपाई ॥ माघचौथि अँधियारीआवै। ब्रतकरिसांभरिनोनमँगावै ॥ घृत सँगहोमकरैजोकोई। राजावश्यताहिनितहोई ॥ फाल्गुनकृष्णचौथिकीराती ॥ अमिलतासकीआनैपाती ॥ सेंधाघृतसोंहोमकरावै। पटमोहनीभूप सोपावै ॥ चैतमासचौथीजबआवै। तबनिबुवाके बीजमँगावै ॥ घृतसँगहोमकरैजोकोई। बाँझत्रियापुत्रवतीहोई ॥ मासवैशाखचौथिजबआवै। राई केबलिसुमनमँगावै ॥ घृतसँगहोमकरैनरकोई। होइसिद्धिफलपावैसोई॥ ज्येष्ठचौथिअँधियारीआवै। सुमनसेवतीकेरमँगावै ॥ घृतसँगहोमकरैचितलाई। ताकीबुद्धिहोयअधिकाई ॥ मासअषाढ़ चौथिजबआवै। कमलफूलकरलेइमँगावै ॥ युक्ति समेतहोमजोकरई। सोप्राणीपुनिदेहनधरई॥ श्रावणमासचौथिजबआवै। कुसुमसेहरुवाकेरमँगावै ॥ सावधानहोमतघृतजोई। दनुजदेवताकेवश होई ॥ दोहा ॥ यहविधिबारहमासकी, कहीभूप

समुझाइ ॥ विधिसोंपूजेगणपतिहि, सकलकष्ट मिटिजाइ ॥४४॥ चौपाई ॥ मुनिकैकथाधर्मशिर नावा । धनिगोपालयहकथासुनावा ॥ जोविधि कृष्णकहाव्रतनीती । तेहिविधिसोंनृपकीन्हप्रती ती ॥ गणपतिकीभइकृपाअपारा । माराशत्रुलागि नहिंवारा ॥ सुखसहहर्षिराज्यतबकीन्हा । गणपति कीदायालखिलीन्हा ॥ गणपतिकेरिबाताचितआ ई । जोमनसाकरसोफलपाई ॥ ऋधिसिधिसंपति सुखनअपारा । धरणिधामसुतसंपतिदारा ॥ नारी पुरुषकरैव्रतकोई । सकलसिद्धिफलपावैसोई ॥ जो यह कथा सुनै अरु गावै । ततकाल सुरपुर वह जावै ॥ दोहा ॥ श्रीगणपति की कथायह, संस्कृत मध्य विशाल । यथा बुद्धि भाषा रची, जड़मति मोतीलाल ॥ ४५ ॥

इति श्रीगणेशपुराणंसम्पूर्णम् ॥ श्रीगजाननार्पणमस्तु ॥



श्रीगणेशायनमः।

अथ सूर्यपुराणप्रारम्भः।

दोहा–वंदौंचरणनहृदयधरि, भक्तिप्रेमलवलीन ॥
महिमाअगमअपारहै, सोबहुज्ञानप्रवीन ॥१॥
वंदौंचरणनजोरिकर, श्रीपतिगौरिगणेश ॥
तुलसिदासअतिप्रेमसे, वर्णतकथादिनेश ॥२॥

चौपाई॥ सूर्यदेवतासुमिरौंतोहीं। सुमिरतज्ञान बुद्धिदेमोहीं॥ ज्योतिरूपआदितबलवाना। तेज प्रतापसुअग्निसमाना॥ तुमआदितपरमेश्वरस्वामी। अलखनिरंजनअन्तर्यामी॥ वर्णिनजाइ ज्योतिकीलीला। धर्मधुरंधरपरमसुशीला॥ ज्योति कलाचहुँओरविराजै। जगमगकाननकुंडलछाजै॥ नीलवर्णछबिहयअसवारी। ज्ञाननिधानधर्मब्रत धारी॥ परमपुनीतआदितअविनासी। अजनुअ नादिसकलघटबासी॥ जासुकथामैंकरौंबखाना।

सोपूरूपहैअग्निसमाना ॥ महिमाआदितअगम अपारा । तीनहुँलोकज्योतिउजियारा ॥ दोहा ॥ आदितकथापुनीतहै, गावहिंशंभुसुजान ॥ तीन लोकछबिउदितहै, करहिंप्रतापबखान ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ सुनहुउमाआदित्यप्रतापा । वर्णौंविमल जासुमैंजापा ॥ नाथमहातमसुनहुभवानी । कहौं पुनीतकथाशुभवानी ॥ गिरिजासुनहुकथामनलाई । मैंतोहिंअर्थकहौंसमुझाई ॥ बांझसुनैयकमासपुराना । मनवचकर्मसुचितधरिध्याना ॥ नेमधर्मसोंकरैअहारा । द्वादशवर्तकरैइतवारा ॥ कुशाबिछाइकरैबिश्रामा । हर्षितलेइसूर्यकोनामा ॥ इतनीटेकधरैतियजबहीं । होहिंदयालुदयानिधितबहीं ॥ बृथावचनभाषोंनहिंतोहीं । मनवचकर्मजोपूछौमोहीं ॥ निश्चयतौप्रसन्नबलवाना । पांचपुत्रहोइँअग्निसमाना ॥ तिनसोंजीतिसकैनहिंकोई । विद्यावंतगुणीबड़होई ॥ दोहा ॥ बांझकथा मनलाइकै, टेकधरैव्रतध्यान ॥ निश्चयहोवेंपांच सुत, योधाअग्निसमान ॥ ४ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे बांझपुत्रप्रापणोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

चौपाई ॥ सूर्यकथाहैअमृतवानी । मनास्थिरकरिसुनहुभवानी ॥ कुष्ठवर्णहोइजाकरअंगा । सोयहकथाकरैसुप्रसंगा ॥ रविदिनभोजनकरैअलोनां । पुष्पसुवासचढ़ावेदोना ॥ विप्रबुलाइकैहोमकरावै । वहीभस्मलैअंगलगावै ॥ निश्चयकुष्ठवर्णछुटिजाई । धनिमहिमाहैसूर्यगुसाई ॥ दोहा ॥ जाकाअंगसकुष्ठहोय, सोयहसुनैपुराण । निश्चयसूर्यप्रतापते, पावैकायादान ॥ १ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे कुष्ठकायादानपावनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

चौपाई ॥ सूर्यकथामैंकहौंबुझाई । मनवचकर्मसुनहुचितलाई ॥ जाकेवर्णअंगमहँहोई । स्थिरकथापढ़ैनरसोई ॥ जाकोगाढ़परैअतिभारी । सोयहकथाकरैअनुसारी ॥ पाँचवरतनरकरइतवारा । मनवचकर्मकथाअनुसारा ॥ अगरसुचंदनलेपनकरई । निशिदिनध्यानसूर्यपरधरई ॥ निश्चयवर्णसकलमिटिजाई । धनिमहिमाहैसूर्यगुसाँई ॥ दोहा ॥ जाकेवर्णसुअङ्गमहँ, सोनितिसुनैपुरान ॥ धन्यधन्यआदित्यकी, महिमाकरौंबखान ॥१॥ चौपाई ॥ सूर्यकथामैंकहौंबुझाई । मनास्थिरकर

सुनुचितलाई ॥ जोनरहोयअंधदोउलोचन । सो यहकथासुनैदुखमोचन ॥ निशिदिनकरैअलोन अहारा । विविधभाँतिकरनेमअचारा ॥ पीपरतरु तरसुनैपुराना । पावैनयनअंधबलवाना ॥ अंधा लोचननिश्चयपावै । जोयहकथासुचितलवलावै ॥ दोहा ॥ अंधालोचनपावही, जोजानैप्रभुएक ॥ पुलकितप्रेमपुनीतमन, धरैकथापरटेक ॥२॥ मनव चकर्मसुप्रीतिदृढ़, भोजनकरैअलोन ॥ रविदिन हर्षितसुचितमन, पुहुपचढ़ावैदोन ॥३॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्येमहापुराणेअंधालोचनपावनोनाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

चौपाई ॥ यात्राकरिनरचलैविदेशा । सोयह पढ़ैपुराणसुदेशा ॥ निश्चयतासुसकलसिधहोई । लाभभवनचलिआवैसोई ॥ जाकोगाढ़परैअतिभा री । सोयहकथाकरैअनुसारी ॥ निश्चयऋणहुस कलमिटिजाई । धनिमहिमाहैसूर्यगोसाँई ॥ दो० ॥ यात्राकरिनरचलैजब, तबयहपढ़ैपुरान । निश्चय सकलमनोरथ, पुरवहिंश्रीभगवान ॥१॥ चौपाई ॥ सुनहुउमामैंकहौंबुझाई । मनवचकर्मसुनहुचित लाई ॥ ऐसीमहिमाआदितदेवा । जासुकरहिंसुर

नरमुनिसेवा ॥ भेटैंगाढ़सकलतनुतासू । पुलक
प्रेमहियहर्षहुलासू ॥ दीनानाथनिरञ्जनसांई । म
हिमामुखतेवर्णिनजाई ॥ जोनरकरैधर्मव्रतदाना ।
सोनतुलैयहिकथासमाना ॥ तेजप्रतापवर्णिनहिं
जाई । सूरजकथापढ़ैमनलाई ॥ कहैंशंभुयहकथा
पुनीता । रविप्रतापतेभयउअजीता ॥ दोहा ॥
असमहिमाआदित्यकर, वर्णोप्रेमउछाह ॥ सुनहु
उमाअतिप्रेमसे, प्रभुकीरतिअवगाह ॥२॥ चौ०॥
कथापुनीतकहौंशुभवानी । छठोमहातमसुनहुभ
वानी ॥ कार्तिकचैतपुरायबहुभारी । साजहिंअर्थ
सकलनरनारी ॥ चन्दनअगरकपूरकिवाती । पू
जानाथकरहिंबहुभांती ॥ जोउरमनोकामनाराखै।
पुलकध्यानधरिमुखतेभाषै ॥ सोकारजपुरवहिंभ
गवाना । ऐसेहैंप्रभुज्ञाननिधाना ॥ दोहा ॥ ली
लाअगमअपारहै, कृपासींवबलवान ॥ वर्णहुँ
कथा पुनीत अति, सुनु स्थिर धरिध्यान ॥ ३ ॥
चौपाई ॥ सुनहु उमा प्रभु चरितअपारा । नाथ
कथावर्णौविस्तारा ॥ सिंहलद्वीपनगरकानाऊं ।
तिहिमेंबसहिपरीक्षितराऊ ॥ महापुनीतधर्मउपका
री । तासुभवनइकसुताकुमारी ॥ सोनितकरैसूर्य

कीपूजा। सेवैसूर्यऔरनहिंदूजा॥ प्रेमसभक्तिक
थामनलावै।निशिदिनटेकसूर्यजपलावै॥इहिका
इकपरसंगगुसाईं। सेवैसुरजहिमनचितलाईं॥ ता
सुभवनप्रभुकरहिंकलेवा। तीनभुवनपावैंनहिंभे
वा॥ एकसमयअसअचरजभयऊ। कन्यासुरसरि
तीरहिगयऊ॥ मज्जनकरनलगीसोइबाला। हृद
यबिराजतमोतिनमाला॥ तेहिअंतरनारदऋषि
आये।ताहिदेखिमुनिनयनलुभाये॥ ठाढ़भयेमुनि
सुरसरितीरा। लियउछीनकन्याकाचीरा॥ कन्या
जलमेंकरतिपुकारा। अंबरदीजियऋषैहमारा॥
कहनारदसुनुकन्याबाता। हमसेकरहुपुरुषकरना
ता॥ सुनुमुनितुम्हरज्ञानबौराई।ऐसेबचनकहौक
हुँजाई॥ मोसीकन्यालाखपचीसा। ऐसोबचनन
कहोमुनीशा॥अबबिनतीममसुनहुसुबानी।अम्ब
रदेहुहमहिंमुनिज्ञानी॥ दो०नग्ननारिजलमेंखड़ी,
तुमहिंकहौंकरजोर।करिकरुणाकरुणायतन, अंब
रदीजेमोर॥४॥ चौपाई॥ जबकन्याबहुबिनतीला
ई। तेहिक्षणमुनितबगयउलजाई॥ अंबरदैमुनि
भवनसिधाये। तेहिअवसरतहँशंकरआये॥ सोसु
निमुनिहिशापवशकीन्हा। सो आदितसों कहवे

लीन्हा ॥ जहाँकरतहीमैंअसनाना । मुनिअंबरले गेअज्ञाना ॥ ताहिसमयआयेशिवभोरा । संगउमा जसचंद्रचकोरा ॥ भक्तिसहितप्रभुनायउमाथा । पूं छिकुशलतबत्रिभुवननाथा ॥ कुशलकहाशिवम नमुसकाई । बैठेउप्रभुतहँकहाबुझाई ॥ पूंछाप्रभु हिशिवाहिकरजोरी । नाथसुनहुइकविनतीमोरी ॥ काअपराधकीन्हमुनिभारी । सोप्रभुमोसोकहौवि चारी ॥ तबप्रभुकहासुनहुहोभोरा । कन्याप्राछि तसेवकमोरा ॥ सोउसुनामुनिकरअज्ञाना । दि ष्टविलोकेमनकरिध्याना ॥ यहिकारणमुनिशाप जोदयऊ । तेहितेअंगवर्णमुनिभयऊ ॥ इतनासु निमनाशिवमुसकाने । दिष्टभुलानेउमनअज्ञाने ॥ सुनतवचनक्रोधितमनभयऊ । कन्यासहतबमुनि पहँगयऊ ॥ दोहा ॥ मुनिसोंकहावचनतब, क्रोध कियेमनलाइ । जसकौतुकतुमकीन्हेऊ, मोहिंक हहुसमुझाइ ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ मुनिकरजोरिसुव चनसुनाये । धरिपदकमलसूर्यगुणगाये ॥ कहमु निप्रभुसुनुबातहमारी । मोसोंचूकभईअतिभारी ॥ यहअपराधक्षमहुप्रभुमोरा । विनवौंनाथदोउकर जोरा ॥ दक्षप्रभुकहासुनहुममबानी । इहांकेलोग

सकलगुरुज्ञानी ॥ तातेमुनिममलेहुजुशापा । ज
सकीन्हेउतसभुगतहुपापा ॥ दोहा ॥ तीनभुवन
केस्वामिहैं, ज्योतिकीन्हपरकास ॥ हर्षिकथाजो
गाइहै, लहैसोरविढिगबास ॥ ६ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे राजापरीक्षित कन्या
नागदशापदेनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

चौपाई ॥ पंपापुरइकनगरकनाऊं । हलधरविप्रनृप
तिविहिठाऊं॥नगरबसहिमानहुँकैलासा। धर्मकथा
तहँहोइप्रकाशा॥ पूजासूर्यकैरदिनराती । निशि
दिनटेकधरैबहुभाँती ॥ अग्निकोटचारौदिशितहाँ।
श्रीसूरजकोआश्रमजहाँ॥ तहाँतड़ागअखंडसुहा
वा। चारौंभाटसुबर्णबँधावा ॥ तहाँथंभयकबड़ावि
शाला॥ सौयोजनसोरहेउपताला ॥ वोहिथंभआ
दितकरवासा । प्रातहिथंभसोलागअकासा॥ यहि
विधिआदितआवहिंजाहीं। कथापुनतिसुनहुमन
माहीं ॥ मैंतोहिंअर्थकहौंसमुझाई । आदितकथा
पढ़ैमनलाई ॥ दोहा ॥ धनिआदितपरमेश्वर, म
हिमाअगमअपार॥तीनभुवनतसभागई, भयेसक
लउजियार॥१॥कुष्ठीध्यानजुलावही,पावैकायादान।
असप्रभुअंतर्यामिजू, कृपाकरहिंभगवान॥२॥ कपट

छोड़िमनलावही, मनवचकर्मऽनुराग॥ सुरजनस नप्रस्तुतिकरहिं, प्रसवहोइबड़भाग ॥३॥ सबगुण आगरशीलसो, जगमहँरूपनिधान॥ मनबच कर्मतेहर्षित, सज्जनकरहिंबखान॥४॥ चौपाई॥ गिरिजासुनहुकथामनलाई। पूरबदिशिजहँउगहिं गोसाँई॥ ताहिदिशायकश्रीपुरदेशा। तहँकेराजा रूपमहेशा॥ करैसदाआदितकीपूजा। वहिसमा नकोइभक्तनदूजा॥ यहिबिधिसकलनगरउजिया रा। तहाँशैलयकबड़बिस्तारा॥ सहसकोशपरबत परमाना। तहाँबसहिंआदितबलवाना॥ दोइपहर तहँकरहिंनिवासा। फिरिपश्चिमादिशिप्रेमहुला सा॥ मनबचकर्मकथागुणगाई। सूर्य्यचरितमैंतु महिंसुनाई॥ सुनिगिरिजाचकितभइवानी। तेज प्रतापसुतबहरषानी॥ धनिआदितजिनकैयहली ला। धर्मधुरंधरपरमसुशीला॥ जोनरकथासूर्य्य कीगावै। चढ़िविमानवैकुंठसिधावै॥ सूर्यकथाहै अमृतसानी। स्तुतिहर्षितकरहिंबखानी॥ छंद॥ तुमप्रभुस्वामीअंतर्यामी ज्योतिकलाछविउदितम हा। रूपनिधानाश्रीभगवानाकरहुकृपाहमअधम महा॥ छबिज्योतिविराजैकुंडलछाजैतवप्रतापहै

त्रयभुवना। महिमाप्रभुतोरी हृदयधरोरीलेतनाम पातकहरना॥ चौपाई॥ गिरिजाकहैदोउकरजोरे। इकसंदेहऔरमनमोरे॥ उत्तरादिशिकहँउगाहिंगुसाँई। सोमोहिंनाथकहौसमुझाई॥ कहनलगेशिव कथारसाला। जेहिविधिउत्तरउगहिंकृपाला॥ उत्तरदिशिकरकथाकहानी। मनास्थिरकरसुनहुभवानी॥ तहांशैलयकबड़विस्तारा। सौयोजनसोउच्चपहारा॥ झंपेभानुकिरणिनाहिंधावै। यहिविधिपुरऔंधियारजनावै॥ तहाँवासकलियुगकरहोई। तबसोपापमलिछहोयसोई॥ यहिविधिकबहुँनऊगहिंभानू। मैंतोहिंअर्थकहौंपरमानू॥ एकसमयअचरजअसभयऊ। नारदमुनितहँवाँचालिगयऊ॥ देखानगरसकलऔंधियारा। धर्मकथाकरनामाविसारा॥ फिरिफिरिनगरसकलमुनिदेखा। पापसिवायऔरनहिंलेखा॥ मनमेंनारदकरहिंविचारा। आयेकहांनगरऔंधियारा॥ असकहिनारदकोपेउजवहीं। नगरहिशापदीन्हमुनितबहीं॥ कुष्ठीहोउसकलनरनारी। धर्मकथाकरनामाविसारी॥ कुष्ठवर्णभैसबकेअङ्गा। आठौवदनसकलतनुभङ्गा॥ कोटनरहाकुष्ठसनवाचा। सबकेकुष्ठवर्णभासांचा॥

व्याकुलभयेतहांनरनारी। त्राहित्राहिकरतबाहेंपु
कारी॥ शापितकरिसूरजपहँआये। उत्तरदिशिक
रअर्थजनाये॥ सुनतकथाआदितमुसकाने। कहाँ
गयेमुनिउतरभुलाने॥ शापितकरिउत्तरकहँआये।
अबहमरेपहँबातजनाये॥ अबैकहहुमुनिपूछौंतो
हीं। उग्रशापकबछूटैओहीं॥ कहनलगेमुनिनार
दजबहीं। अङ्गवर्णमुनिदेखातबहीं॥ अङ्गवर्णमु
निदेखाकैसा। मानहुहंससरोवरवैसा॥ थकितभ
येसबमुनिकेअङ्गा। निकसेबर्णसकलतनुभङ्गा॥
तनुमहँकुष्ठजुमुनिकेभयऊ। व्याकुलहोयसूर्य्यसन
कहेऊ॥ हेप्रभुअबमैंपूछौंतोहीं। केतअङ्गवर्णरहै
मोहीं॥ कृपासिंधुप्रभुपरमअगाधा। वर्णभयोत
नुकेहिअपराधा॥ सोमोहिनाथकहौसमुझाई।
जेहितेअङ्गवर्णमिटिजाई॥ तबप्रभुकहासुनहुमम
बानी। वहांकेलोगसकलगुरुज्ञानी॥ सबकहँशा
पदीन्हतुमभारी। व्याकुलभयेसकलनरनारी॥
सबकरअङ्गभङ्गतुमकीन्हा। उत्तरजाइशापतुमदी
न्हा॥ दोहा॥ अबमैंकहिहौंतुमहिंसन, कथापु
नीतअभङ्ग॥ शापअनुग्रहकरहुतौ, वर्णमिटैतवअं
ग॥५॥ चौपाई॥ नीकवचननारदमनमाना॥

उत्तरदिशिकरकीन्हपयाना ॥ द्वादशदिनमहँउत्तर गयऊ। नगरशापमेटनमनदयऊ ॥ दो० ॥ नारद उत्तरजाइके, शापअनुग्रहकीन्ह ॥ तेजप्रतापादित्यकर, हर्षितवर्णैलीन्ह ॥६॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्येमहापुराणेनारदशापवर्णनो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

चौपाई ॥ असकहिमुनिआदितपहँआये। उत्तरदिशिकीकथासुनाये ॥ शापअनुग्रहकीन्हगुसाँई। धनिप्रतापतबवर्णिनजाई ॥ असमुनिआदितहर्षितभयऊ। दयालागितबमुनिसोंकहेऊ ॥ अबजानिऐसेभर्मसुलाहू। आशिर्वादलेहुघरजाहू ॥ भईकृपामुनिपरबहुभारी। वर्णिनजाइज्योतिअधिकारी ॥ विदाहुयेमुनिगृहकोआये। हर्षितहुयेसूर्यगुणगाये ॥ हर्षितमङ्गलगावहिंनारी। धन्यसूर्यकहिसबहिपुकारी ॥ धनिआदितकायाकेराजा। जाकिज्योतिचहुँओरविराजा ॥ कोटिविप्रतहँनेवतिपठावा। स्तुतिनारदसूर्यकिगावा ॥ अश्वमेधकरनेमुनिलागे। तीनभुवनकेदारिदभागे ॥ सबकहँनारदनेवतपठाये। रथचढ़िदेवतहांसबआये ॥ ब्रह्माविष्णुआदित्रिपुरारी। आयेसकलसहितसुत

नारी ॥ बहुप्रकारमुनिसबहिजिवांये । हर्षितहोय सूर्य्यगुणगाये ॥ हर्षितमङ्गलगावहिंनारी । ब्राह्मण वेदपढ़ैंजयकारी ॥ चंदनअक्षतपानपकवाना । पूजाकरहिंधरहिंमुनिध्याना ॥ हर्षितहोयसूर्य्यगुण गावैं । तालपखावजशङ्खबजावैं ॥ दोहा ॥ यज्ञ कीन्हमुनिनारद, शोभाबर्णिनजाइ ॥ तेतिसकोटीदेवतहँ, हर्षिकथागुणगाइ ॥१॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्येमहापुराणेनारदयज्ञशोभावर्णनो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

चौपाई ॥ जोनरधरैकथापरध्याना । ताकरहोयपरमकल्याना ॥ जोयहकथापढ़ैमनलाई । तापरआदितहोयँसहाई ॥ धनिप्रतापआदितबलवाना । तेजप्रतापतुआग्निसमाना ॥ दोहा ॥ गिरिजापूछैशंभुसन, सूर्यचारितमनलाइ ॥ दक्षिणदिशिकहँऊगहीं; नाथकहासमुभाइ ॥१॥ चौपाई ॥ कहैंशंभुसुनुशैलकुमारी । सूर्य्यचारितमैंकहौंविचारी ॥ कहनलगेशिवकथाबुभाई । जिहिविधिदक्षिणउगहिंगुसाई ॥ दक्षिणदिशिइकनगरअनूपा । जेमलाविप्रतहांकेभूपा ॥ हर्षितभजनकरैंदिनराती । जहाँरहैंआदितबहुभांती ॥ याहिविधिप्रभुकरज्यो

तिविराजै । अनहदनादघंटध्वनिबाजै ॥ तेंतिस कोटिदेवतातहां । जगन्नाथकोआश्रमजहां ॥ दक्षिणादिशिसेंकाशिप्रयागा । तहाँअहैयकविमल तड़ागा ॥ तहँबलभद्रसुभद्रासङ्गा । जहाँबसहिंश्री सुरसरिगङ्गा ॥ कृपासिंधुप्रभुपरमअगाधा । निशि दिनभजनकरैंअवराधा ॥ दोहा ॥ दक्षिणदिशा पुनीतहै, सुनहुउमाचितलाइ ॥ आगिलचरितजु होइहैं, सोमैंकहौंबुझाइ ॥२॥ चौपाई ॥ कलियुग मस्तहोइजबजैहै । मानुषकोतनुमानुषखैहै ॥ तब प्रभुलेअवतारकलंकी । मानुषतबहोइहैंनिकलंकी ॥ दक्षिणदिशिरविऊगहिंजाई । आगिलअर्थकहौं समुझाई ॥ धर्मकथाचलिहैंबहुभांती । नेमधर्मक रिहैंदिनराती ॥ विप्रजिवाइआपतबजेइहै । निश्च यमानसूर्य्यकेगइहैं ॥ लक्ष्मीघरघरकरहिनिवासा । धर्मकथातहँहोइप्रकासा ॥ वृथावचनकोईनहिंभा षै । निशिदिनध्यानसूर्यपररावै ॥ धर्मविचारसूर्य तहँकरिहैं । द्वादशकलाज्योतिलेवरिहैं ॥ दो० ॥ द्वादशकलासऊगिहैं, आदिततबहींआइ ॥ पूर्वज न्मकेपातकैं, कथापढ़तक्षयजाइ ॥३॥ चौपाई ॥ आगिलअर्थप्रभुटेकिसुनावा । सुनिगिरिजाकेमन

अतिभावा ॥ मग्नभईसुनिशिवकीबानी । हर्षि सूर्यगुणकरहिबखानी ॥ तीनिभुवनजेहिनावेमाथा । सोप्रभुनाथअनाथकोनाथा ॥ जोयहकथा पढ़ैमनलाई । बाढ़ैधर्मपापक्षयजाई ॥ दोहा ॥ जोयहकथामनलाइकै, टेकधरैव्रतध्यान ॥ जोइच्छाकरिपढ़ैनर, सोपुरवहिंभगवान ॥४॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्येमहापुराणेकल्कीअवतारवर्णनो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

अथ व्रतविधानप्रारम्भः ।

चौपाई ॥ कार्तिकमासजोप्राणीरहई ॥ तीनपत्र तुलसीदललहई ॥ अगहनमासध्यानजोधरई ॥ शक्करचाटिकेभोजनकरई ॥ पूसमासजोप्राणीरहई ॥ तीनदूबकेभोजनकरई ॥ माघमासकरसुनहु बिचारा ॥ तिलखंडीकोकरैअहारा ॥ फाल्गुनमासजोयहिबिधिरहई ॥ दहिखंडीकेढिगहोरहई ॥ चैत्रमासकोसुनहुबिचारा ॥ घृतगंडूषभरिकरैअहारा ॥ वैशाखमासजोप्राणीरहई ॥ आमिलतासचाटिसोरहई ॥ ज्येष्ठमासकरसुनहुविचारा ॥ तीनअंजलिजलकरैअहारा ॥ असाढ़मासजोप्राणीरहई ॥ तीनामिरचकोभोजनकरई ॥ सावनमासयहीऽव्यव

हारा ॥ कपिलामूत्रगंडूषअहारा ॥ भादौंमासजो यहिविधिरहई ॥ गोबरखंडिकेढिगहोरहई ॥ क्वार माससकोसुनहुबिचारा ॥ चंदनखंडिकेकरैअहारा॥

इतिश्री सूर्यमाहात्म्ये महापुराणे व्रतमहात्म्यं समाप्तम् ॥

॥अथ श्रीकरुणाष्टकप्रारंभः॥

श्रियैनमः ॥ छंदमत्तगजेंद्र॥ नाथबिनयसुनि येजुदयानिधिजानिस्वदासकृपाकरियेजू॥ ज्योंजु बिभीषणपैसुदरेरमणेशहुपैअबत्योंढरियेजू॥कीजि यनाथअजामिलकी सुधिमोअघकोनाहिये धरिये जू ॥ मैंअघमोचनजानिगह्योंपदसोकरियेअघको हरियेजू ॥१॥ छंदद्रुमिला ॥ शबरीपरनाथकरीक रुणा वहकौनकुलीनकहौंकिनजू ॥ तुमबानरभा लुनिहालकिये कितवैदिकयागकियेतिनजू ॥ ग तिगीधहिदीन्हिसुकीन्हिक्रिया नितहीनितमांस भख्योजिनजू ॥ रमणेशपुकारतआरतहैसुनियेब हुबीतिगयेदिनजू ॥२॥ जिहिपापहत्योहरिबालि वही अघनाथसुकंठकरैनितजू ॥ पुनिसोइबिभीष णकीन्हिकुचालकृपालुननेकुधरीचितजू ॥ नहिं दासनकोअपराधगिन्यो तुमदीनदयालुकियोहि

तजू॥ अतिआरतदीनपुकारतहैरमणेशकिबेरगये कितजू॥३॥ छंदचंद्रकला॥ कुबरीप्रभुकौनकुलीन रही जिहिसोंरतिकीन्हिस्वलोकपठाई॥ उपनैन भयोकबग्वालनको जिनकीब्रजमेंनितजूठनिखाई॥ शुभसाधनव्याधाकियोकहँजाहिपठायहुधामबि मानचढ़ाई॥ अतिकोमलचित्तसदाअसक्यों रम णेशकिबेरधरीनिठुराई॥४॥ कबगोपबधूपतिधर्म्म वती जिनसोंकरिप्रीतिदियोनिजधामा॥ नयती जुअजामिलभक्तकियोगणिका कबजाइवसीशुभ ठामा॥ भरिअंकमिल्योजिहिसोंउठिकैनहींनाथ हतोधनवानसुदामा॥ रमणेशकिनाथसुनोबिन तीफुरकीजियआजुदयानिधिनामा॥५॥ दुर्योध नकेपकवानतजे छिलकानिजभक्तसुगेहमखाये॥ यहबानितुम्हारीसदाजुअहै निहकिंचनहीतुमको नितभाये॥ हरिदीनदयालुगरीबनिवाजसुलोक हुवेदचहूंयुगगाये॥रमणेशबिभोअतिदीनअहैन मिलैजगमोसमखोजलगाये॥६॥ अपराधगनौम मतौजुसुनौताजिकेपतिधर्मभईतबमीरा॥ शुचिता जगमेंसुप्रसिद्धभली करमाकलिमेंब्रजमेंजुअहीरा ॥ रइदाससुवैदिकपूजकहै कबनेमगह्योबनमेंबसि

कीरा ॥ रमणेशहुयाचतहैहरिसोंरघुबीरहरौममसं
सृतिपीरा ॥७॥ तुमहींगतिहौतुमहींपतिहौतुमहीं
जननीतुमहींधनहौजू॥ तुमहींगुणअवगुणग्राहक
हौतुमहींभगिनीयुवतीजनहौजू॥ तुमहींममामित्र
पितातुमहींतुमहींतनुहौतुमहींमनहौजू॥ रमणेश
करैकहँलौंबिनतीतुमहींममसर्वसजीवनहौजू॥८॥
॥ दोहा ॥ यहकरुणाअष्टकपढ़ै, जोजननितमन
लाइ ॥ सीतापतिदशरथसुवन, ताकीकरैसहाइ॥

इतिश्री कविरमणेशकृतं करुणाष्टकं संपूर्णम् ॥
श्रीसीतारामचन्द्रो जयति ॥

॥ बिनती-सवैया ॥

आजुलगेबहुकीन्हउपाय तहांकबहूंसुखनेकुन
पायो ॥ योगबिरागकियेतपतीरथभांतिअनेकनरू
पबनायो ॥ जन्मअनेकगयेरघुनाथनरूपतुम्हारहि
येमहँआयो ॥ देखिदशाअपनीदशहूंदिशिहेहरिरहे
शरणागतआयो ॥१॥ अंगबिभूतिलगाइकेचाम
बिछाइकेध्यानकर्योकबहूं ॥ मूड़मूड़ाइबनाइसुवे
षकहावतसिद्धफिर्योतबहूं ॥ ऊरधबाहुतपादिकि
येतहँमानकहूंअपमानकहूं ॥ श्रीरघुबीरदयातुम्हरी
बिनहौंरघुनाथदुखीअबहूं ॥२॥ डूबतहौंदुखसिंधुमँ

झारसियावरजूगहिबांहँउबारौ ॥ जोनगहोकरजा
तबहोतबआपुहिकोजुपरिश्रमभारौ ॥ तातेनकीजै
बिलंबदयानिधिनाथपुकारतहौंचितधारौ ॥ श्रीनृ
पराजकिशोरप्रभो करुणाकरिकेरघुनाथनिहारौ ३
॥ रागधनाश्री ॥ रघुबरराखहुबिरदतुम्हारी ॥ मैं
अतिअधमअधमअधमनतेआयोशरणतुम्हारी ॥
बाल्मीकिआदिकभाषतहरिशरणागतअघहारी ॥
जोमैंपापकीन्हअघमोचनशारदसकैनउचारी ॥ ता
तेअबतवशरणेआयोंश्रीवररमणविहारी ॥४॥

॥ अथ सनेहलीला प्रारम्भः ॥

॥ दोहा ॥ एकसमयब्रजबासकी, सुरतिकरी
हरिराय ॥ निजजनअपनोजानिकै, उद्धवलियेबु
लाय ॥१॥ श्रीकृष्णबचनऐसेकह्यो, उद्धवतुमसुनि
लेहु ॥ नंदयशोदाआदिदै, जाब्रजकोसुखदेहु २
ब्रजबासीबल्लभसदा, मेरेजीवनप्रान ॥ तातेनिमिष
नबीसरौं, मोहिंनंदरायकीआन ॥३॥ हमउनसों
ऐसोकस्यो, आवैंगेरिपुजीति ॥ अवतारकैसेबनै
पितामातुसोंप्रीति ॥४॥ उद्धववेब्रजयोषिता, उन
केमेरोध्यान ॥ तिन्हैंजायउपदेशद्यो, पूरणब्रह्मसु

जान ॥५॥ बागोअपनेअंगको, क्रीटमुकुटपहिराय ॥ श्रुतिकुंडलमालादई, अपनोवेषबनाय ॥६॥ अरुअपनोरथसाजके, सूलसारथीदीन्ह ॥ उद्धवचरणप्रणामकरि, रथआरोहणकीन्ह ॥७॥ विद्यावंत विवेकयुत, शीलवंतगुणशुद्ध ॥ चतुरचिन्हजानत सबै, योंप्रवीनश्रीउद्ध ॥८॥ परमसखाश्रीकृष्णको सुरगुरुशिष्यप्रवीन ॥ तातेलायकपाठयो, ब्रजको आयसुदीन ॥९॥ रथहिजोतिउद्धवचले, आसिअनंदमनकाम ॥ दिनकरघरप्रापतिभये, गयेनंदके ग्राम ॥१०॥ चहुँदिशिगोधनआवही, वृषभानूकी गाय ॥ बच्छबचनलागतभले, मानोथानछुराय ॥११॥ अपनीअपनीमंडली, मिलेग्वालकेबृंद ॥ मुरलीमधुरबजावहीं, गावहिंगुणगोविन्द ॥१२॥ गोदोहनमोहनात्रिया, टेरतलैलैनाम ॥ गोरजउड़ि अंबरलगी, छबिपावतनँदग्राम ॥१३॥ तबउद्धवरथहांकिकै, गयेनंदकीपौर ॥ नंदयशोदादेखिकै, संमुखआयेदौर ॥१४॥ उद्धवरथतेउतारिकै, मिलेनंदकोधाय ॥ नयनसजलजलसोंभरे, आनँदउरन समाय ॥१५॥ करगहिगृहकोलेचले, सुतसनेहके भाय ॥ असनबसनबहुविधिदिये, निजमंदिरपध

राय ॥१६॥ अरुचंदनबहुपुष्पजल, धूपदीपइत्यादि ॥ बिधिपूर्वकपूजाकरी, सुखशय्याकुसुमादि ॥१७॥ नंदयशोदाप्रेमसों, पूँछनलागेबात ॥ शूरसेनकेपुत्रकी, कहौपरमकुशलात ॥१८॥ जिनकेषटबालकहते, बंदिपरेबेकाज ॥ केतकदिनदुःखित भये, दुष्टकंसकेराज ॥१६॥ भलीभईसैन्यासाहित, कृष्णकियोहतकंस ॥ तादिनतेसुखपावहीं, मातुपितायदुबंश ॥२०॥ जाकेअष्टादशत्रिया, रामकृष्णसुतदोय ॥ सरवरितावसुदेवकी, कहौकौनपैहोय ॥२१॥ देवनकेमंगलभए, श्रीवसुदेवजनमंत ॥ घरघरप्रतिसबसुरनके, दुंदुभिबजेअनंत ॥२२॥ पटरानीदेवकसुता, सुकृतपरमकृपाल ॥ ताकेगृहप्रकटतभये, श्रीकृष्णकंसकेकाल ॥२३॥ उद्धवतातेकीजिये, उनकोसुमिरनध्यान ॥ अबकीधौंकबदेखिहौं, अनँदबधाएकान ॥२४॥ सुफलकसुतआयेइहां, रामकृष्णलैजान ॥ तबतेतनुगतिदोभई, यहांदेहवहँप्रान ॥२५॥ नयनयशोदाजलभरे, कंठश्वासनहिंलेत ॥ कहिकहिबातैंपुत्रकी, हीयाभरिभरिदेत ॥२६॥ निमिषनिमिषमहँझगरते, मोसोंदोऊभ्रात ॥ अबकीधौंकबदेखिहौं, चोरिचोरिदधि

खात ॥२७॥ मोतिनकीमालागरे, राजहंसगति
दोर॥ यहअङ्गनकबदेखिहौं, रामकृष्णकीजोर २८
पीतांबरकोओढ़ना, अरुबाजतमृदुबेनु ॥ अबकी
धौंकबदेखिहौं, बनहिचरावतधेनु ॥२६॥ वेतोभू
खेहोतहैं, प्रातकालकीबान ॥ तहांकहौकोराखिहै,
घृतसोंरोटीसान ॥३०॥ बातकहौंइकादिवसकी, तु
मसोंहितूसुनाय ॥ गोदहिकर्तबनाचलै, चितैचि
तैरहिजाय ॥३१॥ उद्धवपयउफलनलग्यो हूंदौरी
तजिअङ्ग॥ पीछेतेमेरोलला दधिकोभाजनभङ्ग३२
मोहिंदेखिअतिरिसभई थोरेदधिकेकाम ॥ ऊखल
सोंआनंदघन मैंबांधेगहिदाम ॥३३॥ तादिनते
खटकतसदा मेरोयहअविवेक ॥ ऐसीकहौकोसंभवे
सुतसोंअवगुणएक ॥३४॥ तबउद्धवऐसोकहै सुत
केसुनौसँदेश ॥ उनकोनाहिंनबीसरो याब्रजको
आवेश ॥३५॥ तुमहिंपायँलागनकह्यो जलसों
नयनभराय ॥ मैयामोहिंनबीसरो बड़ोकियोपय
प्याय ॥३६॥ जादिनतेआयेइहां छाँड्योगोकुल
गाँव ॥ तादिनतेकोउनाकहै कान्हकान्हबलिजाँ
व ॥३७॥ जबहमतुमतेंबिछुरके आयेमथुरामाँझ॥
मैंकबहूँनाहींपियो पियप्रातअरुसाँझ॥३८॥ अरु

तुमबाबानन्दसो ऐसीकहियोजाय ॥ वेतुमनीके
राखियो धौरीधुमरीगाय ॥३९॥ मनवचकर्मसहेत
धरि करिहौंपूरणकाम ॥ आवेंगेदिनपाँचमें हम
भैयाबलराम ॥४०॥ राजपाटसिंहासना खानपान
सुखदेत॥ याब्रजसुखपावतभले वनमेंवटसंकेत ४१
बातकहतबीतीनिशा तमचुरकीन्हेगान ॥ मानो
गर्जनमेघकी घरघरदधीमथान ॥४२॥ उद्धवउठि
यमुनागये कीन्हयमुनस्नान ॥ सेवासुमिरनसब
कियो जोअपनोउनमान ॥४३॥ करिकृतआये
घोषमें उद्धवमनआनंद ॥ याब्रजसुखपावतभले
पूरणपरमानंद ॥४४॥ अपनेअपनेधामते बाहर
निकरीग्वाल ॥ रथदेख्योश्रीकृष्णको नंदमहरके
द्वार ॥४५॥ यूथयूथएकैभई कीन्होयाहिविचार॥
यहनाहींसुतनंदको हैकोऊप्रतिहार ॥४६॥ ऊद्धव
पैगोपीगई कीनोवंदनपान ॥ शीशनाइआदर
कियो सखाकृष्णकोजान ॥४७॥ उद्धवब्रजआये
भले कहौकृष्णकुशलात ॥ वहाँजाइकीनीभली
कहुकछुउत्तमबात॥४८॥ तुमसांचेउत्तमसखा मन
वचकर्मसहेत ॥ प्राणनकोहारिलैगये पिंडदानतुम
देत ॥४९॥ उद्धवहमतोबावरी करेंकवनसोंप्रीति ॥

वहाँजाइछोड़ीसबै नंदगाँवकीरीति ॥५०॥ याब्र
जकबहुँकआइहैं मैयाकेहितकाज ॥ ब्रजयुवतिन
केनाभये भयेवहांकेराज ॥५१॥ हमश्रवणनछाँ
ड़ीसुनी मोरपच्छवनपात ॥ सुरभीसाँचीचित्रकी
ताहिदेखसकुचात ॥५२॥ तबउद्धवऐसीकही सुनौ
सकलब्रजनार ॥ बातकहोपरब्रह्मकी आतमतत्व
विचार ॥५३॥ वेतुमपरकरिहैंकृपा प्रभुताजानिपर
म्म ॥ तजियेनातोगाँवको भजियेपूरणब्रह्म ५४
छायामायारहितहै नहींहोतउनमान ॥ हरितुमसों
ऐसोकह्यो भजियेश्रीभगवान ॥५५॥ जापदको
योगेश्वर लगेरहतअनुराग ॥ साधनसोइकीजेस
दा नामधरैवैराग ॥५६॥ नयनमूँदिमुखमौनगहि
त्रिगुणरहितनिजधाम ॥ तुमसबहीमेंदेखिहौ आ
पहिआतमराम ॥५७॥ मधुकरअंतरकठिनहै कठि
नबातकहिजात ॥ भूखमरैदिनसातलौं सिंहघास
नहिंखात ॥५८॥ यद्यपियोगप्रसिद्धहै तोतुमहीलै
जाव ॥ बहुखोनाहिंनपाइहौ ऐसोउत्तमदाँव ५९
उद्धवतातेदेखिहौ तत्वरूपतनुमाहिं ॥ सोहमको
सिखवतकहा तुमहींसाधतनाहिं ॥६०॥ यहतौउन
कोचाहिये जिनकेअंतरराय ॥ दादुरतोजलबिन

जिवै मीनतुरतमरजाय ॥६१॥ हैंदोउएकैठौरके दा
दुरमीनसमान ॥ वेजलबिनमारुतभषै वेबिछुरत
तजप्रान ॥६२॥ उद्धवइतनोअंतरो ब्रजमथुराके
लोग ॥ विमुखकरैवारूपको जारिदेहसोयोग ६३
पठयेआयेकवनके कवनमित्रकोजानि ॥ यहाँतु
म्हारीकौनसों कहौकवनपहिचान ॥६४॥ बचनब
चनबाढ़ीव्यथा नहिंजानतपरहेत ॥ मधुकरदाधे
अङ्गपर कहालोनघसिदेत ॥६५॥ तनकारेमनसाँ
वरे कपटीपरमपुनीत ॥ मधुकरलुब्धीवासके निमि
षएककेमीत ॥६६॥ तुमतौस्वारथकेसगे नहींबेलि
सेभाव ॥ भावैयहगह्वरबढ़ौ भावैजरिबारिजाव ६७
तुमतोचरणाजानिछुवौ ऐसीगतिकेवीर ॥ मधुकर
रसअतिलालची नहिंजानतपरपीर ॥६८॥ रहत
निकटनितश्यामके तातेनिपटनपीर ॥ बिछुरोगे
हरिसङ्गते तबजानोगेवीर ॥६९॥ उद्धवहारिविछुरन
व्यथा तुमपैबीतीनाहिं ॥ बिछुरोगेजबश्यामते त
बजानौमनमाहिं ॥७०॥ हमतुमतेकैसेकहैं मधुकर
सुनोसँदेश ॥ नाहीरजातिनपाँतिके कहाकरोउप
देश ॥७१॥ कितविधनासिरजीहमैं कितदियोब्रज
कोबास ॥ कितमिलापश्रीकृष्णसों कितबिछुरन

कीआस ॥७२॥ नयनहमारेमधुकरा आननकृष्ण
सरोज ॥ ब्रजछाँड़ेतादिवसते वैरीभयोमनोज ७३
मनमोहनवेनामहैं मोहननयनाविशाल ॥ मोहन
पढ़िकछुमोहनी लैमोहीब्रजबाल ॥७४॥ सबअँग
मोहनरूपहै मोहनवेणुरसाल ॥ मोहनमूरतिमाधु
री मोहनवचनमराल ॥७५॥ वचनवचनमोहीत्रि
या हमतुमकेतिकबात ॥ सुरनसहितसुरयोषिता
थकितधामनहिंजात ॥७६॥ एकसमयनिशिशरद
की मोहनवेणुबजाइ ॥ वैनसैनदेसाँवरे लीन्ही
सबैबुलाइ ॥७७॥ अरसपरसहमसोंमिले कुञ्जन
कियोबिहार ॥ सोसुखनाहींबीसरै, सुमिरतवारं
वार॥७८॥ एकसमयजलकेविषे करतकेलिअस्ना
न ॥ चीरचोरितरुपैचढ़े वेयशुदाकेकान्ह ॥ ७९ ॥
बहुत्योनाहिंनबीसरै भुजबलकीअनुहारि ॥ राखि
लियेब्रजकुलसबै नखपरगिरिवरधारि॥८०॥ एकस
मयवनकेविषे कुञ्जकुञ्जवनधाम॥हरिहमसोंक्रीड़ा
करी पलपलपूरणकाम ॥८१॥ एकदिवसइकगो
पिका गईगेहकेद्वार ॥ दधिचोरतरोंकेहरी चलेच
पेटामार ॥८२॥ एकदिवसहरिआमिले मोहिंसांक
रीपोंर ॥ मटुकीपटकीभूमिपर हँसेहारकोतोर ८३

ऐसीदिनादिनकीकथा वर्णतनाहींऔर ॥ हमरीवे
जानतसबै मोहनचितकेचौर ॥८४॥ लीलागोकुल
गाँवकी हमजानतमनमाहिं ॥ उद्धवतुमश्रवणन
सुनी नयननदेखीनाहिं ॥८५॥ जोतुमलायेयोग
को यदुपतिकेपरधान ॥ हरिरसकीसीचीसबै नहिं
भावतरसआन ॥८६॥ पतिब्रताहूँरूपकी सारिभ
रतसबगाउं ॥ यदपिभजेकोउभूपको तोव्यभिचा
रीउनाउं ॥ ८७ ॥ सीप रहत सागर विषै मन
मिलाप नहिंलेत ॥ मधुकरयहउत्तममतो, स्वाति
बूँदसोंहेत ॥८८॥ मानसरोवरतेउड़ैं, आनभूमि
चलिजाहिं ॥ बिधिवाहनक्षुध्यार्थी, तौंउच्छिष्टन
हिंखाहिं ॥८९॥ जलनाहिंनथोरोकछू, सागरन
दीनिवान ॥ स्वातिबूंदचातकापियै, औसबजूठस
मान ॥९०॥ एदोउनयनबिराटके, निगमकहतहै
नीत ॥ उड़िचकोरअंतरकियो, दिनकरअरुशशि
मीत ॥९१॥ वेलिहोतबर्षासमय, करतवृक्षसोंप्रीति
॥ प्राणगयेछोड़ैनहीं, अपनीउत्तमरीति ॥९२॥ ह
मतोनरदेहीधरी, इतनीजानतनाहिं ॥ रसतजभ
जियेयोगको, भंगहोतब्रतमाहिं ॥९३॥ करतआ
येसोकरत, ऊंचनीचसोंसंग ॥ हमकबहूंनाहिंनाकि

ये, इष्टभावब्रतभंग ॥९४॥ यद्यपिकुबजाचतुरहै,
तहूंकंसकीदास ॥ भवनगवनकीनोहरी, तुमसेसे
वकपास ॥९५॥ अपलक्षणतेनाडरों, बड़ेभूपकेपू
त ॥ कीवैसाँचेरावरे, कीतुमसाँचेदूत ॥९६॥ या
हिकठिनलागतहमे, सुनोश्यामकोहेत ॥ वहांजा
यकुबजारमी, हमैंयोगासिखदेत ॥९७॥ जोकछुलि
खोलिलाटमें, बिछुरनामिलनसँयोग ॥ दोषकवन
कोदीजिये, जानतहैंसबलोग ॥९८॥ देहधरीजा
कारणे, लागिहैंताकेकाम ॥ मनघटयहरससोंभरो,
नहींयोगकोठाम ॥९९॥ मोरमुकुटकटिकाछनी,
कुंडलतिलकसुभाल ॥ पीतांबरक्षुद्रघंटिका, उरबै
जंतीमाल ॥१००॥ करलकुटीमुरलीगहे, घूंघरवारे
केस ॥ वेहमरेनयननबसे श्याममनोहरभेस १०१
तबउद्धवऐसीकही धन्यधन्यब्रजनारि ॥ प्रेमभक्ति
रसबशकिये श्यामभुजाउरधारि ॥१०२॥ यहली
लातुमकारणे गोपवेषअवतार ॥ निर्गुणतेसगुण
भये तुमतेकरनाबिहार ॥१०३॥ निगमजाहियोष
तरहे अगमनपावतअंत ॥ सोतुम्हरेजूठनगहे श्री
पतिश्रीभगवंत ॥१०४॥ योगेश्वरपावैंनहीं सिद्ध
समाधिलगाइ ॥ सोतुम्हरेरसबशभये बनबनचारत

गाइ ॥१०५॥ कहतसुनतऐसीकथा वहांरहेषटमास
॥ तबउद्धवआज्ञालई हरिचरणनकीआस ॥१०६॥
नंदमिलेयशुदामिली मिलेगोपिअरुग्वाल ॥ बंद
नकरिकरिसबहिंसों उद्धवचलेकृपाल ॥१०७॥ नंद
कहीयशुदाकही गोपिनकहीबहोरि ॥ वेरजधानी
रमिरहे ब्रजकोनातोतोरि ॥१०८॥ अबकबहूँकरिहैं
कृपा सेवकअपनेजानि ॥ हरिहमतेनाहबीसरो
पूरवाहितपहिचानि ॥१०९॥ तबउद्धवआयेइहां कृ
ष्णचंद्रकेधाम ॥ पांयलागबंदनाकियो बोलतलैलै
नाम ॥११०॥ ग्वालबालसबगोपिका ब्रजकेजीव
अनन्य ॥ तुमहिंपाँयलागनकह्यो सुनहुदेवब्रह्म
ण्य ॥१११॥ नंदयशोदाहेतकी कहियेकहाबनाय
॥ कीवेजानततुमभले मोपैकहीनजाय ॥११२॥
वेचिततेटारतनहीं रामकृष्णकीजोर ॥ मधुनायक
मुरलीगहे मूरतिमधुरकिशोर ॥११३॥ अरुगोपिन
केप्रेमकी महिमाकहूंअनंत ॥ मैं पूछीषटमासलौं
तऊनपायोअंत ॥११४॥ देहगेहसबछोड़िकै धरत
रूपकोध्यान ॥ उनकोभजनबिचारिये औसबफी
कोज्ञान ॥११५॥ संतभक्तभूतलाजिते तेसबब्रजकी
नारि। चरणशरणलागीरहैं मिथ्यायोगाबिचारि॥

॥११६॥ उनकोगुणनितगाइये करिकरिउत्तमप्रीति ॥ मैंनाहींदेखीसुनी ब्रजबासिनकीरीति ॥११७॥ तबहरिउद्धवतेकही हूंजानतसबअंग ॥ मैंकबहूंछोड़ोनहीं ब्रजबासिनकोसंग ॥११८॥ ब्रजतजिअंतनजाइहौं मेरेतोयहटेक ॥ भूतलभारउतारिहौं धरिहौंरूपअनेक ॥११९॥ उद्धवतुमजानौनहीं प्रेमभक्तिकीरीति गोपिनकेसम्बन्धते उपजेप्रेमप्रतीति ॥१२०॥ कृष्णभक्तसोजानिये जाकेअंतरप्रेम ॥ राखेअपनेइष्टको गोपिनकैसोनेम ॥१२१॥ यहलीला ब्रजबासकी गोपीकृष्णसनेह ॥ जनमोहनजोगावहीं सोनरउत्तमदेह ॥१२२॥ जोगावहिंसीखैंसुनैं मनबचकर्मसहेत ॥ रसिकरायपूरणकृपा मनबांछितफलदेत ॥१२३॥ गोपीअरुउद्धवकथा भूपरपरमपुनीत ॥ तीनिलोकचौदहभुवन बंदनीकशुभगीत ॥१२४॥ नाशतसकलकलेशऔ सुखउपजतमनमोद ॥ युगलचरणमकरंदमन पावतपरमाबिनोद ॥१२५॥ श्रीमुकुंदमनमधुपजहँ सकलसंतअनुराग ॥ यशुदाप्रेमप्रवाहमें पड़ेरहतभड़भाग ॥१२६॥

इतिश्री सनेहलीला समाप्ता ॥

॥ नामकरणलीला ॥

क०–आये मुनि गरग पठाये बसुदेव भाये कारन करन नाम करन सोहायो है ॥ स्वागत सुनाई सनमानि नमनाय श्याम रामहीं बोलाइ ऋषि पाँय शिर नायो है ॥ जनम बचाइ गुण गण गिनवाय मोह मापकै न माय मन आनंद बढ़ायो है ॥ ब्रजकी लुगाइन बुलाय चित्त चा इन बजाइ जाइ दुहुँन को नाम धरवायो है ॥

॥ अथ गणेशस्तुति प्रारंभः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ छन्द ॥ प्रथम सुमुखइक रदनकपिलगजकर्णसुदायक ॥ लंबोदरपुनिविकट विघ्ननाशनजुविनायक ॥ धूम्रकेतुअरुगणाध्यक्ष शिरचंद्रगजानन ॥ द्वादशनामप्रभातनित्यसुमि रोनिजआनन ॥ विद्यारंभाविवाहमेंगृहप्रवेशगमने सदाशुभश्रीगणपतिरटतघरानिरखीघनसंकटछिदा

इति गणेशस्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ बजरंगचालीसा ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ बुद्धिहीनतनु जा

निकै सुमिरौंतनयसमीर ॥ बुद्धिविद्यावलदेहुमोहिं संपतिसहितशरीर ॥१॥ चौपाई ॥ जयहनुमानज्ञा नगुणसागर। जयकपीशतिहुंलोकउजागर ॥ राम दूतअतुलितबलधामा। अंजनिपुत्रपवनसुतनामा ॥ महावीरविक्रमबरंगी । कुमतिनिवारकसुमतिके संगी ॥ कंचनबर्णविराजसुबेशा । कुंडलकानन कुंचितकेशा ॥ हाथबज्रउरध्वजाबिराजै । कांधेमू जजनेऊछाजै ॥ शंकरसुवनकेशरीनंदन । तेजप्र तापमहाजगवंदन ॥ विद्यावानहनूअतिचातुर । भक्तकाजकरबेकोआतुर। प्रभुचरित्रसुनवेकोरसि या । रामलषणसीतामनबसिया ॥ सूक्ष्मरूपधरि सियपहँआयो बड़ारूपधरिलंकजलायो ॥ भीमरू पधरिअसुरसंहास्यो । श्रीरघुनाथकेकाजसँवास्यो॥ आनिसजीवनिलषणजिवाये । रामचंद्रतबकंठल गाये ॥ रघुबरकीन्हीबहुतबड़ाई । अहोतातभारत समभाई ॥ सहसबदनतुम्हरेगुणगावैं । असकहि रघुपतिकंठलगावैं ॥ सनकादिकब्रह्मादिमुनीशा। नारदशारदसहितअहीशा ॥ यमकुबेरदिशिपाल जहांते। कबिकोविदकहिसकैंकहाते॥ तुमउपकार सुग्रीवहिंकीन्हा । राममिलायराज्यपददीन्हा॥ तु

मरोमंत्रबिभीषणमाना । लंकेश्वरभयेसबजगजाना ॥ युगसहस्त्रयोजनजोभानू । लीलाताहिमधुरफलजानू ॥ प्रभुमुद्रिकामेलिमुखमाहीं । जलधिलाँघिगयेअचरजनाहीं ॥ दुर्लभकाजगतमेंजेते । सुमिरतासिद्धहोहिंसबतेते ॥ रामदुवारेतुमरखवारे । बिनुआज्ञानहोइपैठारे ॥ सबसुखलहैतुम्हारीशरना । तुमरच्छककाहूकोडरना ॥ आपनतेजसँभारोआपै । तीनोलोकहाँकतेकांपै ॥ भूतपिशाचनिकटनहिंआवै । महाबीरजबनामसुनावै ॥ नाशैरोगहरैतनुपीरा । भजैनिरंतरहनुमतबीरा ॥ संकटतेहनुमानछोड़ावै । मनवचकर्मध्यानजोलावै ॥ सबपररामराजाशिरताजा । ताकेकामहेतुसोछाजा ॥ औरमनोरथजोकोइलावै । तनमनवाञ्छितफलसोपावै ॥ चारिउयुगपरतापतुम्हारो । हैपरसिद्धजगतउजियारो ॥ रामपियारेशंभुदुलारे । साधुसंतकेतुमरखवारे ॥ अष्टसिद्धिनवनिधिकेदाता । असवरदीनजानकीमाता ॥ रामरसायनतुम्हरेपासा । सादरतुमरघुपतिकेदासा ॥ तुम्हरेभजनरामकोपावै । जन्मजन्मकोदुखबिसरावै ॥ अंतकालरघुपतिपुरजाई । जहाँजन्मिहरिभक्तकहाई ॥ औरदेवता

चिंतनाहिंधरई । हनुमतसेइसकलसुखकरई ॥ संकटहरैमिटैसबपीरा । जोसुमिरैहनुमतबलवीरा ॥ जैजैजैहनुमानगुसांई । कृपाकरहुगुरुदेवकिनांई ॥ यहशतवारपढ़ैजोकोई।छूटैबंदिमहासुखहोई॥ जो कोइपढ़बजरंगचालीसा। होइसिद्धसाखीगौरीशा ॥ तुलसीदाससदाहरिचेरा। कीजैदास हृदयमहँ डेरा॥दोहा ॥ पवनतनयसंकटहरण, मङ्गलमूरति रूप॥ रामलषणसीतासहित, बसहुहृदयसुरभूप॥

इति श्रीतुलसीदासकृतबजरङ्गचालीसासंपूर्णम्॥

॥ अथ महादेवलीलाप्रारंभः ॥

मैंयोगीयशगायारेबाबामैंयोगीयशगाया।तेरे सुतकेदर्शनकारणमैंकाशीसेधाया ॥ पारब्रह्मपूरणपुरषोत्तमसकललोकजामाया । अलखनिरञ्जन देखनकारणसकललोकफिरआया ॥ धनिधनितेरोभाग्ययशोदाजिनऐसासुतजाया । गुणनबड़े छोटेमतभूलोअलखरूपधरआया ॥ जोभावैसोलीजेरावरकरोआपनीदाया । देहुअशीशमेरबालककोअविचलबाढ़ैकाया ॥ नामैंलेहौंपाटपटम्बरना मैंकञ्चनमाया । मुखदेखूंतेरेबालककोयहमेरेगुरुने

लखाया ॥ करजोरेविनवैंनंदरानीसुनयोगिनके
राया । कालापीलागौररूपहैवाघम्बरओढ़ाया ॥
कहुँडांकनकीदृष्टिलगेगी बालकजातादिठाया ॥
जाकीदृष्टिसकलजगउपजै सोक्योंजातादिठाया ।
तीनलोककासाहेबमेरातेरे भवनाछिपाया ॥

॥ राग बिलावल ॥

दिलदारमेरासामलायारदरशादिखाजा।टेक॥
तेरेबिनदेखेकलनापड़तहैटुकमुखड़ादिखलाजा॥
जानकीपासभयेउदासनिकसतनाहीं पापीश्वास
मोरमुकुटपीताम्बरधारीमेरेनयनोंमेंसमाजा ॥१॥
नंदद्वारइकयोगीआयोशृंगीनादबजायो । शीश
जटाशशिवदनसोहायोअरुणनयनछविछायो ॥
रोवतखीझतकृष्णसाँवरोरहतनहींदुलरायो । लि
योउठायगोदनँदरानीद्वारेजायदिखायो ॥२॥

॥ वार्त्तिक ॥

अरी ललता, विशाखा, चंपकलिता, रंगदेवि
यो ! नेक देखियो तो सही मेरे लालाको कहा
हो गयो कि ऐसो रोये खीझैहै, हंवे बीर ! लाला
को कहा होगयोहै अरी वीर ! वो जो योगी आ
यो थो वाहिने कछुक टोनो करगयोहै, हंवे वीर!

वाको टेरले हवे वीर जाउहूं, चलरे योगी नन्द भवनमें यशुमति माय बुलावें। मटकत मटकत शंभू आवैं मनमें मोदबढ़ावें॥ सात बेर परिकरमा करके राइ नून कर लीनो। हाथ फेर लाला के ऊपर कछुक मंत्र पढ़ दीनो॥ व्यथा हुई सब दूर वदनकी किलक उठे नँदलाला। खुशीहुई नँदजू की रानी दीन्ही मोतिन माला॥ रहुरेयोगी नंद भवनमें दाया हमपर कीजे। जब जब मेरो लाला रोवे तब तब दरशन दीजै॥

॥ वार्त्तिक ॥

अरी यशोदा! नक लालाको लैयो तो सही दरशन करलेश्रों फेरकैलासको जाउंगो! कृष्ण लालकोलाईयशोदाकरअञ्चलमुखछाया। करप सारचरणनरजलीनोभृङ्गीनादबजाया॥ अलख अलखकरपाँयछुयेहैंहँसिबालककिलकाया। पांच बेरपारिकर्माकरके अतिआनन्दबढ़ाया॥ हरिकी लीलाहरमनअटक्योचितनहिंचलतचलाया। अ लखब्रह्मांडकोटिकेनायकनंदघरहिप्रगटाया॥ इन्द्र चन्द्रसूरजसनकादिकशारदपारनपाया। लागि श्रवणमंत्रदीनसुनाईहँसिबालकमुसकाया॥ कौ

नेदशेकयोगीहौतुमकौननामधरधाया। कहाँवास यहकहतयशोदासुनयोगिनकेराया ॥ तुमहाब्रह्मी तुमहींविष्णूतुमहींईशकहाया। तुमविश्वंभरतुम जगपालकतुमहींकरतमहाया ॥ चिरजीवीसुतम हरितिहारोहौंयोगीसुखपायो। सूरदासरमिचल्यो रावरोशङ्करनामबतायो ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीराममल्ललीला ॥

श्रीलक्ष्मणोविजयते ॥ छंदात्रिभङ्गी ॥ सुतनृप दशरथकेअतिसमरथवीरसुरथकेधुरधारी। रघुनंदन वांकेछबिबलछाकेअनुजहुजाकेव्रतधारी ॥ लक्ष्म णपदवंदनभरतअनंदनशत्रुनिकंदनशत्रुहनै। क छनीशुभकाछेवीरसुवाछेरुचिरुचिआछेबनेठनै॥१॥ जबदंडैकाढ़ैआनंदबाढ़ैमनोअषाढ़ैघनदरसैं। बैठ कीकरहिंजबचित्तहरहिंतबरङ्गधरहिंजबकरपरसैं ॥ वंदीगुणगावैंउमँगबढ़ावैंगायसुनावैंवीररसै। लखि रमणबिहारीछबिसुखकारीप्रेमसुवारीनितबरसै॥२॥ स्लैचकडंडेकरैंघमंडैंनिजभुजदंडैहँसिहेरैं। पुनिले जमफेरैंभुजन्हतेरैंहर्षितभेरैंभटभेरैं ॥ लैमुद्गरभाँ वैनालउठावैंतालबजावैंनिजभुजकी। रमणेशाजु

विधिहरकोटिकैंरतिवरवारौंछबिपरसानुजकी ॥३॥ लखिदाँवझपट्टैंझपटिलपट्टैं लपटिडपट्टैंदाँउलहैं। लैभूमिपटक्कैंपटकिझटक्कैंझटकसटक्कैंफेरिगहैं॥ दाँव नकेंठट्टावीरसुभट्टाकरेसपट्टाछबिछावैं। मिलिह त्थमहत्थागुत्थमगुत्थामत्थेमत्थाचपटावैं ॥४॥ इहि भाँतिअगारेसुखदअपारेनिरखनहारेसुखपावैं। मैं वरणौंकहलौंजिहिमतिजहँलौं प्रभुगुणतहँलौंतेगा वैं॥ यहमल्लसुलीलाअतिप्रियशीलारंगरँगीला खेलजहाँ। खेलतअसुरारीअवधविहारीरमणविहा रीलखततहाँ ॥५॥

इति श्रीकविरमणविहारीकृतराममल्ललीलासमाप्ता ॥

॥ प्रभाती ॥

जागिये कृपानिधान जानराज रामचन्द्र ज ननी कहै बार बार भोर भयो प्यारे। राजिवलो चन विशाल पीत वापिका मराल ललित कमल वदन ऊपर मदन कोटि वारे॥ अरुण उदित वि गत शर्वरी शशांक किरन हीन दीन दीप ज्यो ति मलिन द्युति समूह तारे। मनो ज्ञान घन प्र काश बीते सब भव विलास आस त्रास तिमिर

तोष तरनि तेजजारे ॥ बोलत खग निकर मुखर मधुर कर प्रतीत सुनो श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुमवारे । मनो वेद वंदीजन सूत वृन्द मागधादि विरद वदति जै जै जै जयति कैटभारे ॥ विकसत कमलामुखी चले प्रपुञ्ज चञ्चरीक गुञ्जतकल कोमल ध्वनि त्याग कञ्ज न्यारे । मनो विराग पाय सकल शोक कूप गृह विहाय भृत्य प्रेम मत्त फिरत गुणत गुण तिहारे ॥ सुनत वचन प्रियरसाल जागे अतिशयदयाल भागे जञ्जाल विपुल दुख कदम्ब टारे । तुलसिदास अतिआनंद देखकै मुखारबिंद छूटे भ्रम फंद परमंद द्वंद भारे ॥

इति प्रभातीसमाप्ता ॥

॥ अथ गंगालहरी ॥

ख्याल—सागरकि गिनी जांय लहर गिने जांय तारे॥ नहिंजांय गिने श्रीगंगाजीके तारे॥
षट् शास्त्र गिने जांय गिने जांय नर नारी॥
दशादिशा गिनी जांय सृष्टि गिनी जाय सारी॥
सिद्ध साधु गिने जांय गिने जांय आचारी॥

राजा रानी गिने जांय खलक सरकारी ॥ गिने जांय शाह शाहानी गिने हलकारे ॥ नहिं जांय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥ गिने जांय नदी नद सिंधु गिने जांय नाले ॥ गिने जांय श्वेतरंग लाल गिने जांय काले ॥ दरखत डाली जांय गिनी गिने जांय डाले ॥ छत्तीस रागिनी राग सकल गिनडाले ॥ गिनते गिनते कई हजार सायर हारे ॥ नहिं जांय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥ खग चरिंद जाते गिने जांय चातुर ॥ हरजात गिनी जाय नगर गिने जांय घर घर ॥ कागज स्याही जाय गिनी गिने जांय अक्षर ॥ सरदार गिने जांय गिने जांय सागर सर ॥ क्या जाने गंगने कितने शठ निस्तारे ॥ नहिं जांय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥ दिन रात गिने जांय तिथि घड़ी ॥ गायत्री गिनीजांय गिनी छन्दकी लड़ी ॥ शायर कायर जांय गिने गिने जांय कड़ी ॥ जंगम खेड़ा गिने जांय गिने जांय जड़ी ॥ यह सत्य सत्य छंद काशीगिरि ललकारे ॥ नहिं जांय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥

॥ यम का कथन ॥

अब बिष्णुसे जाकर यमने यही पुकारा ॥ गंगा ने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ लाखों पापी पृथ्वी पै रोज मरतेहैं ॥ क्या कहों मैं वो यक क्षण भरमें तरते हैं ॥ मेरे भयसे भी जरा नाहिं डरते हैं ॥ गंगाके गण उनकी रक्षा करते हैं ॥ बिन भजन किये होता उनका निस्तारा॥ गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ हिन्दू या तुर्क या बेहना डोम कसाई ॥ भंगी धोबी हड़ फोड़ या होवे नाई ॥ गंगाकी लहर जिसे दूरसे दी दिखलाई ॥ फिर अंतसमय में उसने मुक्ती पाई ॥ दर्शन करतेही तरा महाहत्यारा ॥ गंगा ने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ जो मेरे दूत पापियों को जायँ पकड़ने ॥ तौ गंगाके गण आवें उनसे लड़ने ॥ वो देख देख दूतोंको लगें अकड़ने ॥ और मारे बाण तनुबीच लगे वो गड़ने ॥ मैं लड़लड़कै कईलाख लड़ाई हारा ॥ गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ गंगासे सौ योजन पर एक नगरथा ॥ उस नगरमें इक पापी का ऊंचा घरथा ॥ वह पाप कर्म कर करता

रोज गुजरथा ॥ मरगया तो उसपर पड़ा एक बस्तर था ॥ गंगाका धोया उसीने उसको तारा ॥ गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ यह सुनी बात तब विष्णुजी यमसे बोले ॥ गंगाकी महिमा कहां लों कोई खोले ॥ इस नेत्रसे दर्शन श्री गंगाके जो ले ॥ बैकुंठमें वह फिर भूले सदा हिं डोले ॥ कुछ बशनाहिं मेरा चले न चले तुम्हारा॥ गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ जब मृत्यु लोकसे गंगा आप सिधारिहैं ॥ तब वह पापी फिर कौन बिधि कर तारिहैं ॥ उसकालमें जो कोई पाप कर्म करमारिहैं ॥ वह आन आनकर नरक तुम्हारो भरिहैं ॥ यमराजजी अब थोड़े दिन करो गुजारा ॥ गंगाने बंद करदिया नरक का द्वारा ॥ यह सुनी बात यमराजने घर फिर आये ॥ कुछ हँसे और कुछ कुछ मनमें पछताये॥ मनमारके यह गंगा को बचन सुनाये ॥ अबतौ तुम्हरे थोड़े दिन रहने पाये ॥ कहैं बनारसी कुछ यमका चला न चारा ॥ गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा

॥ इति ॥

॥ अथ गर्भचिंतामणि प्रारम्भः ॥

क्योंजन्मगमावोरटोरामरघुराई। मानुषदेहबारंबारसहजनहिं पाई ॥ टेर ॥ नरनारीकेसंयोगगर्भमेंआयो। मलमूत्रमांसकोपिंडहोयहैरायो ॥पगऊपरतलमैंशीशरहोलटकायो। दुखगर्भबासकोदेखबहुतघबरायो ॥ पड़तेहीपिंडमेंजीवतनिकसुधिआई। मानुषदेह० ॥१॥ अग्निजठरजहांतपेपवननहिंआवै। रहैजीवकैदमेंजराचैननहिंपावै ॥ करतासोंबारंबारअरजगुदरावै। इसफंदसेबाहरजोकोइभांतिकरावै॥ मैंजपूँतुम्हीकोआठपहरचितल्याई। मानुषदेहबारम्बार० ॥२॥ जबनिकसगर्भसूंमोहजालमैंआयो। सबभूल्योकौलकराररामबिसरायो ॥ माबापदेखसुतआनँदकरउछायो। पंडितगुरुदेखदशाबहुतधनपायो ॥ घरबजैनौबतांबटरहीनेगबधाई। मानुषदेह० ॥३॥ बालककुछस्यानोभयोखेलनेजावे। नितनाचफंदमेंरहैसुर्तिनहिंल्यावे ॥ माबापलाड़लीसुरतदेखहरषावे। ब्याहनकोसुंदरयोगकहींबनजावे ॥ तिरियाफंददीनोडारगलेमेंल्याई। मानुषदेह० ॥४॥ बालकपनबीतोतरुणाईगहराई। नहिंभजनभावतेचित्तरहैप्रस्ताई॥ तिरि

यासँगनिसदिनरहैगलेलिपटाई । भयोगथापची सीमांयजवानीछाई ॥ तिरियाफँदमेंहोयअंधकरै चितचाई । मानुषदेह० ॥५॥ नितअतरफुलेलसु गंधअरगजाल्यावे । करउबटनमरदनअंगसुगंधल गावे ॥ पचरंगीचीराबांधछैलबनजावै । परतिरि यातकयेनिजघरनीबिसरावै ॥ धृकयोबनाजिनने रामनामबिसराई । मानुषदेह० ॥६॥ बालकपन ज्वानीबीतबुढ़ापाघेरा । सबछुटेजगतकेस्वादमोह मदफेरा ॥ मुखकामनाकपगहाथथकेयकबेरा । पर वशहोकैपैकालआगयानेरा ॥ दिनरहेबिकलतारा तोनींदनहिंआई । मानुषदेहबारंबार० ॥७॥ देह छीजछीजरहगईहाड़काटट्टी । मुखनयनभरैदिन रैनभईडुरघट्टी ॥ सबघरकेमिलयोकहैंमिलेकबमिट्टी । बेटानाहिंमानतहुकुमकरमकीपट्टी ॥ घरकीनारी भीगारीदेबतराई । मानुषदेह० ॥८॥ तनछीनम लिनमुखबिकलभयोअतिचारी । मरनेसेतौहूडरेल गैजाकारी ॥ यमदूतखड़ेचहुँओरभयंकरभारी । मुस कोसेलीनाबांधमूसलनमारी ॥ लैखींचजीवकोचले जहांयमराई । मानुषदेह० ॥९॥ यमराजकोपकरक हीदुष्टलैआवौ । लोहखैंचगर्भकरदेहउसकोचिप

कावो ॥ मुदगरकीमारोमारजेरवदल्यावो। अति तारभयंकरनरकमाहिंछिटकावो ॥ जीवजंतुनरक केचूंटचूंटतनुखाई। मानुषदेह० ॥१०॥ रहैजीवनरक मेंदुखीकहींनाहिजावे। करणिकेभोगैभोगकहापछ तावै॥ फिरभुगतनरककोचौरासीमेंआवे। देहदेह मेंभकटैजीवकोटिदुखपावे ॥ यहिभांतिदुर्दशाप्रा णीकीहोजाई ॥ मानुषदेह० ॥११॥ हरिविमुखना कीयहदशाहोतदोजखमें। जैलालरटौनितरामना महरदममें ॥ गुरुपुषोत्तमकरयादगर्भप्रणघटमें ॥ कटजायआगमनफंदतेराचटपटमें ॥ हैतारकमंत्रय हीवेदश्रुतिगाई। मानुषदेहबारम्बारसहजनहिंपाई

इति गर्भचिन्तामणि सम्पूर्णम् ॥

॥ आरती संग्रह ॥

॥ अथ गणपतिजीकी आरती ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ गणपतिकीसेवामङ्गलमे वासेवासेसबविघ्नटरैं। तीनलोकतेतीसदेवताद्वार खड़ेसबअरजकरैं ॥ टेर ॥ ऋधिसिधिदक्षिणबाम बिराजैंअरुआनंदसोंचमरकरैं। धूपदीपऔलिया

आरतीभक्तखड्याजैकारकरैं ॥ गणप० ॥१॥ गुड़
केमोदकभोगलगतहैंमूषकबाहनचढ्यासरैं। सौम्य
रूपसेयेगणपतिकोविघ्नभाजज्यादूरपरै ॥ गणप०
॥२॥ भादौंमासअरुशुक्लचतुर्थीदिनदोपारापूरपरैं।
लियोजन्मगणपतिप्रभुजी दुर्गामनआनंदभरैं ॥
गणप० ॥३॥ अद्भुतबाजाबजाइंद्रकादेववधूजहँ
गानकरैं । श्रीशङ्करकेआनंदउपज्योनामसुनेसब
विघ्नटरैं ॥ गणप० ॥४॥ आनविधाताबैठेआसन
इन्द्रअप्सरानिरतकरैं । देखवेदब्रह्माजीजाकोविघ्न
विनाशकनामधरैं ॥ गणप० ॥५॥ एकदंतगजव
दनाविनायकत्रिनयनरूपअनूपधरैं । पगथंभासा
उदरपुष्टहैदेखचंद्रमाहास्यकरैं ॥ गणप० ॥६॥ दै
शरापश्रीचन्द्रदेवकोकलाहीनततकालकरैं। चौदा
लोकमेंफिरैंगणपतीतीनभुवनमेंराज्यकरैं ॥ गण०
॥७॥ उठप्रभातजबकरैध्यान कोईजाकेकारजसर्व
सरैं। पूजाकालेगावआरतीजाकेशिरयशछत्रफिरैं॥
गणप० ॥८॥ गणपतिकीपूजापैलाकरणीकामस
बीनिर्विघ्नसरैं। श्रीपरतापगणपतीजीकीहाथजोड़
करस्तुतिकरैं ॥ गणपतीकीसेवामङ्गलमेवा० ॥९॥

इति श्रीगणपतीजीकीआरतीसंपूर्णम् ॥

॥ अथ लक्ष्मीरमणाकी आरती ॥

जैलक्ष्मीरमणाश्रीजैलक्ष्मीरमणाशरणागतजनशरणेगोवर्द्धनधरणा । टेर ॥ जैजैयमुनातटनिकटितप्रगटितपट्ठवेसा । अटपटगोपीकुचतबपटहरनटभेसा ॥ जै० ॥१॥ जैमुरलीरवतरलीकृतगोपीलीले । तुवभक्तीमेंभवतुब्रजललनामीले ॥ जै० ॥२॥ जैजैभगवन्भगवन्कंसारे । पतितंपतितंकूपयातारेसंसारे ॥ जै० ॥३॥ जैजैगोपीप्रतिपालकबंधोकीमात्रातुमसक्तकृष्णकृपासिंधो जै० ॥४॥ जैजैभक्तजननप्रतिपालकचिरंजीवोजिष्णो । मामुद्धरदीनोद्धरधरणीधरविष्णो ॥ जै० ॥५॥ जैजैकृष्णस्वामीनिजपदरसगामें । कुरुकरुणाकुरुकरुणादाससखारामें ॥ जैलक्ष्मीरमणा० ॥६॥

इति श्रीलक्ष्मीरमणाकीआरतीसंपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीकृष्णजीकी आरती ॥

आरतियुगुलकिशोरकीकीजे राधेतनमनधनन्योछावरकीजे । टेर ॥ रविशशिकोटिवदनकीशोभा । ताहिनिरखिमेरोमनलोभा ॥ आ० ॥१॥ गौरश्यामसुखनिरखतरीजे । प्रभुकोस्वरूपनयनभ

रपीजे ॥ आरति० ॥२॥ कञ्चनथालकपूरकिबाती।
हरिआयेनिर्मलभईछाती ॥ आ० ॥३॥ फूलनकी
सेजफूलनगलमाला। रत्नसिंहासनबैठेनँदलाला॥
आर० ॥४॥ मोरमुकुटकरमुरलीसोहै। नटवरवेषदे
खमनमोहै ॥ आर० ॥५॥ ओढ़ेनीलपीतपट
सारी। कुञ्जबिहारीगिरिवरधारी ॥ आरति० ॥६॥
श्रीपुरुषोत्तमगिरिवरधारी। आरतिकरतसकलब्रज
नारी ॥ आ० ॥७॥ नँदनंदनवृषभानुकिशोरी।
परमानंदस्वामीअविचलजोरी ॥ आरतियुगल
किशोरकीकीजे ॥ तन० ॥८॥

इति श्रीकृष्णचन्द्रजीकी आरतीसम्पूर्ण ॥

॥ अथ त्रिगुणआरतीशिवजीकी ॥

जैशिवओंकाराहरजैशिवओंकारा। ब्रह्मावि
ष्णुसदाशिवअर्द्धंगीधारा ॥ टेर ॥ एकाननचतु
राननपञ्चाननराजै। हंसासनगरुड़ासनवृषभासन
साजै॥ जैशि० ॥१॥ दोयभुजचारचतुर्भुजदशभु
जतेसोहै। तीनोरूपनिरखतात्रिभुवनजनमोहै ॥
जैशि० ॥२॥ अक्षमालावनमालारुण्डमालाधारी।
चन्दनमृगमदचंदाभालेशुभकारी ॥ जैशि० ॥३॥
श्वेताम्बरपीताम्बरबाघंबरअंगे। सनकादिकप्रभुता

दिकभूतादिकसंगे ॥ जैशि० ॥४॥ करमध्येकमं डलचक्रत्रिशूलधरता । जगकर्त्ताजगभर्त्ताजगसं हारकर्त्ता ॥ जैशि० ॥५॥ ब्रह्माविष्णुसदाशिवजा नतअविवेका । प्रणअक्षरनुमध्येयेतीनोएका ॥ जैशिव० ॥६॥ त्रिगुणस्वामीजीकीआरतीजोकोई गावै । भणतशिवानंदस्वामीमनवांछितपावै ॥ जैशिव० ॥७॥

इति त्रिगुणआरतीशिवजीकीसंपूर्णम् ॥

॥ अथ आरतीश्रीदुर्गाजीकी ॥

जैअंबेगौरीमैयाजै मङ्गलमूर्त्ती मया जै आनंद करणी । तुमकोनिशिदिनध्यावतहरब्रह्माशिवरी ॥ टेर ॥ मांगसिंदूरविराजतटीकोमृगमदको । उज्ज्व लसेदोउनैनाचन्द्रवदननीको ॥ जैअंबे० ॥१॥ क नकसमानकलेवररक्तांबरराजै । रक्तपुष्पगलमाला कंठनपरसाजै ॥ जैअंबे० ॥२॥ केहरिवाहनराजत खड्गखप्रधारी । सुरनरमुनिजनसेवततिनकेदुख हारी ॥ जैअंबे० ॥३॥ कानननकुण्डलशोभितनासा ग्रेमोती । कोटिकचन्द्रदिवाकरराजतसमज्योती ॥ जैअंबे० ॥४॥ शुंभनिशुंभविडारेमहिषासुरघाती । धूम्रविलोचननैनानिशिदिनमदमाती ॥ जैअंबे०

॥५॥ चौंसठयोगनीगावतनृत्यकरतभैरूं । बाजत तालमृदङ्गऔरबाजतडमरू ॥ जैअंबे० ॥६॥ भुजा चारअतिशोभितखड्गखप्रधारी । मनवांछितफल पावतसेवतनरनारी ॥ जैअंबे० ॥७॥ कञ्चनथालविराजतअगरकपुरबाती । श्रीमालकेतुमराजतकोटिरतनज्योती ॥ जैअंबे० ॥८॥ दोहा ॥ याअंबेकी आरती, जोकोइनरगावे ॥ भनतशिवानंदस्वामी सुखसंपातिपावे ॥

इति श्रीदुर्गाजीकीआरतीसम्पूर्णम् ॥

अथ आरतीश्रीलक्ष्मीजीकीप्रारम्भः

जैलक्ष्मीमाताजैलक्ष्मीमाता । तुमकूंनिशिदिनसेवतहरविष्णुधाता ॥ टेर ॥ ब्रह्माणीरुद्राणीकमलातुहिहैजगमाता । सूर्यचन्द्रमाध्यावतनारदऋषिगाता ॥ जय० ॥१॥ दुर्गारूपनिरञ्जनिसुखसंपतिदाता । जोकोइतुमकूंध्यावतऋधिसिधिधनपाता ॥ जै० ॥२॥ तूहीहैपातालबसंतीतूहीहैशुभदाता । कर्मप्रभावप्रकाशकजगनिधिसेत्राता ॥ जै० ॥३॥ जिसघरथारोबासोजाहिमेंगुणआता । करनसकैसोइकरलेमननहिंधड़काता ॥ जै० ॥४॥ तुमबिनयज्ञनहोवेवस्त्रनहोयराता । खानपानकोविभ

वतुमविनगुणदाता ॥ जै० ॥५॥ शुभगुणसुंदरयु
क्ताक्षीरनिधिदाता । रत्नचतुर्दशतोकूंकोइभीनहिं
पाता ॥ जै० ॥६॥ याआरतीलक्ष्मीजीकीजोकोइ
नरगाता । उरआनंदअतिउमँगैपापउतरजाता ॥
जै० ॥७॥ स्थिरचरजगतबचावैकर्मप्रेरल्याता ।
रामप्रतापमैयाकीशुभदृष्टीचाता । जयलक्ष्मीमाता
जयलक्ष्मीमाता । तुमकोनिशिदिनसेवतहरवि
ष्णुधाता ॥८॥

इति श्रीलक्ष्मीजीकीआरतीसंपूर्णम् ॥

॥ अथ सत्यनारायणजीकीआरती ॥

जैलक्ष्मीरमणाश्रीलक्ष्मीरमणा।सत्यनारायण
स्वामी जनपातकहरणा॥जै०॥टेर॥ रत्नजड़ितसिं
हासनअद्भुतछबिराजै।नारदकरतानिरांजनघंटा
ध्वनिबाजै ॥ जै० ॥१॥ प्रगटभयेकलिकारणद्विज
कूंदरशदिया॥बूढ़ोब्राह्मणबनकैकंचनमहलाकिया
जै० ॥२॥ दुर्बलभीलकठारोजिनपरकृपाकरी॥चंद्र
चूड़यकराजाजिनकीबिपतिहरी॥ जै०॥३॥ वैश्य
मनोरथपायोश्रद्धातजदीनी ॥ सोफलभोग्योप्रभु
जीफेरस्तुतिकीनी ॥ जै० ॥४॥ भावभक्तिकेकार
णछिनछिनरूपधरया॥श्रद्धाधारणकीनीजिनका

काजसखा॥जै० ॥५॥ ग्वालबालसँगराजाबनमें भक्तिकरी॥मनबांछितफलदीनुदीनदयालुहरी॥ जै० ॥६॥ चढ़तप्रसादसवायोकदलीफलसेवा॥ धूपदीपतुलसीसेराजीसतदेवा॥ जै० ॥७॥ श्रीसत्यनारायणजीकीजोआरतीगावै॥मनतमनसुख संपतिमनबांछितपावै॥ जै० ॥८॥

इतिश्री सत्यनारायणजीकीआरतीसंपूर्ण॥

॥अथ पार्वतीदेवीकीआरती प्रारम्भः॥

जैपार्वतीमाताजैपार्वतीमाता॥ ब्रह्मसनातन देवीशुभफलकीदाता॥टेर॥ आलिकुलपद्मनिवासी निजसेवकत्राता॥ जगजीवनजगदंबाहरिहरगुण गाता॥ जै० ॥१॥ सिंहजबाहनसाजेकुंडलहसाथा॥ देववधूजहँगावतनिरतकरततथा॥ जै० ॥२॥ शतयुगरूपशीलअतिसुंदरनामसतीकहाता॥ हेमाचलघरजनमीसखियनसँगराता॥ जैपा० ॥३॥ शुंभनिशुंभाबिदारेहेमाचलस्थाता॥ सहस्रभुजातनुधरकेचक्रलियाहाथा॥ जैपा० ॥४॥ सृष्टिरूपतुहिजननीशिवसँगरंगराता॥ नंदीभृंगीबीनवहीपस्थामदमाता॥जैपा०॥५॥ देवअरजकरतहमसनाचितकूंलाता॥ गावतदेदेतालीमनमेरंगछा

ता ॥ जैपा० ॥६॥ श्रीपरतापआरतीमैयाकीजो कोईनरगाता ॥ स्वर्गसुखीनितरहतासुखसंपतिपा ता ॥ जैपा० ॥७॥

इति पार्वतीजीकीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ आरतीजानकीनाथकीप्रारंभः ॥

जैजानकीनाथाजैश्रीरघुनाथा ॥ दोउकरजोड़े विनवूँप्रभुमेरीसुनबाता ॥ टेर ॥ तुमरघुनाथहमा रेप्राणपितामाता ॥ तुमहोसजनसंगातीभक्तिमु क्तिदाता ॥ जै० ॥१॥ चौरासीप्रभुफंदछुटावोमेटो यमत्राता ॥ निशिदिनप्रभुमोयराखो अपनेसंग साथा ॥ जै० ॥२॥ सीतारामलक्ष्मणभरतशत्रुहन संगचारौंभैया ॥ जगमगज्योतिविराजतशोभा अतिलहिया ॥ जै० ॥३॥ हनुमतनादबजावतने वरटमकाता ॥ सुबरणथालआरतीकरतकौशल्या माता जै० ॥४॥ कीटमुकुटकरधनुषाबिराजतशोभा अतिभारी ॥ मनीरामदरशनकोआशापलपलब लिहारी ॥ जय० ॥५॥

इति जानकीनाथजीकीआरती संपूर्ण ॥

॥ आरती लक्ष्मणबालाजीकी ॥

जैबोलोसाधोलक्ष्मणवालाकी ॥ चालाकीवो

नँदलालाकी ॥ टेर ॥ दक्षिणदेशसवालखपर्वत ॥ जगमगज्योतिदिवालाकी ॥ जै० ॥१॥ तृपती मेंसीतारामजीविराजैं ॥ चौकीहैहनुमतबालाकी॥ जै० ॥२॥ शेषाचलपरआपाविराजो॥ चौकीवोहनुमतबालाकी॥ जै० ॥३॥ इजांबिजैदोउपौरियाबिराजै ॥ गैरीधूसनगाराकी ॥ ॥४॥ बालाजीकेरथपरकनकसिंहासन ॥ कलँगीबनीहीरालालाकी ॥ जै० ॥५॥ बृहस्पतिबारजरीकोजामो॥ ऊपरमौजदुशालाकी ॥ जै० ॥६॥ शुक्रबारदूधकोन्हावण॥ मौजवनीवोमोहनमालाकी ॥ जै० ॥७॥ देशदेशकायात्रीआवे ॥ मारपड़ेवोमृगछालाकी ॥ जै० ॥८॥ आशानंदगरीबतुम्हारो ॥ पतिराखोवोकंठीमालाकी ॥ जै० ॥९॥ जयबोलोसाधोलक्ष्मणबालाकी ॥ बालाकीवोनंदलालाकी॥ हरिहीरदशरथसुतनंदलालाकी ॥ हरिहरिपरदेशारखवालाकी। हरिहरिघाटबाटरखवालाकी ॥ जै० ॥१०॥

इति लक्ष्मणबालाजीकी आरती सम्पूर्णम्।

॥ अथ आरती श्रीराधावरकी ॥

आरतिराधाबरकी कीजे॥ युगुलस्वरूपनयनभरिपीजे ॥ टेर ॥ रत्नजटितहाटककी आरती सुर

भीघृतसुगंधमनभावति करसरोजसे मातउतारति पुष्पवृष्टिअमृतरसभीजै आरति० ॥ इति ॥

॥ अथ आरतीश्रीरामजीकी प्रारंभः ॥

आरतीकरतजनककरजोरे ॥ बड़ेभाग्यरामजी आयेघरमेरे ॥ टेर ॥ सीतास्वयंवरधनुषचढ़ायो ॥ सबभूपनकोगर्वनवायो । आ० ॥१॥ तोड़ेधनुष कियेदोउटुकड़ा ॥ राघोकुलहर्षरावणहोइशंका ॥ आ० ॥२॥ आइयोसीतासंगसहेली ॥ हरषनिरख वरमालामेली ॥ आ० ॥३॥ गजमोतियनकोचौ कपुराये ॥ राजाजनकघरमंगलगायो ॥ आ० ४ कंचनथालकपूरकीबाती ॥ सुरनरमुनिहरिकीआये बराती ॥ आ० ॥५॥ राजादशरथऔरजनकवैदेही ॥ भरतशत्रुहनपरमसनेही ॥ आ० ॥६॥ धनिधनिरा मलक्ष्मणदोउभाई ॥ धनिदशरथकौशल्यामाई ॥ आ० ॥७॥ मिथिलापुरमेंबजतबधाई ॥ दासमुरार हरिकीआरातिगाई । आ० ॥८॥

इति रामचंद्रजीकी आरती संपूर्ण ॥

॥ अथ शिवजीकीआरती प्रारम्भः ॥

शीशगंगअर्द्धंगपार्वतीसदाबिराजतकैलासी॥ करतगानगंधर्बससुररागरागनीआतिगासी ॥१॥

नंदीभृंगीनृत्यकरतहैंगुणभक्तनाशिवकीदासी ॥१॥
शीतलमंदसुगंधपवनबहैबैठहैंशिवअविनाशी ॥
यत्तरत्तभैरवजहँडोलतबोलतहैबनकेबासी॥ कोय
लशब्दसुनावतसुंदरभँवरकरतहैंगुंजासी ॥२॥कल्प
द्रुमअरुपारिजाततरुलागरहेहैंलत्तासी॥ कामधेनु
कोटिकजहँडोलतकरतीफिरतहैभित्तासी ॥४॥ सूर्य
कांतसमपर्वतशोभित चंद्रकांतभवमीवासी॥ छओ
ऋतुनितफलतरहतहैंपुष्पचढ़तहैंबर्षासी ॥५॥ देव
मुनिजनकीभीड़पड़तहैं निगमरहतजोनितगासी
॥ ब्रह्माबिष्णुजाकोध्यानधरतहैंकछु शिवहमको
फरमासी ॥६॥ ऋद्धिसिद्धिकेदाताशंकरसदाअनं
दितसुखरासी ॥ जिनकोसुमिरनसेवाकरताटूटजा
ययमकीफांसी ॥७॥ त्रिशूलधरजीकोध्याननिरंत
रमनलगायकरजोगासी ॥ दूरकरोबिपताशिवतनु
कीजन्मजन्मशिवपदपासी ॥८॥ कैलासीकाशी
केबासीअबिनाशीमेरीसुधलीज्यो ॥ सेवकजान
सदाचरणनअपनोजानदरशदीज्यो ॥९॥ तुमतो
प्रभुजीसदासयानेअवगुणमेरासबदाकियो ॥ सब
अपराध क्षमाकर शंकरकिंकरकी बिनतीसुनियो।
इति शिवजीकी आरती संपूर्णम् ॥

॥ अथ आरती शिवजीकी ॥

जैजैहेशिवपरंपराक्रमओंकारेश्वरतुवशरणं॥नमामिशंकरभवानिशंकरहरहरशंकरतुवशरणं॥टेर। दशभुजमंडन पंचबदनाशिवत्रिनयनशोभितशिव सुखदा ॥ जटाजूटशिरमुकुटबिराजैश्रवणेकुंडलअतिरमणा ॥ जैजैहे० ॥१॥ ललाटचमकत रजनीनायकपन्नगभूषणगौरीशा ॥ त्रिशूलअंकुशगणपतिशोभाडीमडीमबाजतध्वनिमधुरा ॥ जैजैहे० २ भस्मविलेपनसर्वांगेशिवनंदीबाहनअतिरमणा ॥ वामांगेगिरिजाहैंबिराजतघंटानादिकधुनिमधुरा॥ जैजै० ॥३॥ गजचर्मांबरवाघंबरहरकपालमालागंगेशा ॥पंचबदनपरगणपतिशोभापृष्ठेगिरिपतिज्वालेशा ॥ जैजैहे० ॥४॥ सिद्धेश्वरममलेश्वरशंकरकपिलेश्वरश्रीकोटेशा ॥ कपिलासंगमनिर्मलजलहैकोटितीरथेभयहरणा ॥ जैजैहे० ॥५॥ नर्वदकावेरीजलसंगममध्येशोभितागिरीशिखरा ॥ इंद्रादिकपतिसुरपतिसेवितरंभानादिकध्वनिमधुरा जै०॥६॥ मंगलमूर्तिप्रणवाष्टक शिवअद्भुतशोभामृडभवनं ॥ सनकादिकमुनिकरतेस्तोत्रंमनवांछिताशिवभयहरणं ॥ जैजैहे० ॥७॥ प्रणवाष्टकपदध्यायज

नेश्वररचयतिविमलपदवाष्टं ॥ तुमरिकृपात्रिगुणा
त्मा शिवजीपतितपावनभयहरणं ॥ जैजैहे०॥८॥

॥ अथ आरतीशिवजीकी ॥

दर्शनदेवोसदाशिवशंभूभक्तबत्सलतेरानामह
वे ॥ मस्तकतेरेचन्द्रविराजैशीशमध्येगंगहवे ॥टेर॥
नाथहाथलियेडमरुबजावेभुजंगहृदयपरसाजहवे ॥
तीनकोटिसवालखहजारेगणतेरेसन्मुखनाचहवे ॥
दर्श० ॥१॥ हाथत्रिशूललियाभोलेशंभूवामांगग
वरीसाजहवे ॥ भस्मरमावतअंगतूसारेगलेरुंडमा
लाराजहवे ॥ दर्श० ॥२॥ कोउत्रिबंकेकोउअंगल
बेकाहुकेवसनउघारेहवे ॥ काहुकेकेशबनेअतिपी
रेरक्तरंगकोउकालेहवे ॥ दर्शन० ॥३॥ आसनते
राकैलासबिराजतलहरींगंगागाजहवे ॥ भांगधतू
रोसदारहेखातातलवाघंबरसाजहवे ॥ दर्शन० ४
नारदइंद्रदेवसबदानवआरतीतेरीगावहवे॥असीहि
मानुषगावसुनेजेमनवांछितफलपावहवे ॥ दर्शन०
॥५॥ रूपकहैकरजोरसदाशिवमेरेमनोरथकीजेहवे
॥ गुरुचरणोंमेंप्रीतिरहोनितबचनसफलमेराकीजे
हवे ॥६॥ दर्शनदेवोस० ॥

इति शिवारती संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती श्रीदुर्गाजीकी ॥

॥ टेर ॥ मंगलकीसेवासुनमेरीदेवाहाथजोड़ते रेद्वारखड़े ॥ पानसुपारीध्वजाखोपरालेसंतनकाभं डारभरे ॥ संतनप्रतिपालीसदाकुस्यालीजैकाली कल्याणकरे ॥ टेर ॥ बुद्धिविधातातूजगमातामेरा कारजसिद्धकरे ॥ चरणकमलकालियाआसराश रणतुम्हारीआनपरे ॥ जबजबभीड़पड़ेभक्तनपरत बतबआयसहायकरे ॥ संतन० ॥१॥ बारबारतैंसब जगमोह्योतरुणीरूपअनूपधरे ॥ माताहोकरपुत्र खिलावेकहींभारज्याभोगकरे ॥ संतन० ॥२॥ संत नसुखदाईसदासहाईसंतखड़ेजयकारकरे ॥ ब्रह्मा बिष्णुमहेशसहस्त्रफणालियाभेटतेरेद्वारखड़े ॥ अट लसिंहासनबैठीमाताशिरसोनेकाछत्राफिरे ॥ संत० ॥३॥ बारशनिश्चरकुंकुमवरणोजबलुंकड़परहुक्कम करे ॥ खड्गखप्पतिरशूलहाथलियारक्तबीजकूभस्म करे ॥ शुंभनिशुंभक्षणमेंमारामहिषासुरकूंपकड़ दला ॥ संतन० ॥४॥ आदितवारआदकोबीराज नअपनेकोकष्टहरे ॥ कोपहोयकरदानोमारेचंडसुं डसबचूरकरे ॥ जबतुमदेखोदयारूपहोयपलमेंसंक टदूरकरे ॥ संतन० ॥५॥ सोमस्वभावधस्योमेरीमा

ताजनकीअरजकबूलकरे ॥ सिंहपीठपरचढ़ीभवा
नीअटलभवनमेंराज्यकरे ॥ दर्शनपावेंमंगलगावें
सिद्धसाधतेरेभेंटधरे ॥ संतन० ॥६॥ ब्रह्मावेदपढ़ेंतेरे
द्वारेशिवशंकरजीध्यानधरें ॥ इंद्रकृष्णतेरीकरेंआर
तीचमरकुबेरढुलायरहें ॥ जयजननीजयमातुभवा
नीअटलभवनमेंराज्यकरे ॥ संतन० ॥७॥

इति श्रीदुर्गाजीकी आरती संपूर्ण ॥

॥ अथपुनःआरतीदुर्गाजीकीप्रारंभ ॥

सुनमेरीदेवीपर्वतवासिनितेरापारनपाया ॥टेर॥
पानसुपारीध्वजानारियललेतेरीभेंटचढ़ाया ॥ सु०
॥१॥ सुवाचोलातेरेअंगबिराजै ॥ केसरितिलकल
गाया ॥ सुन० ॥२॥ ब्रह्मावेदपढ़ेतेरेद्वारे ॥ शंकर
ध्यानलगाया ॥ सुन० ॥३॥ नंगे नंगेपगतेरेअ
कबरआया ॥ सोनेकाछत्रचढ़ाया ॥ सुन० ॥४॥
ऊँचऊँचपर्वतबण्योदिवालो ॥ नीचेशहरवसाया॥
सुन० ॥५॥ कलियुगद्वापरत्रेतामध्ये ॥ कलियुग
राजसवाया ॥ सुन० ॥६॥ धूपदीपनैवेद्यआरती॥
मोहनभोगलगाया ॥ सुन० ॥७॥ धानूभगतमै
यातेरागुणगावे ॥ मनवांछितफलपाया ॥ सुन०

इतिश्री आरतीदुर्गाजीकी संपूर्ण ॥

॥ अथ बजरंगबालाकीआरतीप्रारंभः ॥

जाकेबलसेगिरिवरकंपै ॥ देवपिशाचनिकटन हिंझंपै ॥ आरतीकीजेहनुमानललाकी ॥ दुष्टद लनरघुनाथकलाकी ॥ टेर ॥ लंकासेकोटसमुद्रसी खाई ॥ जातपवनसुतबारनलाई ॥ आर० ॥१॥ देबीड़ारघुनाथपठायो ॥ लंकप्रजारासियासुधिल्या ये ॥ आर० ॥२॥ जगमगज्योतिअवधपुरराजा॥ घंटातालपखावजबाजा ॥ आर० ॥३॥ शक्तीबा णलगोलक्ष्मणको ॥ आनसजीवनलषणजिवा ये ॥ आर० ॥४॥ बैठपतालतोड़यमकातर ॥ अहि रावणकीभुजाउखाड़े ॥ आर० ॥५॥ आरतीकीजे जैसीतैसी ॥ ध्रुवप्रह्लादविभीषणजैसी ॥ आर० ॥६॥ सुरनरमुनिजनआरतिउतारे ॥ जैजैजैकपि राजउचारे ॥ आर० ॥७॥ कंचनथालकपूरसुहाई॥ आरतीकरतअंजनीमाई ॥ आर० ॥८॥ बांईभुजा सेअसुरसंहारे ॥ दहनीभुजासुरसंतउधारे ॥ आर० ॥९॥ लंकप्रजारअसुरसबमारे ॥ राजारामजीकेका रजसारे ॥ आर० ॥१०॥ अंजनीपुत्रमहाबलदा यक ॥ देवसंतकेसदासहायक ॥ आर० ॥११॥ लंकबिध्वंसनासियारघुराई ॥ तुलसिदासकपिआ

रतिगाई ॥ आर० ॥१२॥ जोहनुमानजीकीआर
तीगावै ॥ बसबैकुंठबहुरिनहिंआवै ॥१३॥

इति आरती हनुमानजीकी समाप्त ॥

॥ अथ आरती जगन्नाथजीकी ॥

॥ टेर ॥ आरतीश्रीजगन्नाथमंगलाकरी ॥ पर
शतचरणारबिंदआपदाहरी ॥ निरखतमुखारबिंदआ
पदाहरी । कंचनसनधूपध्यानज्योतिजगमगी ॥
अग्निकुंडलघिरतपावपावसाथरी । आर० ॥१॥
इंद्रदमनद्वारे ठाढ़ेरोहिणीखड़ी । मार्कंडेश्वेतगंग
आनकभरी ॥ आर० ॥२॥ गरुड़खंबसिंहपौरया
त्राजुड़ी । यात्राकीभीड़बहुतबेतकीछड़ी ॥ आर०
॥३॥ सुरनरमुनिद्वारेठाढ़ेब्रह्मावेदउच्चरी । धन्यध
न्यसूरश्यामआजकीघड़ी ॥ आर० ॥४॥ इति ॥

॥ अथ आरती शिवजीकी ॥

कैलासीकाशीकेबासीअबिनाशीमेरी सुधली
जे । सेवकशरणसदाचरणनकोआपनोजानकृपा
कीजे ॥ अभयदानदीजेप्रभुमोरेसकलसृष्टिकेहि
तकारी । भोलेनाथतुमभक्तनिरंजनभवभंजनभव
शुभकारी ॥ दीनदयालुकृपालुकालारिपु अलख

निरंजनशिवयोगी। मंगलरूपअनूपछबीलेअखि
लभुवनकेतुमभोगी॥ बांवोअंगरंगरसभीनोउमा
बदनकीछबिन्यारी। भोलेनाथ०॥१॥असुरनिकंद
नसबदुखभंजनवेदबखानेंजगजाने। रुंडमालगल
व्यालभालशशिनीलकंठलियामनमाने। गंगाधर
त्रिशूलधरविषधरबाघंबरधरगिरधारी। भोले०॥२॥
योभवसागरअतिअगाधहैपारउतरकैसेसूजै॥ या
मेंग्राहमगरबहुकच्छपयोमारगकैसेसूजे। नांवतु
म्हारोनौकानिर्मलतुमकेवटशिवअधिकारी। भोले
ना०॥३॥ मैंजानूंतुमानिपटसयानेअवगुणमेरेसब
ढांकियो। सबअपराधछमाकरशंकरकिंकरकीबि
नतीसुनियो॥ तुमतोजगकेकल्पतरूहोतुमहोप्रा
णीसंसारी। भोलेना०॥४॥ कामक्रोधयोमहाअ
परबलइनसेमेरोबशनाहीं। लोभमोहयोसंगनहिं
छांड़ेआनदेतनाहिंतुमताईं॥ क्षुधातृषानितलगी
रहतहैताऊपरतृष्णाभारी। भोलेना०॥५॥ तुम
हींशिवजीकर्त्ताहर्त्तातुमहींयुगकेरखवारे। तुमहीं
गगनमगनपुनिपृथिवीपर्वतपुत्रीकेप्यारे॥ तुमहीं
पवनहुताशनाशिवजी तुमहींदिनकरशशिहारे।
भोलेना०॥६॥पशुपतिअजरअमरअमरेश्वर योगे

श्वरशिवगोश्वामी । वृषभारूढ़गूढ़गुरुगिरिपति गिरिजावल्लभनिष्कामी ॥ शोभासागररूपउजागरगावतहैंसबनरनारी । भोलेना० ॥७॥ महादेव देवनकेअधिपतिफणिपतिभूषणअतिसाजे । दीप्त लिलाट लालदोउलोचनजिनकेउरतादुखभाजै ॥ परमपुनीतपुनीत पुरातनमहिमा त्रिभुवनाविस्तारी ॥ भोलेना० ॥ ८ ॥ ब्रह्माविष्णुमहेशशेषमुनि नारदयादकरतसेवा ॥ जिनकीइच्छापूरणकीनी नाथसनातनहरदेवा ॥ भक्तिमुक्तिकेदाताशंकरस दानिरंतरसुखराशी ॥ भोलेना० ॥ ९ ॥ महिमाइष्टमहेश्वरजीकीसिखसुनेजेनितगावें ॥ अष्टसिद्धि नौनिधिसुखसंपतिस्वामिभक्तिमुक्तिपावें ॥ श्री अहिभूषण प्रसन्न होयकर कृपाकरो शिवत्रिपुरारी ॥ भोलेनाथ० ॥ १० ॥

॥ अथ आरतीबजरंगबालाकी ॥

आरती कीजै हनुमानजी ललाकी । दुष्ट दलन रघुनाथ कलाकी ॥ टेक ॥ जाके बलसे गिरिवर कांपे । रोग दोष जाके निकट न झांके १ अञ्जनी पुत्र महाबलदाई । संतनके प्रभु सदा

सहाई ॥२॥ दे बीरा रघुनाथ पठाये। लङ्का जारि सिया सुधि लाये ॥३॥ लङ्का ऐसे कोट समुद्र ऐसी खाई। जात पवनसुत बार न लाई ॥४॥ लङ्का जारि असुर सब मारे। सीता रामजीके काजसँवारे ॥५॥ लक्ष्मण मुरछिपरे धरणीमें। आनि सजीवन प्राण उबारे ॥६॥ पैठि पताल तोरि यमकातर। अहिरावनके भुजाउखारे ॥७॥ बायें भुजा सब असुर संहारे। दहिने भुजा सब संतउबारे ॥८॥ सुर नर मुनि जन आरति उतारें। जै जै जै हनुमानजी उचारें ॥९॥ कञ्चनथार कपूर की बाती। आरति करत अञ्जनीमाई ॥१०॥ जो हनुमानजीकी आरति गावें। बसि बैकुंठ अमर पद पावें ॥११॥ लङ्कविध्वंस किये रघुराई। तुलसीदास स्वामी आरतिगाई ॥१२॥

॥ अथ रामचंद्रजीकी आरती ॥

आरती किजै राजा रामचन्द्रजीकी। हरी हरी दुष्टदलन सीतापतिजीकी ॥ टेक ॥ पहिली आरति पुष्पकीमाला कालीनागनाथ लाये गोपाला १ दुसरी आरती देवकिनन्दन। भक्तउधारनकंस

निकन्दन ॥२॥ तिसरी आरति त्रिभुवनमोहै। रत्नसिंहासन सीतारामजीको सोहै ॥३॥ चौथी आरति चहुं युग पूजा। देवनिरञ्जन स्वामी और न दूजा ॥४॥ पञ्चमी आरति रामजीको भावै। रामजीको यश नामदेवजी गावै ॥५॥

॥ पुनः आरती श्रीरामचन्द्रजीकी ॥

सखीआरतीकरीरसप्रेमभरी। सिया रघुवरजी को भृङ्गारकरी ॥ टेक ॥ मणिमय थार साखिन कर राजै बाती रबि शशि द्युति निदरी ॥१॥ बाजतहैं भेरी निसान दुंदुभी शङ्ख झांझ करताल घरी ॥२॥ नाचहिं गानकरैं सखि थेइ थेइ सुमन लाल मणि होति झरी ॥३॥ रामचरण सिया राम रूप लखि आनँद उर रससिंधु भरी ॥४॥

॥ आरती श्रीव्यङ्कटेशजीकी ॥

श्रीमच्छेषशैलवासं। नीराजयेश्रीनिवासम् ॥ त्रातःस्वपदपद्मदासं। नीरदभव्यादिव्यभासं ॥ ॥ नी० ॥ बिभ्राणंशतरविप्रतिभटं ॥ हरिखचित चामीकरमुकुटं ॥ भृंगप्रभकुटिलालकजालं ॥ केशरमृगमदातिलकितभालं ॥ भ्रूविभ्रमकृतकार्मुक

जयनं ॥ इंदीवरदलविशालनयनं ॥ तिलकुसुम प्रतिमोत्तमनासं ॥ बिंबविडंबकृताधरभासं ॥ स्निग्धामलतलगंडमंडलं ॥ कर्णयुगार्पितमकरकुंडलं॥ शारदचंद्रमनोहरवदनं । कुंदसुंदरप्रभाग्ररदनं ॥ स्वजनानुग्रहशुचिमंदहासं । नीराजयेश्रीनिवासं॥ ॥ १ ॥ कंबुकंठमतिपीनस्कंधं । दृग्गोचरजत्रुस्थलबंधं ॥ चंदनचर्चितविशालबाहुं । अभयवरारिदरायुधवाहं ॥ धृतकनकांगतकटकतोडरं ॥ विदलितहरिकणप्रभनखरं ॥ श्रीवत्सश्रीहृदयकपाटं । बिद्युतिपंजरचित्रितशाटं ॥ उरःपीठलुठदुरुतरहारं ॥ त्रिवलिबंधुरितलुदिलजठरं ॥ पारिजातनवसुमनोमालं । नाभिजातचतुराननबालं ॥ कटितटसुघटितपीतपटन्यासं ॥ नीराजये० ॥ २ ॥ सौरभलुभ्यद्भ्रमरकदंबं । मणिशृंखलपाररंभिनितंबं ॥ परमरुचिरपीवरोरुबंधं । रम्यजानुमतिपेशलजंघं ॥ वलयकलितघनकनकतोडरं । मंजुमंजुसिंजाननूपुरं ॥ मृदुलपार्ष्णिसरजांगुलितरणं । दुस्तरतरभवसागरतरणं ॥ विलसन्नखमणिपूर्णचंद्रिकं । निरस्तवनितानादितंद्रिकं ॥ श्रीभूदेवीचमरवीजितं । नारद शुक सनकादि पूजितम् पंत विठ्ठल

त्रास गण ग्रासं । नीरा जये श्रीनिवासं ॥ ३ ॥

॥ इति समाप्त ॥

॥ अथरघुनाथजीकी आरती ॥

आजबनीछबिभारीश्रीराघोजीकी ॥ टेक ॥ सहितजानकीरत्नसिंहासनराजतअवधबिहारी ॥१॥ रविशशिकोटि देखिछबिछा जै तिलकपटलद्युतिकारी ॥ बदन मयंक तापत्रबमोचन मंदहास अतिप्यारी ॥ २ ॥ कटिमुकुट मकराकृत कुंडल और बनमाल सोहाई ॥ बाँहाबिशालबिभूषण सुंदरकर गहि सारँगधारी ॥ ३ ॥ कटिपर पीत बसनकी शोभा मोहत मदनानिहारी ॥ मुनिजनचरणसरोरुहसेवतध्यानधरतत्रिपुरारी ॥ ४ ॥ चतुरसखीमिलिकरतआरती साजकंचनकीथारी ॥ रामसेवकजयजयध्वनिउच्चरतगावतपुरनरनारी ॥ ५ ॥

॥ अथरागगौरीसंग्रह ॥

॥ रामजीकीगौरी ॥

जानकीजीवनकीबालिजैहौं ॥ टेक ॥ चितकहै रामसियापदपरिहरिअबनकहूंचालिजैहों ॥ १ ॥

उपजीउरप्रतीति प्रतिसपनेहारिसुखहरिपद बिमुख न ह्वैहों ॥ मनसमेत यह तनकेबासी यहीसिखा वनदैहों ॥२॥ श्रवणन और कथा नहिं सुनिहों रसना औरन गैहों। रोकिहौंनयनाविलोकतऔर हि शीश ईश पद नैहों ॥३॥ नातो नेह रामसे करि सब नातो नेह निबैहों। यह छरभारताहि को तुलसी जगतको दास कहैहों ॥४॥ इति ॥

॥ अथ श्रीराघोजीकीगौरी ॥

आजबनी छबि भारी श्रीराघोजीकी ॥टेर॥ क्रीटमुकुट मकराकृतकुंडल धनुषबाण करधारी॥१॥ सुंदर भाल तिलककी शोभा अलकें घुंघुरवारी॥ नयनकमल बदनकी शोभा सयननमेंरसन्यारी॥ ॥२॥ बायें अंग जानकीजी सोहे हनुमत आज्ञा कारी। गौर श्याम सुंदर तनुसोहै चंद्रबदन उजि यारी ॥३॥ रत्नजटित आभूषण सोहैं मोतियनकी छबिन्यारी। मातुकौशला करैआरती तुलसिदा सबलिहारी ॥४॥

॥ अथ गौरी प्रारंभः ॥

अयोध्या राजत भूमिकनककी ॥ टेक ॥ रंग

भूमिराजतरघुनंदन संगलिये सुता जनककी । रविशशिकोटि उदित हम देखे जोड़ी बनीहै जनककी ॥१॥ रघुबर लक्ष्मण भरत शत्रुहन सन्मुख हैं हनुमानबलीकी । मातुकौशला करत आरती जै जै श्रीरघुबरकी ॥२॥ ठुमकि ठुमकि महलमें बिहरत झुमक झुमक पग नूपुरकी । कृपानिवाज कहांलगि बरणौं महिमा अवध नगरकी ३

॥ अथ राम गौरी प्रारंभः ॥

बोलत मधुरी बानी रघुबर बो० ॥ टेक ॥ कीटमुकुट मकराकृत कुंडल छवि नहिं जात बखानी । हम सरयू जल भरन जात रही बीच रामरस सानी ॥१॥ बाण कमानु भ्रुकुटी के लोचन मारत ताकि ताकि तानी । घूंघुट मेरो छूटगयो है लाज छोड़ि मुसकानी ॥२॥ अमर नारि नर मिले अवधके येसब फिरत हैं सानी । लोग कुटुंब अब मोहिं नहिं भावे दशरथसुत रससानी ॥३॥ रघुबर लक्ष्मण भरत शत्रुहन दशरथ राजदुलारी । राम सखीकौशलपुर जीवन रघुबर हाथबिकानी ॥४॥

इति आरती संग्रह संपूर्ण ॥

॥ अथ रुद्राष्टक प्रारंभः ॥

छंदभुजंगप्रयात । नमामीशमीशाननिर्वाण रूपं ॥ बिभुंव्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपम् । निजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहं॥ चिदाकारमाकाशवासंभजेहम् १॥ निराकारमोंकारमूलंतुरीयम् । गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशं॥ करालंमहाकालकालंकृपालुम्। गुणागारसंसारपारंनतोहम् ॥२॥ तुषाराद्रिसंकाशगौरंगभीरम्। मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरम् ॥ स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगं । लसद्भालबालेंदु कंठेभुजंगम् ॥३॥ चलत्कुंडलंभ्रूसुनेत्रंबिशालम् । प्रसन्नाननंनीलकंठंदयालुम् ॥ मृगाधीशचर्माम्बरंमुंडमालम् । प्रियंशंकरंसर्वनाथंभजामि ॥४॥ प्रचंडंप्रकृष्टंप्रगल्भंपरेशम्। अखंडंअजंभानुकोटिप्रकाशम् ॥ त्रिशूलारिनिर्मूलनंशूलपाणिं । भजेहंभवानीपतिंभावगम्यम् ॥५॥ कलातीतकल्याणकल्पांतकारिम्। सदासज्जनानंददातापुरारिम्॥ चिदानंदसंदोहमोहापहारिम्। प्रसीदप्रसीदप्रभोमन्मथारिम् ॥६॥ नयावद्रुमानाथपादारबिंदम् । भजंतीहलोकेपरंवानराणाम् ॥ नतावत्सुखंशांतिसंतापनाशम् । प्रसीदप्रभोसर्वभूताधिवासम् ॥७॥ न

जानामियोगंजपंनैवपूजाम् । नतोऽहंसदासर्वदा शंभुतुभ्यम् ॥ जराजन्मदुःखौघतात्रप्यमानम् । प्रभोपाहिआपन्नमामीशशंभो ॥८॥ श्लोक ॥ रुद्राष्टकमिदंप्रोक्तं विप्रेणहरतुष्टये । येपठंतिनराभक्त्या तेषांशंभुःप्रसीदति ॥९॥

इति रुद्राष्टकं संपूर्णम् ॥

॥ पेटरत्न ॥

तोले पांच सोंठ अजमोदा तोला तीन मँगावै । अजवायन दो तोला लेके तोलानमक रलावै ॥ तोला चार पीपली कूटै हरड़ें पन्द्रा तोला। कूटछान चूर्ण जो फांकै कटै पेटका गोला ॥ उदरामय गुड गुड़ अरु पीड़ा बिड़को तुर्त घटावै । कृष्ण बिहारी नित जो खावै निर्मलकायापावै॥

॥ देवीस्तुति ॥

जै जै दयालु देवी माता जै जै दयालु देवी माता । अष्टसिद्धि नवनिधि की दाता अखिल लोक बिख्याता ॥ जग भरनीमन आनँद करनी हरनी बिपति बरूथानी । मध्य भूमि शुचिठाम बदरकाग्राम बिलासिनि महारानी ॥ उत्तरदिशा

बसै बहु बस्ती अंत अनंदी हैं माता । अष्टसि
द्धि नवनिधिकी दाता अखिल लोक बिख्याता
॥१॥ पासहि स्वच्छ सरोवर शोभित घनी बाग
छबि आली है । बनाशिवाला महादेवका रक्षा
आप सम्हाली है ॥ पूरवपुर निर्म्मल बस्ती है
कान्यकुब्ज बालाके शुक्ल । पूजाकर ते माता तु
मारी तेहते पूजत है सब मुल्क ॥ जगजननी
श्रीमातुकालिकाराजतपुरपूरबख्याता। अष्टसिद्धि
नवनिधिकी दाता अखिल लोक बिख्याता॥२॥
जगतबंद आनंदकंद रघुनंद धाम अति स्वच्छ
बना । पूजत हित नर नारि सुचित चित लहत
मनोरथ चित्त ठना ॥ कृष्णचंद्र आनंदकंद बल
भद्रसुभद्रा ईश्वर रूप । परम पवित्र पुरतन प्रति
माश्याम अङ्ग नहिं जगतरूप ॥ बंशीधरके दर्श
न करते करते सुख है अधिकाता । अष्टसिद्धि
नवनिधिके दाता अखिल लोक बिख्याता ॥३॥
जन्हुसुता गंगाकी धारा बहती दक्षिण द्वारे है
। भक्तिवंतकी कौन कहै अधमोंको भी उद्धारे है॥
बिमल तड़ाग बाग सेवाला हैं हरदेव देव प्रति
पाल । कृष्ण बिहारी शुक्लपर किरपा करते आप

दयाल ॥ पश्चिम सुदरशानी जग जननी इक लेही करती त्राता। अष्टसिद्धि नवनिद्धिकी दाता अखिल लोक विख्याता ॥४॥ ॥ इति ॥

॥ होलीलीला ॥

डगर मोरीछांड़ो श्याम विंध जाओगे नयन नमें। भूल जाओगे सब चतुराई लाला मारूंगी सैननमें ॥ जो तेरे मनमें होरी खेलनकी तो ले चल कुंजन में। चोवा चंदन और अर्गजा छिर कूंगीफागुन में ॥ चन्द्रसखी भज बालकृष्णछवि लागी है तन मनमें ॥

॥ हिन्दोरालीला ॥

सघन बन झूलैं दोउ सुकुमार ॥ टेक ॥ हिय हरषत छवि निरख परस्पर छिन छिन बाढ़त प्यार। कबहुँ मुदित मन तानलेत मिल होत सखी बलि हार ॥ नारायण द्रुम बेलि सुहावनि हरो कियौ शृंगार ॥ ॥ इति ॥

॥ विहार लावनी ॥

आधिरातके विषे कृष्ण राधेके भवनको जाते भये। करसरोजसे द्वारके पट कपाट खटकाते भये॥

टेर ॥ चौंक उठी वृषभानुनंदिनी कौन मेरे द्वारे आया। नाम बतावो आयकर मुझकूं नींदसे जगाया ॥ परस्थानमें धसे आन तुम जरा न मन धासत लाया। फिरो दिवाना दिवानाहो किसी का भरमाया ॥ मधुर वचन सुनकै राधेके श्रीकृष्ण समझाते भये। कर० ॥१॥ माधो नाम है मेरा जगतमें तेरे पास आयाहूं अली ॥ कहैराधिका शरदमें ऋतुबसंत नहिं लाग भली। ऋतु वसंतनहिं जानप्रिया में चक्रीहूँ तू जान अली॥ चक्रीहोतो यहाँसे सरको कुलाल की तुम पूछो गली। धरणीधर कहते हैं मुझकूं बेद नीतिमें गातेभये ॥ कर० ॥२॥ जानगई तुम शेषनागहो सहस्र शीशतनके कारा। शेषनहीं मैं प्रियाहूं सर्पनको मारनहारा ॥ शेषनहीं तो गरुड़ होयगा विनताकी करो प्रतिपाला। प्रियाहरीहूँ मेरा है सारे जगतमें उजियाला ॥ सूर्य होय कर स्वर्ग छांड़कै मेरे भवन क्यूं आते भये ॥ कर० ॥३॥ कृष्णकृष्ण श्रीकृष्णचन्द्रने तीन बेर उच्चार किया उठि राधिका दियेपट खोल गलेका हार किया॥ मूलचन्द्र पर कृपा करोरी जिसने ये बिहार किया।

भक्त जनूंका हरिने छिनमें बेड़ा पार किया ॥
तुर्रकि सुनके जवाब कलँगीके होस उड़जाते
भये ॥ कर० ॥४॥

इति विहार लावनी समाप्त ॥

॥ अथ मणिहारिनलीला–लावनी ॥

श्रीकृष्णनंदजीकेनंदनधरावेषमनिहारनका ।
आपहरीजहँगयेतहांपरबहुतझुंडब्रजनारिनका।टेर
पहरजनानावेशहरीनेरचिरचिकैशृङ्गारकरो । हँसु
लीऔरहमेलगलेबिचझलझलझलकतपनाहरो॥
ठटयुजरातीसजाघांघरा ओढ़नदक्षिणीचीरखरो ।
रविशशिकोटिबदनकीशोभाऐसाहरिनेरूपधरो ॥
कुचाबनायकैआटीचोली औरकुताफुलक्यारनका
॥ आप० ॥१॥ श्रीकृष्णजीफिरैंपूछतेकोइचुरिया
पहनोगेखरी । कालीपीलीजरदजङ्गालीसुरखसो
सन्याऔरहरी॥एकसखीयूंवड़करबोलीअरीआव
तूमणिहारी । चुड़ियमोतीचूरकड़ाबंदल्याईतोप
हनाजारी ॥ मुखमांगेलेवोदामहमेंकूंमुठबतारी
मोलमारिनका।आप० ॥२॥ श्रीकृष्णपहरानेला
गेपहरैराधासहेलनी । करछूतेतनुमाराछिपैनाहिंल
खगइराधापहेलनी ॥ राधामुखमुसकायकहैफेरपू

छोरीसखियांअकेलनी । फिरीजाँयचौफेरकृष्णके जितनीथींसबनवेलनी ॥ हरलीयाइनमानकिया अपमानसखासबसारनका । आप० ॥३॥ अनेक छलबलकियेकृष्णनेसबसखियांछलनेखातर। कहाँ लगकोईसिफतकरैंगेतुकन्नागीरिकहतेचातुर ॥ लछमनब्राह्मणधर्मीकहतेबैठोसायरमतहोयआतर । जसूलालकेचङ्गकेऊपरनिरतकरैंपरपायातुर ॥ कहै गुणीजैरामभारतीचङ्गपरतुरीतारनका ॥ आप०॥४

इति फणिहारिनलीलासमाप्तम् ॥

॥ पावस बिरहिनी ॥

कबित्त–आयो पुनि पावस अमावस निशा भो दिनछिन बिन प्यारे केहि भांतिन बितायहौं। किरच करेजाहूकी कोकिलै करनलागी मोर शोर सुनि किमि चित्त ठहराय हौं ॥ बेदरदी बैरी बद बदरा बड़ेई बुरे नितप्रति तासों प्राण कैसेकै बचा य हौं। परत न एको पल विन कृष्णप्यारी कल हाय काके गरे लागि काम तपनि मिटाय हौं १

॥ विरहिनी विलाप ॥

कैधौं वहि देशमें घुमड़िघन घेरे नाहिं कैधौं

वहि देश दामिनीहू नाहिंदमकै । कैधौ वहिदेश में न बरसत वारिदहूँ रामपरताप कैधौं झिल्लिहु न झमकैं ॥ कैधौं वहि देशमें न बहति बयारकहूं मन्द मन्द शीतल सुगन्ध भरी रमकै । कैधौं वहि देशमें पपीहराहूँ पीउ पीउटेर दैदै पीयको चितावैं नाँ उधमकै ॥१॥ ॥ इति ॥

॥ पशुबुद्धि ॥

॥ जयकरीछन्द ॥

सिंह, बकुल, कुक्कट अरु काग । श्वान, गर्दभी बुद्धि विभाग ॥ क्रमशः गुण इनके लैलेहु । गुणग्राही अवगुण तजिदेहु ॥ यकगुणहै उत्तम वनराज । सब विधि सारत आपन काज ॥ प्रबल शत्रुपर मारत धावा । करन योगपर विलँब न लावा ॥ बकुला में उत्तम गुण एक । सीखहु सज्जन तजि अविवेक ॥ सब इन्द्रिनकर संयम करो । देशकालबल हृदय धरो ॥ बकुल समान काज को साधो । मीन मिलनहित चुप्पी बाँधो॥ कुक्कट चारिबात शिरताज।उचित समय जागत रणगाज ॥ बन्धुन भाग देत सुख पावै । आप आक्रमण करि करि खावै ॥ कागासे सीखहु गुण

पञ्च। छिपकर मैथुन संग्रह रञ्च ॥ सावधान निशि वासर रहै। पर विश्वास त्तणक नहिं चहै ॥ कूकुर षटगुणमाहि प्रधान। स्वामिभक्त शूरता निदान ॥ भोजन शक्ति अधिक तनु माहिं। स्वल्प हु मिलि सन्तुष्ट रहाहिं ॥ गाढ़ी निद्रा झटपट जागत। मूत्रपुरीष मलिनभुवत्यागत ॥ तीनि घात गर्द्दभसे लेहु। अतिश्रम परभी बोझ सनेहु ॥ शीत उष्णपरदृष्टि न राखत। अति संतुष्ट विचर बनराजत ॥ दोहा—कृष्णबिहारीशुक्लकह, येगुण बीसप्रधान ॥ जोनरनिश्चय उरधरे, सो बिजयी जगजान ॥ इति ॥

॥ चातुर्मासबर्णन ॥

॥ विजयीछंद—लावनी ॥

सखिआयो मासचौमासदहैनितछाती। गयो जबसेंपियापरदेशलिखीनापाती ॥ लागोहैमाह असाढ़ घटाघनछाई। बिजुली चमकै चहुँ ओर जियाडरपाई। सखिऐसे निठुरको जरादर्दना आई ॥ लवदिलसेंदियाउतारसुरति बिसराई ॥ निशिदिनताकोमैंराह रहाना जाती। गयो जबसे पियापरदेश लिखीनापाती ॥ सावनमेंसखीनस-

जन हमारा आया। ना जानौं किस सवतिनने है बिलमाया॥ शिरपर मेरे त्योहार सनीनो आया। सखि सबके पिया घर आये बलमकहां छाया॥ सब सखी खुसी और ऐशमें सावनगाती। गयो जबसेपियापरदेशलिखीनापाती। भादौंमेंबरसता नीर पीर तनुभारी। बिन पिया दुःख हुआ दूनन जायसम्हारी॥ तकते निमोंहीराह हुआजी आरी॥ सुन सुन पपिहाके बैन नैनजलजारी॥ जो होत पतामालूमबांह गहिलाती। गयो जबसे पिया परदेश लिखीना पाती॥ सखिक्कार कन्तने आयदरशमोहिं दीन्हा। जोलगाहिअमेंतीर पीर हरि लीन्हा॥ भरके मोतियनका थार निछावर कीन्हा। नरपतितनमन धनवारी उसीपर दीन्हा॥ कह कृष्णाबिहारी शुक्ककरी मनभाती। गयोजबसे पिया परदेश लिखीना पाती॥ इति॥

॥ वियोगमेंसंयोग॥

क०—बालमलाल बिदेशगये दुखऐसीजरीहम काम कराकैं॥ जेचुरियां करआवत नाहिंरी तेचुरियांभई ठौरफराकैं॥ आगमलाल बिसूरत बालम बोलतहीं पिय द्वार धराकैं॥ कंचुकीमेकुचयोंहुलसे

कि गये बंद टूटि तड़ाक तड़ाकैं॥ १॥॥ इति॥

॥ गंगामहिमा॥

भ०—जोजनगंगागंगाकहै। जनम जनमके कोटिदुष्कृतसब चणही माँभदहै॥ स्नानकरन ते मनवांछितफल तत्तण तुरतलहै। ब्रजपातिकी प्यारीसंगमते बहु सुखदेनचहै॥ १॥ इति॥

॥ सखीबनाबिहार॥

क०—यमुनातटकुंजनबीन रहींसब सखियाँ फूलोंकीकलियां॥ यक गावततालबजावत हैंकरती मिलके यकरंगरलियां॥ मृगनैनी आयअनेकजुरीं छबिछायरही ब्रजकी गलियां। हरीचंद तहां मनमोहन जू सखि बन आय लख्यो अलियां॥

॥ जलबिहारलीला॥

कबित्त॥ सोरहसहस ब्रजबाम श्याम श्यामा रस रास बिलसाने सरसाने अरसाने हैं। अति श्रमभानि आनि यमुना नहाने शत शशि शोभा हानि पंच बाण मान भाने हैं॥ छरिकै मिलि छैभ ही छबीले जल छलकानि हलकनि फलकि ललकि मोद माने हैं। कंचनके कंज पुंज मानो

अलिरंजन को अंजलिन मंजुमकरंद बरसानेहैं॥

॥ बनविहारलीला ॥

धारि नारि बेष पिय प्यारी जात मारगमें छां
ड़िकै भवनकुंज सदन सिधाए हैं। आवत नि
हारि सामुहे ते चन्द्रावलिको यों पंथहि बचाइके
बरायन हराए हैं॥ पायकै लखाव भाव चतुर स
यानी सखी दांवलेन चित्तमें बिचारि आंख पाए
हैं।कोहै नोखी नारि देख्यो घूंघुट उघारि दोउ
भौंहन मरोरि मुसुकाय सकुचाए हैं॥ ॥ इति ॥

॥ अथ चंद्रप्रस्तवलीला ॥

श्रीः ॥ चौपाई ॥ शोभामेरेहरिपैसोहै । मैं ब
लिबलिपटतरकोकोहै ॥ मेरेश्यामनोहरजीवन।
बिहँसिश्यामलागेपयपीवन ॥ ठाढ़ीअजिरयशो
दारानी। गोदीलिएश्यामसुखदानी ॥ उदयभ
योशशिशरदसुहावन। लगीतातकोमातादिखाव
न॥ देखहु श्याम चंद्र यह आवत। अति शी
तल दृग ताप नशावत॥ चितैरहे हरि इकटक
ताही। करते निकट बुलावत वाही॥ मैया वह
मीठो कै खारो। देखत लगत मोहिं अति प्यारो

॥ देहि मँगाय निकट मैं लैहौं। लागी भूख चन्दमैं खैहौं ॥ देहिबेगमैंबहुतभुखानो। मांगत हीमांगत बिरुझानो ॥ यशुमतिहँसतिकरतिपछि तायो। काहेकोमैंचंदादिखायो ॥ रोवतहैंहरिबिनते हिजाने। अबधोंकैसकरिकैमाने ॥ बिबिधभांति करिहरिहिभुलावै। आनबतावैआनदिखावै ॥ ॥ दोहा ॥ कहतियशोदाकौनबिधि, समझाऊंअ बकान्ह ॥ भूलिदिखायो चंद्रमैं, ताहिकहतहरिखा न ॥ सोरठा ॥ अनहोनीक्योंहोय, तातसुनीयह बातकहुं ॥ याहिखातनाहिंकोय, चंद्रखिलौनाजग को ॥ चौपाई ॥ यहदेतनितमाखनमोको। छण छणतातदेतसोतोको ॥ जोतुमश्यामचंद्रकोखैहो। बहुरोफिरमाखनकहँपैहो ॥ देखतरहौखिलौनाचं दा। अरिनाहिंकीजैबालगोबिंदा ॥ मधुमेवापक वानामिठाई। जोभावेसोलेहुकन्हाई ॥ पालागौंह ठअधिकनकीजै। मैंबलिरिसहीरिसतनुछीजै ॥ खसिखमिकान्हपरतकानियांते। देशशिकहतनंद रनियांते ॥ यशुमतिकहतिकहाधौंकीजे। मांगत चंद्रकहांतेदीजै ॥ तबयशुमतिइकजलपुटलीनो। करमेंलैतेहिऊंचोकीनो ॥ ऐसेकरिबातहिंबहकावै।

आवचंदतोहिंलालबुलावै ॥ याहीमेंतूतनुधरिआ वै। तोहिंदेखिलालनसुखपावै ॥ हाथलियेतोहिं खेलतरहिहै। नेकनहींधरणीपरधरिहै ॥ जलपुट आनिधरणिपरराख्यो। गहिआन्योशशिजननी भाख्यो ॥ दोहा ॥ लोहिलालयहचंदमें, लीनोनि कटबुलाय ॥ रोवैइतनेकेलिये, तेरीश्यामबलाय॥ ॥ सोरठा ॥ देखहुश्यामनिहारि, याभाजनमेंनि कटशशि ॥ करीइतीतुमआरि, जाकारणसुंदरसु वन ॥ चौपाई ॥ ताहिदेखिमुसक्यायमनोहर ॥ वारवारडारतदोऊकर ॥ चंदापकरतजलकेमाहीं। आवतकछूहाथमेंनाहीं ॥ तबजलपुटकेनीचेदेखै। तहांचंद्रप्रतिबिंबनपेखै ॥ देखतहँसींसकलब्रजना री। मगनभालछबिलखिमहतारी ॥ तबहिंश्याम कछुहँसिमुसकाने। बहुरौमातासोंबिरुझाने ॥ ल्योंगोरीमाचंदाल्योंगो। ताहीअपनेहाथगहोंगो॥ यहतौकलमलातजलमाहीं। मेरेकरमेंआवतनाहीं ॥ बाहरानिकटदेखियतवाही। कहौतौमैंगहिल्यावों ताही ॥ कहतियशोमातिसुनहुकन्हाई। तवमुख लखसकुचतउडुराई ॥ तुमतेहिपकरनचहतगुपाला तातेंशशिभजिगयोपताला ॥ अबतुमतेशशी

डरपतभारी। कहतअहोहरिशरणतुम्हारी॥ बिरु झानेसोयेदैतारी। लियलगायछातियांमहतारी॥ ॥ दोहा॥ लैपौढ़ायेसेजपर, हर्षियशोमतिमाय॥ अतिबिरुझानेआजहरि, यहकहिकहिपछिताय॥ ॥ सोरठा॥ करसोंठोंकिसुवाय, मधुरेस्वरगावत कछुक॥ उठिबैठेअतुराय, चटपटायहरिचौंकिकै॥

इति श्रीचंद्रमस्तावलीला समाप्ता॥

॥ सामुद्रिकलक्षण॥

॥ दोहा॥ हस्त पहुँच अन्तर बिषे, मीनरेख जोदेख। तोप्रानी ज्ञानी धनी, पुत्रवंत शुभ वेख ॥१॥ तुलाग्राम अरु बज्रजो, करमध्ये दरशाहिं। सुखीहोय बाणिज्यमें, यामें संशयनाहिं॥२॥ पद्म चाप, कर बालकर, अष्ट कोण दरशाय। नर नारी सुखपावहीं, जीवन सफल कराय॥३॥ शंख चक्र ध्वज नासिका, जो कर मध्ये होहिं। सो पण्डित जानहुँ अवशि, धनीवंत सो होहिं॥४॥ करमध्ये तिरशूलजो, परैभाग्यवश आय। राज्य चिन्ह यह प्रगटहै, निश्चय राज्य कराय॥५॥ अंकुश कुंडल चक्रजो, पाणिमध्य परिजाय। निश्चय भोगै राज्य सुख, बचन अन्यथा नाय ६

गिरि कंकण नरपुंड सम, पाणि मध्य दरशाय। राज्य मंत्रिकर चिन्ह है, निश्चय सुख सरसाय ॥७॥ सूर्य्य चन्द्र जग अश्व गृह, लता नेत्र त्रयकोन। एकहु लक्षण करपरै, सुखी होय नर तौन ॥८॥ (दोवैछंद) चक्र एक वाचाल द्वितिय गुणवंत कहावै। तीन चक्र व्यापार माहिं लक्ष्मी नर पावै ॥ चार चक्र निर्द्धनी पंच सर्वाङ्ग बिलासा। छठा चक्र रस काम सस वहु सुख की आशा ॥ अष्ट चक्रतनु रोगनवम नृपती कहलावे। परैचक्रदशहस्त सिद्धपदवी सो पावे ॥ कृष्णबिहारी शुक्क कह्यो शिवने जो गाया। नर का दहिना हाथ नारि बायां बतलाया ॥

इति सामुद्रिक लक्षण समाप्तम् ॥

॥ छः दिशाकेसुखदुःख ॥

॥ पूर्वदिशाके सुख ॥

पुरुषउबाच ॥ दोहा—रूपाबिशेषबिशेषधन, भूमिसुहावनदेश। जायकरौंयातेअबै, पूरबको परदेश ॥१॥ कबित्त ॥ ताफतारुवाफतासुसज्जरश्री साफमखमलरुमुकेसीपटनानासुखदाइए। सरस

कृपाणतर कसरुकमानबानजरकसीचीराहीराजहां जाइलाइए ॥ सुकबिगुपालफुलवारी धामधामअं बश्रीफलकदंबपौंडापाननकोखाइए । बड़ेहोतकेश मिलैं तंदुल अशेष प्यारी पूरब के देश में बिशेष सुख पाइए ॥१॥

॥ पूर्वदिशाके दुःख स्त्रीउवाच-खंडन ॥

॥ सोरठा ॥ लगैं चौरठगवाई, पेटचलैपानी लगै । कीजैकबहुँनजाइ, पूरबकेपरदेशको ॥१॥ कबित्त ॥ पानीलागिजातबहुफूलिजातगातपुनि पेटचलि जातकछुखाइजातजबहूं । जादूकरिकरि केसँभोगसुखकाजपशुपच्ची कारिराखैंनारिनरनको अबहूं ॥ ब्राह्मणवणिकमीनमांसमधुखाततेलहर दलगायन्हातनारिनरसबहूँ ॥ फांसीदकैहालमारि डारैठगजालयातेजैयैनगुपालदिशिपूरबकीकबहूँ१

॥ दक्षिणादिशाके सुख ॥

पुरुषउवाच ॥ दोहा-दयामानधनमानपुनि, लोगबड़ेगुणमान ॥ यातेदच्छिणदेशको, करियेस दापयान ॥ कबित्त ॥ चीराचीरसालूसेलासमला बहारदारजरकसीकामजहाँहोतनानाभांतिहै ॥ सु

कविगुपालललालरतनप्रवालमणि माणिकविशाल मोतीमहँगीसुजातिहै ॥ मेवाऔमिठाईफलफूल थूलमूलगजतरुणीअनूपरूपझलकतगातहै ॥ देखबनैबातसदाशोभासरसातप्यारीदक्षिण दिशाके गुणकहेनहींजातहै ॥ १ ॥

॥ दक्षिणदिशाकेदुःख--स्त्रीउवाचखंडन॥

दोहा–दक्षिण पियसुनिकानदे, दक्षिणदक्षिणजात। लक्षणलक्षणगचिकै, लक्षणहीलगिजात ॥ १ ॥ कवित्त ॥ घोटूलोंउघारी निरलज्जरहै नारीमांसमदिराअहारीद्विजहोइँअनाचारीहै ॥ सुकविगुपालप्याजलहसुनखातबहु लूटैंठगचोर प्रजा रहैनसुखारीहै ॥ लोगनिरहेतभानिजकोव्याहिबेटीदेतरीतिविपरीतिसबदेखतमेंन्यारीहै ॥ बढ़तअगारीहोतिबड़ीबड़ीख्वारीदिशिदक्षिणमझारीजातहोतदुखभारीहै ॥ १ ॥

॥ पश्चिमदिशाके सुख ॥

पुरुषउवाच ॥ दोहा–राखेदक्षिणतेअबै, जोदिशिपश्चिमजात। ताकेअबसुनिलीजिये, प्यारीसुखअवदात ॥ १ ॥ कवित्त ॥ लोगदयावानति

यसुंदरसुजानमीठी बोलनिनिदाननीरलगैनतहाँ कहूँ ॥ बृषभाबिशालऊंचेऊंचेपुलकारवस्त्राविविधप्र कारनहैं सूतकेजहांकहूँ ॥ सुकविग्रुपालतातेतरल तुरंगमिलैमधुरमनीरभूफलगतिजहांकहूँ ॥ पारन हींलहूंजियशोचतहीरहूं प्यारी पश्चिमदिशाकेसु खबरणिकहाकहूँ ॥ १ ॥

पश्चिमादिशाकेदुःख--स्त्रीउवाच-खंडन

दोहा—मरतैरनिदिनवारिविन, भटकिभटकिन रनारि ॥ करियेनहींपयानापिय, पश्चिमओरनि हारि ॥ १ ॥ कवित्त ॥ धूरिनकेथलआवैंढोलकेढ मकैजलतरुविनथलतहांशोभानहींपामेंहें। चावररु गेहूंरसगोरसनफूलफल मोठबाजरीकोखायादिवस वितामेंहैं ॥ रहतमलीनधर्मकर्मकरिहीनलोगपहर तपीनपटऊननकेजामेंहें ॥ सुकविग्रुपालकछुकह तनआवेजातजेतेदुखहोतसदापश्चिमादिशामेंहें १

॥ उत्तरादिशाके सुख ॥

पुरुषउवाच॥ दोहा—हरिद्वारतेकैपराशि, बद्रीना थकेदार ॥ होतकृतारथजीवयह, उत्तरखंडमझार ॥ ॥ १ ॥ कवित्त ॥ लाइचील वंददाखदाडिमबदामसे

वसालमअंगूरापिस्ताखैयैउठिभोरको ॥ कसतूरीके सरिजाविश्रीजायफलदालचीनीदेवदारुकीसुगंधि चहुँवोरको ॥ सालऔदुसालधुस्सानानापसमीना ओढ़िदेखतरहतआछीतियनकीमोरको ॥ कहतगु पालप्यारीसुनियेनिहोरमोपैकह्योनहींजात सुखउ त्तरकीओरको ॥

॥ उत्तरदिशाकेदुःख-स्त्रीउवाच-खंडन ॥

दोहा—सदाशीतभयभीतनर, व्याघ्रसिंहवृषघो र। कीजैनहींपयानपिय उत्तरदिशिकीओर ॥१॥ कवित्त॥ विकटपहारभारघनेसिंहस्यारनिरवाहन- हींहोतरथबहलकोजामेंहै। गिलटीरुगिल्लरअनेक रोगहोतजहांचारिहूँवरणजीवहिंसकहरामेंहै ॥ सु कविगुपालसदासीतभयभीतलोगबरफकेमारेदुरेरह तगुफामेंहै। राहमेंनगामेंचल्योजातननिशामेंया तेबहुदुखपावेंजातउत्तरदिशामेंहै ॥१॥

॥ मूर्खता वर्णन ॥

सुईखालसों चाम कटावैं, सुइपार सकरे सोवें।
कहैं घाघ ये तीनों भकुवा,उढ़रिजायफिरि रोवें॥

॥ कलियुग बर्णन-कवित्त ॥

मतिभईभ्रष्टपापछायगयोसृष्टिमांझघरतियाछो ड़िपरतियधरनेलगे । धनवारौदेखिगुरुचेलाकोक रनलागेझगरिझगरिबापबेटालड़नेलगे ॥ धनरु- जिगारकीघटाईभईजगमांझ बिनाअन्ननरसबभूखे मरनेलगे । कहतयुपालबरखैनमेघजालयातेकलि कीकुचालतेअकालपरनेलगे ॥१॥ इति ॥

॥ अथ दुर्गार्तिक्यम् ॥

श्रीमच्छङ्करजुष्टे भक्तिप्रियहृष्टे निषिलश्रुतिनु तिपुष्टे कल्याणाविष्टे ॥ अविकाराभवतीष्टे सर्वज गदिष्टे पातुदैत्यानिष्टे प्रासपृथुकष्टे । जयजयजा ड्यविनाशिनि जगतामालम्बे संसारेनिःसारेत्वा महमालम्बे जयदे जयदे ॥१॥ प्रालेयाचलकन्ये विष्णवादिकमान्ये सेवन्तेत्वांतान्ये धिनोइतिम- न्ये ॥ सादरनुत्याचान्ये यत्प्रापुर्धन्ये तत्प्रासंसेना न्ये नह्यपिसुवदान्ये ॥ जयजयजाड्य० ॥२॥ प्रा भाकरशर्माणं प्रासंत्वांशरणं जननंमरणंत्यक्तुं ब्र ह्माणसत्वरणम् ॥ नहिमाताऽन्यावरणं प्रश्रान्ताक रणं क्षुतुटस्शरणंताड्य तेपदभिरकरुणम् ॥ जयज यजाड्यबिना० ॥३॥ इति दुर्गार्तिक्यम् समाप्तम् ॥

॥ अथ दानलीलाप्रारम्भः ॥

दोहा ॥ चलौसखीतहँजाइये, जहाँबसतब्रजराज। गोरस बेंचतहारिमिलैं, एकपंथदोकाज॥१॥ चौपाई ॥ प्रभुपूरणब्रह्मअखंडा। जाकेरोमकोटिब्रह्मंडा॥ जबसगुणब्रह्मकहाये। मथुरातेवृन्दावनआये॥ जहँदेवलोकमुनिजेते। सबगोपगुआलिनितेते॥ देवकीसुतनामधराए। वसुदेवहिरूपदिखाए॥ जबगोकुलइच्छाकीन्ही। वसुदेवहिआज्ञादीन्ही॥ जिनिनंदभवनपहुँचाए। तहँनंदकेलालकहाए॥ छन्द ॥ जन्मलियवसुदेवकेगृहनंदकेबालकभए। छपनकोटियदुवंशमायायूथगोपीग्वालके॥ श्रीकृष्णकेसँगबहुतबालकगोचरावनवनगए। हर्षिगावहिंदानलीलासुनौसज्जनकानदे॥ चौपाई ॥ सबघरघरकीब्रजनारी। दधिगोरसबेंचनहारी॥ मिलियूथमतोसबकीन्हो। यमुनातटमारगलीन्हो॥ आगेमोहनधेनुचरावैं। मधुरैंस्वरवेणुबजावैं॥ जहँवाटसबनकीसोई। मुरलीसुनिआनँदहोई॥ सबघाटउपरचलिआई। पाहिंचानिलियेयदुराई॥ इकबालककहतपुकारी। तोहिंसूझतनाहिंगँवारी॥ छन्द ॥ तोहिंसूझतना

हिंगँवारिगूजरिकृष्णठाकुरघाटके । आइकाहेनकरोबिनतीअजहुँहैवर्षसातके ॥ हृदयसमुझिविचारिग्वालिनिकृष्णछांड़िकहाँचली । दानदेहुनिवारिअपनोहरिभलेतुमहूँभली ॥ चौपाई ॥ मिलियूथगोपिकाआई । पहिचानिलियेयदुराई ॥ सुनिबातसबैमुसकानी । हमआजुसुनेहरिदानी ॥ हमकौनकहांतेआई । हमकोहरिचीन्हतनाई ॥ तुमगोकुलकीब्रजनारी । तुमहौबृषभानुदुलारी ॥ तुमरेशिरगोरसभारा । हमहैंयमुनाघटवारा ॥ कछुदानहमारोलागै । हँसिकैमनमोहनमांगै ॥ छन्द ॥ तीनलोकमेंकौनजानेघाटयमुनातीरको । जातआवतकुञ्जबनमेंरहतलालअहीरको ॥ दानदेवृषभानुलाड़िलिसुयशहमसोंलीजिए । नन्दकेसुतजानिहमसोंगर्वबहुतनकीजिए ॥ चौपाई ॥ तबग्वालसखामिलिघेरे । अरिकामदुकीमहँतेरे ॥ कोइहाथडारिदधिकाढ़ैं । तबढंढचहूँदिशिबाढ़ैं ॥ इकग्वालिनिउठीरिसाई । प्रभुकायहरीतिचलाई ॥ कछुमांगदहीभरिलीजै । नईदानकीरीतिनकीजै ॥ जोकंसराजसुनिपैहै । तुमहूँकोउदेशपठैहै ॥ छंद ॥ कंसरायकेराज्यमेंप्रभुनईरीतिनकीजिए । नन्दके

गृहद्वंद्वउपजेदुखपरेतनुछीजिए ॥ सदाआवतजा
तमथुरादानहमसोंकिनलिए । दहीमाँगतछाँछदु
र्लभनीरयमुनापीजिए ॥ चौपाई ॥ जबग्वालि
निकहिअसिबाता । हँसिबोलेत्रिभुवनदाता ॥
तुमतीनिलोकमेंदेखो। हमकोजानिमानुषलेखो ॥
हमहींसबदैत्यसँहारा । इक्काकरैकंसबिचारा ॥
तुमकंसकोकरहुयमाना । तेहिकालकरौंपिसमा
ना ॥ अबउग्रसेनभएराजा । हमहूँअबताहिनिवा
जा ॥ हमसोंहठवादनकीजै । हँसिदानहमारोदी
जै ॥ छन्द ॥ जाकोवेदपुराणगावैंमनमानैसोई
करे । परअधीन बलहीनजोनरकंसकेडरसोंडरे ॥
दहीगोरसकौनबूझैदेखअभरणआपनो । जड़ित
हीरालालकञ्चनमांगमोतिनसोंबनो ॥ चौपाई ॥
कितमोतिनमाँगविराजै। कितपावननूपुरछाजै ॥
कितकण्ठरत्नकेमाला।हीरामाणिकगुथेनँदलाला॥
बाजूबन्दकँगनभलासोहै। नकबेसरसोंजगमोहै ॥
शिरवेणीगुथीबहुभाँती। तहँलागिरतनकीपाँती ॥
मणिमाणिककङ्कनडोलै । मधुरीकटिकिंकिणिबो
लै ॥ कितपाटपीतांबरपहिने । कितषोड़शभूषण
कीने ॥ छन्द ॥ हृदयदेखिविचारिग्वालिनिकुञ्ज

वनकीबाटहै। लूटिलेइकोउसबैभूषणकोतुम्हारेसा
थहै॥ इहाँसबनकोदानलागैहठनकीजैसुन्दरी।
कंसतेहमडरतनाहींसुनतबातसबैडरी॥ चौपाई॥
इककङ्गनलैजबदीन्हा। हरिसोविनतीबहुकीन्हा॥
प्रभुथोरबहुतकछुलीजै। अबपारसबनकहँछीजै॥
इकग्वालकरीचतुराई। तिनऔघटनावछुपाई॥
जबआइकृष्णसोंभाषा। प्रभुनावकहाँकोइराखा॥
अकुलाइउठींसँगसाथी। प्रभुसाँझपरीयहिभाँती॥
तबकृष्णसबैसमुझावैं। अबनावकहाँकोउपावैं॥
छन्द॥ औघटघाटभीरयमुनारातकोनहिंपंथचलैं।
वाघसिंहवटपारवनमेंकवनतुमकोभालिकहैं॥ झूठ
मायामोहपरिजनस्वप्नहैदिनचारिकै। कोउकाहुके
संगनाहींअन्तदेखुबिचारिकै॥ चौपाई॥ जब
ग्वालिनिकेमनमाना। धृगजीवनकैजगजाना॥
धृगजीवनधनपरिवारा। तुमहींप्रभुनाथहमारा॥
अबचरणशरणप्रभुदीजै। तनमनअपनोकरिली
जै॥ अबचरणशरणसबलागीं। हमहैंप्रभुपरमस
भागीं॥ पथरातिपरीअँधियारी। जनिछाँड़ियरा
तमुरारी॥ छन्द॥ जन्महमरोसफलकीरयेलाज
तजचरणनपरी। कुलाकिलाजगमायग्वालिनिज

न्मजन्मसेवाकरी ॥ रहसिमोहनसंगहिलिमिलि मणिमाणिकदीपकबरैं । श्रीकृष्णराधेयूथग्वालि निकुञ्जवनक्रीड़ाकरैं ॥ चौपाई ॥ यकरहसमण्डल प्रमुठाना । सबगोपिनकेमनमाना ॥ कोइगन्ध धूपलैंआवैं । नैवेद्यकिजुगुतिबनावैं ॥ तहँराधेजी पानखवावैं । काइमाथेचमरडोलावैं ॥ कोइताल मृदङ्गबजावैं । कोइआरतिमङ्गलगावैं ॥ सुरनारद अमृतवानी । रहसमंडलकरतबखानी ॥ जहँबाज ततालमृदंगा । मधुरी ध्वनि वेणुउपंगा ॥ कर तालबाजेकीघोरी । रहसमण्डलकीघनघोरी ॥ त हाँमांझकिशोरकिशोरी । दोउकृष्णराधेकीजोरी ॥ छन्द ॥ श्रीकृष्णघंटबजायआरतियूथमिलसेवाक रै । गिरिजानंदप्रसादपावै जन्मजन्मकेदुखहरै ॥ जोनरगावहिदानलीला सुनहिजोचितलावही । सोतोपावहिप्रेमभक्तिविष्णुलोकसिधावही ॥

इति श्रीदानलीलासम्पूर्णम् ॥

॥ अथ करुणाबत्तीसीप्रारम्भः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ कवित्त ॥ गिरिकोउठाय ब्रजगोपकोबचायालियो अनलतेउबारयोपुनिबाल

कमंजारीको। गजकीअरजसुनग्राहतेछुटायलीनो राख्योब्रतनेमधर्मपांडवकीनारीको ॥ राख्योगज घंटतारबालकविहंगमको राख्योपनभारतमेंभीष्म ब्रह्मचारीको। त्रिविधतापहारीनिजसंतनसुखकारी मोहितोभरोसोभारीऐसेगिरिधारीको ॥१॥ कमला निवासनिजदाशकीपूरेआश ताकेबिश्वासबिषभ ख्योमीराबाईहै ॥ केशवकमलनयनसंतनकरनचैन सैनासितभये भूपमंजनकोनाईहै ॥ इंद्रजूकोहस्यो मानसुदामाकोदियोदानभक्तजानि छानिनामदे वजीकीछाईहै ॥ नंदकेकन्हाईनिजसंतनसुखदाई बलदेवजूकेभाईसोहमारेहूसहाईहै ॥२॥ काहूकेआ धारसेवावाणिजव्यापारकोकाहूकेआधार थितवित खेतगांवको। काहूकेआधारतनसारभ्रातबंधुनको काहूकेआधारप्रियसारनिजनामको ॥ काहूकेआ धारविद्याबुद्धिबलकोहै काहूकेआधारहाथीघोड़ा धनधामको। मैंतोनिराधारमेरीहरिहीकरोगेपारमे रेतोआधारएककेवलहरिनामको ॥३॥ केऊकर्मवा दीकेऊअनुभवप्रसादीभये केतनकीमतीभईन्याय संख्यमतकी। केतेजगदानीयमनेमकोप्रमाणकरें केतेपरतीतकरैंतीरथहूब्रतकी ॥ केऊब्रह्मचारीकेऊ

योगीजटाधारीभए वानप्रस्थकेतनकूंदयासांचस
त्यकी । मैंतोहूंपतितमेरीकौनदिवसह्वैहैगति कम
लापतिराख्योपतिमोसेहूपतितकी ॥४॥ केऊकरैसेवा
केऊराखतहैलेवादेवा केऊकीरषानताकेखेतहीको
हीलाहै । केतकर्मवासीकेतदानहूकेआसीकेतेगा
नतानविषयकेविधिधरसीलाहै ॥ केतमहाकूरकेते
सबगुणपूरधीरकेतेअतिबांकेरणखेतमें अरीलाहै ।
मैंतोमहाकूरताकेउद्यमनाहिं मूरएकयशोमातिवारो
केरोहमारोवसीलाहै ॥५॥ केऊप्रेमलक्षणाभगति
मेंविचक्षणह्वैनीकी भाँतिसेवाकरजानै विधिज्ञान
की । केऊतत्वबोधसेतीआतमकोशोधकरै साधैनि
त्ययोगगतिजानैरोधपानकी ॥ केऊतनसनासांम
वासनाजतनसहैकेऊकेकैउपासनागणेश शिवभा
नकी । हूंतोहूंअजानताकेकाहूसोंपिछाननाहीं को
ऊकछुजानैहूंतोजानूंनाथजानकी ॥६॥ जैसेखग
बालककोराखिलीयोघंटातलेलाक्षागृहतेंबिराख्यो
पांडवसबसाथको।राखिलीयोपरीक्षितकोमाताकेउ
दरमाहिंराख्योग्वालबालगिरिधार्यो निजहाथको
॥पारथकेस्वारथकोसारथीभयेहोतुम सखानिजजा
नकैजितायोहैभारथको ॥ पावकप्रजारीतहांराखीहै

मंजारीकोवैसीभांति राखोनाथमोसेहूअनाथको ७
केऊध्यानधारणासमाधि विषेलीनभये मिलावेपर
मात्मामेंआत्माबिचारीको। केतेनिष्कामममनअज
पाकोजापजपैंकेतेभजैंशंकरधतूरकेअहारीको॥ के
तेसकाममंत्रयंत्रआठोयामजपैंकेते लोभदामकोग
णेशसुखकारीको। तेरोध्यानज्ञानतेरोआसरोतिहा
रोमोहिंकोऊकछुध्यावोमैंतोध्यावौंगिरिधारीको ८
लीलाअगाधब्रजबासिनकेहेतुसेतीधनाजूकीखेती
बिनबोयेनिपजाईहै। भीषमकोप्रणऔरद्रौपदीकी
लाजराखीअशरणशरणकीर्तिवेदमध्यगाई है। बूड़
तबचायोब्रजकरपरगिरिधास्योनाथसाहाबननरसी
कीहुंडीसकराईहै। कारिये नबारअबसुनिये पुकार
मेरी मोपरब्रजराजगजराजकीसोंआइ है॥९॥ दी-
नबंधुदयासिंधुमेटतदुखद्वंद्वनकेएसेतोअनेकबिरद
ग्रंथनमेंकहीहै। गोपमेहतेउबारेराजाबंधतेनिवारे
भारतमेंपारथाहितएतेशरसहीहै॥ नामाकबीरगीध
गणिकाअरुकरितारे चीरबाढ़िद्रौपदीकोजगतयश
लहीहै। बेरमांझधारमेरोदुःखबारपारदेकेएहोनाथ
करुणानिधिमेरोहाथगहीहै ॥१०॥ छंदमत्तगयंद॥
आरतनेकयुहारसुनी तबदीनदयालुकिरीतखरीकी

। दौरतहैतजिकैनिजधामसुबातसुनी तबभीरपरी की ॥ मेरियबेरबिलंबरहेसुकहातकसीरकरीजुहरी की । धायसबेरसुनीजबटेरकरीनहिंबेरसुबैरकरीकी ॥११॥ तादिनटेरसुनीततकालसुसहायककाजकी आनखरेहो । संतनहेतअनंतअपारजुआपसबैअव तारधरेहो ॥ मेरीगुहारकरौनहिंकानसुकान्हककहो किनबानपरेहौ । पौढ़रहेवटपातमैंनाथकिबौरभये किजुराजकरेहौ ॥१२॥ कबित्त ॥ तबतोहेभक्तनस हायकाजब्रजराजकंसकोबिडारमतिधरीन चितमा माकी । बादलभरल्यायेजुलाहाकेदयालुहोयगबु हीजिवाईअरुछानछाईनामाकी ॥ संतनकोप्रणरा ख्योग्वालगनव्यालसेतीबिपतिहरीसंपति अमित देसुदामाकी । अहोबलबीरतुमद्रौपदीकोबाढ्योची र हरतक्योंनपीरअबमोसेनिःकामाकी ॥१३॥ द्रौप दीकिलाजकाजद्वारकासौंदौरआये चीरकोबढ़ाय टेकराखीसत्तशीलकी । पुत्रहेतुनारायणनामलेत तत्कालकाटेयमजालगतिभईअजामीलकी ॥ मू ठीएकचावलकोखातहीनिहालकियो कैसीदशाभ ईउनब्राह्मणकुचीलकी । मेरेहूंकरोवीढीलहोतहोक हावभीलतबतोनकरीढीलटेरसुनीपीलकी ॥१४॥

कवकोपुकारतहौंसुनतनहींएकोबातएहोनंदलाल
तुमकैसेप्रतिपालहौ। कहतेहैंदयालुसोतोदयाऊन
देखियतमेरीमतिऐसीआछेनीकेपशुपालहौ॥ धा
खोहैनृसिंहरूपतबहीं प्रहलादकाजअबतोनलाज
कछुगोधनमेंग्वालहौ। डास्योतिलकाननमेंबसेजा
यकीधौंबनशेषशयनलेटकीधौंपैठेधौंपतालहौ १५
बेरबेरटेरटेरजीभह्वाशिथिलभईहरतनाहिंमेरीपीरकैसे
अभिमानीहौ। कृपणभयेहौकीधौंमौनकोगहेहौ
कान्हदयाऊनआवैअबकैसेउनमानीहौ॥ कैसेकै
उदारतुमहोतहोमुरारगोप गोपिनकेप्यारेछाँछदूध
हूकेदानीहौ। बकिबकिथकीबानीकछूहूनचित्तआ
नीजानीहमजानीबूझिकरतआनाकानीहौ॥१६॥
वेदऔपुराणनमेंकरतहैंबखानऐसेसतयुगकेबीचध्रु
वप्रहलादकोतूठेहौ। त्रेताकेबीचनीचकुलकीनक
रीकानिभीलनीकेहाथप्रभुभषेबेरजूंठेहौ॥ द्वापरके
अंततुमद्रौपदीकीलाजराखी पांडवनकेकाजदल
कौरवकूंरूठेहौ। अबकलिकालमेंजोकरोनासहाय
मेरीतोसबलोगहँसकैकहेंगेहरीझूठेहौ ॥१७॥ हमैं
तुम्हैंबनैगाढ़ीअतिहिवयसबाढ़ीताकोकरोकौनसों
निवेरोअबन्यावरो। टेरतहूंभोरसांझताकीपरवान

कछुजानतहोएसेजूवैकैहैकोऊबावरो ॥ मैंतोमहा
दीनतुमनायकहोदीननकेनामसोंप्रणामअबकरौं
कौनचावरो । वृद्धकोविचारकैमुरारिमेरीलाजरा
खोमेरीलाजखोयेतोजाइयेबिरधरावरो ॥१८॥ जा
दिनभोतभईतबकीकही जानतनहींसुनौकानदेकै
ज्योंहैबाततंतकी । भयेहोकठोरजोरकियोकहाचा
हतहोनंदकेकिशोरलाजराखोक्यौंनसंतकी ॥ करो
गेसहायकबदुःखितभयोंहों अतिमोपरयदुरायहाय
परीहैदुदंतकी । टेरतहोंबेरबेरभँवरमांझमेरीअरजए
होहरितोकोकछुखबरहैबसंतकी ॥१९॥ एहोयदुरा
यमैंकहतहोंसुनायअवनीकेचितधारिप्रभुनेकनारि
सायहो । हूंतौपस्योगैलताकीकियेहीबनेगीटहल
सबसोंबसायप्रभुमोसेनाबसायहो ॥ दयावंतकहा
वैतौदयाहूकोकाजराखमोसेअतीत तीनलोकमैंन
पायहो । खेयतहोंविपतियहघेरलईचहूंओरमेरीक
रहोयसहायकीधौंलोकनकहँसायहो ॥२०॥ जगत
केस्वामीअंतर्यामिहूकहावतहो हरतनामेरीपीरएतें
अभिकूकेपर । सुदामाविभीषणकोच्चणकमांहिंरा
जीकियेहरीकरीयेवोकहामोसएकहूकेपर ॥ मोपर
परीभीरतुमदेखतहौंबिनापीरएहोघनश्यामघनवि

रथाखेतसूखेपर । करनहिंसहायतोवेगदेतहाक्रो
पीछेकहाहोतकियेऔसरकेचूकेपर ॥२१॥ कहाहैभ
योजोतुमद्वारकाकेराजाभये गोकुलकेवासीवासी
छाछिकेपिवय्याहौ । कबहूंमच्छबाराहनृसिंहपरशु
रामभयेकबहूंभयेवामनआछेस्वांगीभवय्याहौ ॥ धे
नुकेचरैयागुञ्जमालकेधरैयाधुनिवंसीकेबजैयाअरुब
नमेरहैय्याहौ । टेरतहौंप्रातरातबूझीनाहिंमेरीवात
जानीहमतातभृगुलातकेखवय्याहौ ॥२२॥ कौरव
कोवंशबोरयोकंसजूकोकंधतारयो गोपिनको दधि
चोरयोबड़ेबटपारेहौ।बृंदाअरुबकीबोरीकुबजासोंप्री
तजोरीदानदेतबलिबोरयोचोरचीरवारेहौ ॥ कबहूं
कुलीनकीसहायकरीसुनीनाई वेश्याअरुकीरगीध
ऐसेनकोतारेहौ। जरासंधसेतीहारेजायद्वारकापधा
रेतुमकौनकेकाजसारेहरि औरकेबिगारेहौ ॥२३॥
गौतमकीनारिताकी कथाबहुतविस्तारीयद्यपिउधा
रीतनुछिद्रउघरायकै। दुश्शासनद्रौपदीकेसभाबीच
केशऐंचेतबलाजराखलईलाजकोगमायकै ॥ भयो
बलहीनअतिहीअधीरक्षीन तबगजकाजहरिआये
वेगितुमधायकै। दीनकेदयालुप्रभुयामेंतोसंदेहना
हिंकरतहोसहायआपनीकेतन्हताइकै ॥२४॥ काहू

कपरीप्रीतिकाज
केतोहेतकरिखेतहूंनिकायदीयोकाहूपरीप्रीतिकाज
आलदभरिल्याईहै । काहूकेमजूरहोइछानहूछिवाय
दईनाईहोयनृपतीकोआरसीदिखाईहै ॥ काहूपैद
याळुहोइदारिद्रविदारदीयोकाहूहेतसाहबनिहुंडीस
कराईहै । करीहौमजाकसोतोदेखतहोआयसबमो
सूतोंतिहारेनईबातनहींबनाईहै ॥२५॥ जानतहौभ
लीविधिबड़े विश्वासीपरछलकोकैरयाऐसोदेख्यो
कोईधूर्त्तना । पांडुपुत्रहेतुकुरुक्षेत्रमेंमचायोयुद्ध
कौरववंशबोरबेकोऐसोकोउदूतना ॥ महानिर्दयी
कछुबातहूनजातकही यादववंशबोरबेकोऔरकोउ
सपूतना । स्तनकोपानकरतप्राणनकोपानाकियोपू
तनांपूतनापुकारतमोपूतना ॥२६॥ दाससुदामा
कोसंपतिदीचुटकीभरिचावलपहलहीलीनें । साग
केपातपचोलीकेखाइतबैऋषिभोजनदीनेनवीनें ॥
कंसकीदासापैचंदनलेपटरानीकरीकैहौमानकरीनें
जोकारजजममेंयदुरायअकोरलिये विनकौनकेकी
नें ॥२७॥ याहीजगहेतुप्रभुकेतअवतारधरताकेअ
नपालैकोंकैसमनमोरागे । एहोजगजीवनजगदी
पोषणभरनतुमाविरदकेनिबाहनमेंकैसेदिलचोरागे
॥ बिरदकाजआतिहीअधीरभयेजातहोसोकहाश्रेष्ठ

सेती ननेहतिनकासमतारोगे । धरिकैबराहरूपअ
वनीनिकारी आपअबकहापृथ्वीकूंबिनामोहवारो
गे ॥२८॥ ब्रह्मामहेशशेषनारदगणेशकहैभक्तनके
काजहरिआपदेहधारीहे । मंगलकरनदुखद्वंद्वकेह
रन पुनिपोषणभरनऐसेरटैंनरनारीहे ॥ बिरदभक्त
वत्सलसोंबेदऔरपुराणकहैं जानतहौंजाकेअंबखो
वेकौबिचारीहै । द्वारकाकेबासीजातकेमवासीअब
मेरीहोतहांसीयामेहांसीतोतिहारीहै ॥२६॥ पीपा
सोंपापीअजामीलसोंसुरापीब्याधसोंअधम तास्यो
अहल्याउधारीहै । रांकाबांकाकरितारेकरुकेतकअ
हीरतारे हाथीसेहजारवारपुनिवारन्यारीहै ॥ कूबरी
दासपीपाधनानामदेवछीपा ऐसे तोअनेकतारेता
स्योनागकारीहै । अधमअधमतारेकेऊअधमीउधा
रे सबकेकाजसारेअबबारीहीहमारीहै ॥३०॥ करु
णानिधिकान्हसुनोबिनतीसुनबेकोबिनाप्रभुकैसेस
रैगो । दीनदयालुदयाकरियेगोईकरियेतोपलाऊ
घरैगो ॥ मोसेकुपूतकेकामकृपानिधियायुगमेंकहो
कौनकरैगो । तातेअनाथकोहाथगहोरघुनाथबिना
दुखकौनहरैगो ॥३१॥ करतअपराधभारेसांझतर
कौरानितिअतिहीकठोरमतिवौरकौनकामहौं । आ

तुरअधीरतातेधीरजधरतनाहिं ऊँचनीचबोलिगाति बकूंआठौयामहौं ॥ अरचानजानूंकछूचरचानबूझ तहौं कछूहेतप्रातसेनलेतहारिनामहौं ।सबतकसीरब लबीरमेरी माफकरौकहैमाधोदासप्रभुतौरहीगुलाम हौं ॥३२॥ दोहा ॥ याकरुणाबत्तीसिको, पढ़ैसुनै नरनारि।ताकेसबदुखदंद्धको, काटैंकृष्णमुरारि॥१॥

इति मुन्शीमाधोदासकृत करुणाबत्तीसी संपूर्ण ॥

॥ अथ नरसीमेहताकी हुंडी ॥

चौपाई ॥ श्रीगणपतिकोपाहिलध्यावौं । जब नरसीकीहुंडीगावौं ॥ परमभक्तम्हेताहैनरसी । रामभजनमेंबुद्धिहैसरसी ॥१॥ निसिदिनरामकृष्ण चितधरै । झूठींदंतकथानहिंकरै ॥ जाकोहैजूनागढ़बास । रामभजनमेंरहैहुलासा ॥२॥ जहँआये साधूजनदोय । बासोलेकररहियासोय ॥ प्रातजागपूँछतहैंतहां । कौनालिखतहैहुंडीयहां ॥३॥ एकमसखरेकीनीहांसी । सुणज्योहोतीरथकाबासी ॥ धरम्हेतानरसीकेजावो । चाहैजितनीहुंडिलिखावो ॥४॥ उनकेधनकोछेड़ोनाहीं । बहुतेरीलक्ष्मी घरमाहीं ॥ जबसाधूपूछतघरआये । नरसीजीघर

बैठापाये ॥५॥ रामरामसाधुबोलेजबै। उठिप्रणाम
नरसीकरतबै॥उज्ज्वलजलसोंपांवपखारे। ऊंचेआ
सनपरबैठारे ॥६॥ पांवपखारलियोचरणामृत। ध
नधनअपनोभाग्यबखानत॥ श्रद्धामाफिककरीर
सोई। पायेसुखसाधूजनदोई॥७॥ चलूकरीआरा
मकरायो। नरसीपगचंपीकोआयो॥ साधुनसों
पूछतहैऐसे। मोपरकृपाकीनप्रभुकैसे॥८॥ साधू
बोलेबातबनाय। नरसीजीसुनियोचितलाय॥
संगनमिलैचलैनहिंसाथ। हमपासेरुपयासौसाथ
॥९॥ रोकरुपैयाघरमेंधरो। नगरद्वारकाहुंडीकरो॥
शोचतनरसिकहाकहुंइनको। करमजाकभजेहैंजि
नको॥१०॥ मेरेतोहरिनामअधार। येहीवाणिज
करौंव्यवपार॥ अबहरिकीस्तुतीकरतहै। तोसुमि
रेसबकामसरतहै॥११॥ गजसहायकीन्हीततकाल
। गरुड़छांड़धायेगोपाल॥ परशीशिलाचरणरज
धारी। गौतमनारिअहल्यातारी॥१२॥ पृथ्वीअ
सुरडुबोईजबै। धरिबराहतनुआनीतबै॥ हिरणा
कुशजबखरोरिसायो। हैनृसिंहप्रहलादबचायो१३
बारमासतुमबलिकेद्वार। आपुपधारेश्रीकरतार॥
मारयोपापीरावणसई। लंकबिभीषणकोतुमदई१४

सुतसनेहहरिनामउचाखो। अजामीलसोंपापीता
खो॥आठौयामपढ़ातीकीर।गणिकातारीश्रीरघुवी
र१५जूठेबेरभीलिनीहाथ।आपअरोगेश्रीरघुनाथ॥
भेजीकंसपूतनाआई। बनीरूपअतिसुंदरताई १६
श्रीमुखमेंजबअंचलदीनू। ताकोप्राणसोखतबलीनू॥ शकटासुरराक्षसजबआयो। बैठेगाड़ेबदन
छिपायो॥१७॥दीन्हीलातकन्हैयालाल। माखो
पापीकोततकाल॥ तृणाअसुरगतिगरदउड़ाई
नंदगांवमेंधूममचाई॥१८॥ लेकरकान्हगयोआ
काश। मुष्टीमारकियोतबनाश॥ बालपनेतुममा
टीखाई। मातुयशोदामारनआई॥१६॥ देखमातु
मैकछुहुनखायो। तीनलोकमुखमेंदरशायो॥ देख
यशोदाविस्मयभरी। पलमेंमायादूरीकरी॥२०॥
दोहा॥ पयउफनातोदेखकर, गईयशोदादौर॥
पीछेदधिकीमाथनी, फोरीनंदकिशोर॥२१॥ रीस
भरीमाताजबै, सुतकोपकखोधाय॥ ऊखलसूंबां
ध्योतबै, नँदनंदनब्रजराय॥२२॥ दोरूखनकेबीच
में, ऊखलखैंच्योजाय। नलकूबरपरकटभये, छूटप
खोवृक्षराय॥२३॥ नारदजीकोशापहो, दूरभयोत
तकाल। चढ़ाविमानसुरपुरगयो, तिनकोकियोनि

हाल ॥२४॥ वत्सासुरवच्छोभयो, रूपकपटकोधार
। श्रीकृष्णवाकोमारियो, पटक्योपांचपछार ॥२५॥
बरुणलेगयोनंदको, यमुनामाहिंडुबोय । पितासां
चजानीतबै, कृष्णछुड़ायोमोय ॥२६॥ चौपाई ॥
चौरेचीरजबैघनश्यामा । ब्रजबासिनकेपूरणकामा
॥ ऋषिपत्नीकेकरकेतीवण । आपआरोगेयुगकेजी
वण ॥२७॥ जलयमुनाकोमोटोभाग । जामेंना
थ्योकालीनाग ॥ बत्सग्वालब्रह्माहरलीना । नंद
लालफिररचेनवीना ॥२८॥ वर्षएकलागीसबमाया
। ब्रजबासी कछुलखनाहिंपाया ॥ कोप्योमघवाब्र
जपरजबहीं । गोपीग्वालबचायोतबहीं ॥२९॥ धन
धनब्रजकेगोपीग्वाल । सदाखेलेतुमउनसँगख्या
ल ॥ निशाशरदअरुबालासाथ । रासरमे श्रीगो
पीनाथ ॥३०॥ साथअक्रूरमधुपुरीआये । नगरलो
गअतिहीसुखपाये ॥ कुब्जासँगतुमरमेकृपाल ।
क्रीडाकीन्हीश्रीगोपाल ॥३१॥ हाथीहत्योकुवल
यापीड़ । जिनकोकंसचढ़ायोभीड़ ॥ जानबूझके
भलोखिलायो । पकड़शुण्डकरिदूरचगायो ॥३२॥
मुष्टिचाणूरहुतेद्वैमल्ल । कुस्तीकरिपास्त्रोयकपल्ल ॥
पापीकंसहत्योमहराज । उग्रसेनकोदीयोराज ३३

आठभईतुमपैपटरानी। एकैएकअधिकसनमानी॥
अंतर्यामिद्धारकानाथ। उनकोहैमेरेशिरहाथ ३४
दोहा॥ अतिसुंदरिहैरुक्मिणी, लक्ष्मीकोअवतार॥
सतिभामाकोमानहै, जाम्बवतीसूंप्यार॥३५॥ का
लिंदीनागनजिती, भद्राजीसोंहेत। मित्राबिंदाअ
रुलक्ष्मणा, कुलकोशोभादेत ॥३६॥ चौपाई॥ पा
रिजातसुरपुरसूंल्यायो। सतभामाघरआनरुपायो॥
भ्रमउपज्योनारदकोजबै। महलोंमहलपधारेतवै
॥३७॥ बिपतिसुदामाकीतुमहरी। घरमेंऋद्धिसि
द्धिबहुकरी॥ अग्निअजीर्णहोगईजबै। बनखंडी
मेंचराईतबै॥३८॥ यज्ञराजापांडवकोकियो। थाली
मांजनकोतुमरह्यो॥ जबजबबोल्योजोशिशुपाल
। थालफेंकहत्योततकाल ॥३९॥ जबद्रोपदीकि
कीनीभीर। बस्त्रबढ़ायोघट्योनचीर॥ शापदेनपां
डवकोआये। बनमेंऋषिकोबोतअघाये ॥४०॥
दासबिदुरकोमोटोभाग। अतिहिप्रीतिसोंपायोसा
ग॥ भीषमकोप्रणराख्योजबै। भीरपड़ीभारतमें
तबै ॥४१॥ परीक्षितकीतुमकीन्हिसहाय। गर्भवा
समेंलियोबचाय॥ भारतमेंअतियुद्धमचाया। टीपा
डीकाअंडबचाया ॥४२॥ मित्राचारकियोहैपारथ।

जाकोआयजितायोभारथ ॥ पांडवकोअश्वमेधक
रायो । अतीप्रीतिसोंहेतुजितायो ॥४३॥ मद्यपि
योयादवमिलसबही । तोइच्छासोंप्रगटेसबही ॥
उद्धवकोतुमज्ञानसिखाये । कृष्णरूपप्रभुधामसि
धायो ॥४४॥ तेरेगुणकोकहाविचारा । सुततेतीस
नपायापारा ॥ मैंहूंदीनऔरनहिंहाथ । आपकही
जेदीनानाथ ॥४५॥ तुमअनेकभक्तनकोतारे ।
संतहेतुबहुकारजसारे ॥ मैंशरणागतआयोतेरी ।
तुमपरतज्ञाराखोमेरी ॥४६॥ गद्गदहोयप्रेममेंपा
ग्यो । अबहुंडीलिखनेकोलाग्यो ॥ नगरद्वारका
सिद्धश्री । शुभसुथानजहांबसैहरी ॥४७॥ श्रीसा
हाजीसाँवलनाम । जिनकोनरसीकरैप्रणाम ॥
तुमपरतापचैनहैयहां । अतिआनंदचाहियेवहां ॥
॥४८॥ पानकपूरआरोगणलीजे । डीलांकाबहुज
तनकरीजे ॥ डीलांपाछेसारीबात । मुदारागेण
ज्योडीलांसाथ ॥ अपरञ्चसमाचारसोंकाम । हुंडी
सिकारदीजोदाम ॥ हमराखासाधूजनपासा । सा
हयोगतुमदीजोखासा ॥५०॥ सातासहकारुपया
लीना । नेमेजाकासाढातीना ॥ पूणादोयचौगु
णाकीजो । देखतसबैदामगिणिदीजो ॥५१॥ मि

वीमासअरुसंवतदीनू। लिखिसिरनामोकोठोकीनू ॥ हुंडीसाधूलीनीजबै। नरसीउनकोबोल्योतबै॥ ॥५२॥ हाथसाँवलसाहकोदीज्यो। तुरतरूपयाअपनालीजो॥ काटिमैंजलपहुँचेजहाँ। नगरद्वारकासाँवलतहाँ॥५३॥ जाकरभेटश्रीरणछोड़। पापगयेसबतनुकेक्रोड़॥ तीरथवासीपूछतजहां। साँवलसाहरहतहैकहाँ॥५४॥ कोइबतावोउनकोबास। साँवलपरहुंडीहमपास॥ लोगनगरकाऐसीकहै। साँवलसाहयहाँनाहिंरहै॥५५॥ कोउठगोरपासठगाये। तुमतोहुंडीखोटीलाये॥ देरनकरोवेगितुमजावो। उसीठगारेकुंपकड़बँधावो॥५६॥ उपजीजीवकोबड़ीउदासी। पाछाचाल्यातीरथवासी॥ कोसदोयतीनकजबआया। बैठेताकवृत्ताकीछाया॥५७॥ गयाजीवसेहर्षउछाह। जबहींआयोसाँवलसाह॥ रामरामकरबैठोआगो। हालहकीकतपूंछनलागो॥५८॥ साधूबोलेमधुरीबाणी। कहाकहूंकछुअगतनजाणी॥ साँवलपरहुंडीमहल्याये। जाकेदामकछूनाहिंपाये॥५९॥ अबपीछानरसीपैजावा। ईजतउसकीखूबगमावा॥ जबबोलेतुमसारोकाम। साँवलसाहहमारोनाम॥६०॥ बसूं

द्वारकाअतहीछानै । कोइकहरिकोसेवकजानै ॥
हुंडीकादेरुपयालीजै । खरचोखावोजेजनकीजै ॥
॥६१॥ जबसाधूजनभयेखुशाल । हुंडीकाददीनत
तकाल ॥ गाँठीरुपियाबांधाजबै । साँवलकोपूछ
हैंतबै ॥६२॥ काहसाखअरुकहापिछाण । नरसी
कातुमकरोबखाण ॥ साँवलकहैसाधुसुणलीजै ।
नरसामेरासखागिणीजे ॥६३॥ मैंसेवकनरसीको
तनी । उनकीमोपरकिरपाघनी ॥ उनकोबच्योहूं
विकजाऊं। अधिकीऔरकहादरसाऊं ॥६४॥ मन
मेंआयोआनँदउछाह। कागजलिखतहैसाँवलसा
ह ॥ सिद्धश्रीजूनागढ़वास । विराजमानहोहरिके
दास॥६५॥सर्वओपमालायककरूं । तापरश्रीअ
ष्टोत्तरधरूं ॥ जिनकोहैनरसीजीनाम । चरणकम
लपरकरूंप्रणाम ॥६६॥ कृपातुम्हारीसुखहैयहाँ ।
अतिआनंदचाहियेवहाँ ॥ खानपानचितनीकेआ
नू । मुदारडीलांपाछेजानू ॥६७॥ सदाकरतहोहम
परदाया । जाहीभांतिराखियोमाया ॥ हुंडीतुम्हा
रीसाधूल्याये । जिनकोदामदियेपरखाये ॥६८॥
हेतकरोतुमअनंदअपार । हुंडीलिखजोवारंवार ॥
इसविधिकागजलिखयोजबै । सौंप्योसाधूजन

कोतवै ॥६९॥ यहदीजोनरसीकेहात। एकजबानी
कीजोबात ॥ दूजीचितमेंकभीनआनो । साँवल
कोसेवकहीजानो ॥७०॥ ऐसीबातपरस्परभई। वि
दाहुयेसाधूजनसही ॥ फिरतफिरतजूनागढ़आये।
सेंदआगलीचितमेंल्याये ॥७१॥ साधूजनकरआ
घोकीनू । कागजसाँवलतुमकोदीनू ॥ इसकास
माचारतुमबाँचो । मित्रतुम्हारोसाँवलसांचो॥७२॥
कागजलियोजबैततकाल । बाँचतनरसीभयेखु
शाल ॥ धनधनसाधूतुम्हरोहीयो । तुमसाँवलको
दरशनकीयो ॥७३॥ इसविधिकरीभक्तिकीसाह।
हुंडीसिकारीसाँवलसाह ॥ कबीरकेघरबालदल्या
यो । धनाभक्तकोखेतनिकायो ॥७४॥ राणैविष
कोप्यालोभर्यो । चरणामृतकोनामजुधर्यो ॥ मे
ल्योदासीहाथेजबै। मीराबाईपीगैतबै ॥७५॥ सुख
उपज्योपीयतपरमान । सहायकरीजबश्रीभगवान
॥ खीरआरोग्योश्रीयदुराय। नरसीकीहुंडीसिकरा
य ॥७६॥ सोरठा ॥ नगरनागपुरवास, नामजेठ
मलजानिये । हरिभक्तनकोदास, संवतसतरासो
दशऊपरै ७७ समैबैठगुरुवार, जेठशुक्लपक्षअष्टमी।
हरिगुणकियोउचार, जोबाँचैसोखैकुणे ७८ इति।

॥ अथ हनुमानविजयप्रारम्भः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ स्वस्तिश्रीपति पशुपती, गणपतिमृगपतिमाय । श्रीधरजगपति खगपती, वंदौंनगपतिराय ॥१॥ विजैहनूवर्णन करूं, हृदयधनूंश्रानंद । श्रीधरमारुतनंदको, दर्शन परमानंद ॥२॥ छन्दकड़खा ॥ ॐनमःशारदासु मतिमनमेंबसोकुमतिकेश्रंधकोफंदतोड़ै । ह्रींनमः हाँकहनुमानमहावीरकीभीरकादुःखकासुखमोरै ॥ श्रींनमः सर्वदासंपदाश्रापश्रीलक्ष्मीनाथके हाथ पावै । क्लींनमःक्लेशसंतापदुःखदूरकोविजैहनुमान नरनामगावै ॥१॥ प्रथमजानामसूंकामजगमेंकरै दुःखकेहरणसुखकरणगन्ना । बुद्धिकेसिंधुश्रीगिरि सुतापुत्रकेचरणपदशरणकोधरणमन्ना ॥ गुरुपद कञ्जकरिञ्जमकरंदमनभ्रमरज्यूंसुमरकरशीशनाऊं । कोटितंतीसमिलिदान श्राशीशद्योहृदयहनुमान कोध्यानपाऊं ॥२॥ जगतमेंजगमगैज्योतिज्वाला मुखी जाहिपदपङ्कमेंशंकनाहीं । हनुमानहंकारटं कारकी शक्तिगुरु शिष्यकी भक्ति तिहुँलोकमा हीं ॥ चलतहैमंत्रश्रीवचनईश्वरतणांटलतदुखरोग

बहुसुखलतभोगा । हृदैहनुमानकोध्यानमुखगान करमानसन्मानसबकरतलोगा ॥३॥ विजैहनुमान विस्तारससंसारमेंजीतिगढ़लङ्कानिःशङ्कगाऊं । बुद्धि कोहीनअतिदीनगुणतीनपण वीरमहावीरकीभीर पाऊं॥मातश्रीअञ्जनीअंशईश्वरतणोदानवरदान सुरईशदीयो । अरुणप्रतिबिंबकोउदितदृगदेखकर फूलमखतूलज्योंग्रासकीयो ॥४॥ बालिकीविपत्सूं बसेऋषिमूकपैतहांमनधीररघुवीरआए । जहांतुम आयकेभक्तिपदपायकेमित्रसुग्रीवसोंप्रीतिल्याए॥ गएगढ़लङ्कपैपवनकेवेगआकाशमें यक्षिणीत्रास खाई । मुद्रिकाआपरघुवीरकेहाथकीबातकरजान की खबर पाई ॥५॥ बेफिकर बाटिका ताहि खंखा रि अरिपुत्रको मार कपि नामपाये । दनुजदल बोड़ कपि पूंछको मोड़ पुनि मातु ढिग दौड़ पदशीश नाये ॥ होत हाहाकार गढ़लंक दरबार लंकेशकेपासकपिआपआये ॥ बचनसेमोहवशाभ एसबराक्षसालंकपरजारजगजयतिगाए ॥६॥ पडे हैंआयरघुवीरकेपायमेंबीनतीबहुतकरजोरकीनी । लङ्कपुरजारतापुत्रकोमार श्रीजानकीनाथकोखबर दीनी ॥ चढ़ेरणधीरबहुफौजकीभीरतबदाहिनीबाँह

परअनुजसोहै। दक्षणीकोणपरकोपकोनअजअ
सहायकोकरणअवऔरकोहै॥७॥गयोगढ़लङ्कपर
डङ्कहनुमानकोरङ्ककीशङ्कनहिंअंकजेती। द्विविद
सुग्रीवनलनीलऋषिराजसुनिअवरयुवराजहनुमंत
नेती॥ सिंधुपरसेतुधरपाजपाषाणकरनामपरताप
कपिकटकपारा। जयशब्दउच्चरैभूमिसवथरहरैफर
हरैध्वजादशग्रीवद्वारा॥८॥ कोटपरकूदकरकांगरे
कांगरेनागिरैनाडरैकपिजूकूदै। उमँगमनमाँहरघु
नाथकेवनचराजायदावलभयेमहलसूदै॥ रामके
छुवनपदआवहोलङ्कपतिनाथवखसीसदीलङ्कतेरी।
कहतमंदोदरीपीवसुनपापियारामदलरामदलङ्क
घेरी॥९॥ दशाननकोपकरकहतसुनकामिनीभा
मिनीदामनीजातचपला। दामनीचपलघनमेघ
मेंचलपलैभामनीहलपलैभुवनप्रवला॥ सूरनरघर
पलैसमरसंग्राममेंशत्रुकेशीशभुजदंडतोड़ै। कहत
दशग्रीवसुनराजमंदोदरीलाजकेकाजक्यूंमुखमो
ड़ै १० कोटगढ़लङ्कआखातदरियावसेमेरुसमबन्धु
हैकुम्भकर्णा। हारकेजायँगेवनचरामानवायुद्धमें
जीतिहैलंबकर्णा॥ जानकीहेतुउद्योगनृपरामको
मनुजकहजीतिहैंदनुजहीते। कहतदशग्रीवसुन

राजमंदोदरीरामकेअनुजकोतनुजजीते॥११॥राम
कोदासआरामको नाशकरलङ्कसीधामनिष्काम
झांपै। अञ्जनीपूतसोरामकोदूतहैछूतकीहूतसेभूत
कांपै॥ एकहीवनचराकियाविपरीतपुरछांड़अभि
मानसुखठानजीजे। कहतमंदोदरींपीवसुनप्रीतसे
जनकजारामकीभेंटकीजे॥१२॥ नव्योनिशिराज
मनरव्योगौरीशकोकव्योतनुचाहियेरामशस्त्रैं। श
व्योजबसेनमेंघव्योजूमेघमें लव्योज्यूंलेतललकार
वस्त्रैं॥ चापशरकरनमेंधस्योतनुधरनमें वस्योमन
चरणमेंशरणकाजै। जनकजाहीयमेंराजकोबास
रघुनायकेहीयब्रह्मांडराजै॥१३॥ अखिलब्रह्मांडको
भारलेसमरमेंरामकेसङ्गदशग्रीवजूझै। वीरहनुमान
संदेहकरमोहसेनाथकेकानमेंबातबूझै॥ कीजिये
सहायसबसृष्टिकीकृपानिधिदुष्टके बाणहियटालमा
रो। शत्रुकोबद्धकरकार्यकोसिद्धकर भरतकेशीश
परहस्तधारो॥१४॥ वीरकीविनयसुनवीररघुवीर
शरचण्डकोदण्डध्वनिभूमिजागी। ईशकीशक्ति
घननादकेहाथसेअनुजकेआयअनमोघलागी॥
सिंधुकोकूदकरपलकमें पहाड़धरप्राणसंजीवणीवी
रआणी। लषणकोप्राणदारामको नामलेसेनजी

वन्तकरसिंहवाणी ॥१५॥ रामकोअनुजलेधनुष
कोश्रवणलगतानशरचंडरिपुवक्षभेद्यो । रामशर
चण्डलेखैंचकोदंडको मेरुघटकर्णकोशीशछेद्यो ॥
समरमेंरुण्डमुण्डावलीभटनकी सुभटनरवानरशस्त्र
मारैं । चढ़ेनभयानसुरसिद्धगंधर्वमुनिसुमनकी
वृष्टिआशीशधारैं ॥१६॥ होतहुंकारध्वनियुद्धमेंशु
द्धमेरामशरसाधदशग्रीवमास्यो । वीशभुजशीश
दशअङ्गप्रति अङ्गसभकाटलंकेशकोभूमिडास्यो ॥
कस्योनिष्कंटलंकेशहरिदासको चमरशिरछत्रगढ़
लङ्कदीन्हो । रामकीकृपातेंतलसिंदूरलेवीरकोरूप
हनुमंतकीन्हो ॥१७॥ पुष्पकेयानचढ़जनकजावा
मभुजदाहिनीबांहपरअनुजराजैं । भालुकपिकेश
सुग्रीवकोआदिलेअञ्जनीपूतहनुमंतगाजैं ॥ भरत
कोसङ्गलेअवधकोदरशदे राजकोतिलकमुनिराज
कीन्हो । रामकोराजकोतिलकरघुनंदकोदासको
तिलकहनुमंतलीन्हो ॥१८॥ रामकेनामसेसिंधुशि
लातरीरामकोदासआकाशलांघ्यो । रामकेदासके
रामहरिदैवसैंरामकेदासनिजनाममांग्यो ॥ रामके
नामसेपापकोनाशहैदासकेनामसंतापहारी । राम
केदासकीराममहिमाकेरामसेरामकादासभारी१६

रामकोचरितशतकोटिविस्तारहै प्रीतिसोंनित्यऋषिराजगावैं। रामकेचरितकोश्रवणकेकाजश्रीरामकोदूतहनुमंतआवैं॥ वीरमहावीरहनुमानकीहांकसेमरेमरघट्टकेजीवजागैं। डांकिनीशांखिनीवीरवैतालभयमारुतीनामसेभूतभागैं॥२०॥ सालइकबीसउगणीसशतऊपरैजेठबदिदशमिशुभकाव्यगावैं। प्रीतिसोंप्रगटश्रीबरदखेड़ापती रीतिसोंपठनधनधान्यपावै॥ गौड़श्रीधरकहेसलेमाबादमें सुबसशुभनगरकेसर्वलोगा। दुष्टकेचोटदेपुष्टसोंरोटलेभावमेंवशतियेभावयोगा॥२१॥ दोहा॥ श्रीधरविजयकपीशकी, पढ़ैसुनैमनलाय। महावीरखेड़ापती, पूरैमनकाचाय॥२२॥

॥ अथ इक्कीस कबितकी अनुक्रमणिका॥

ॐनमः प्रथमजागजगतमेंविजयहनुबालिकीविपतिबेफिकरबांटी। पढ़ैहैगयोगढ़कोटपरदशाननकोटगढ़रामकोदासधाटी॥ नव्यौनिशिअखिलहीवीरकीरामकोहोतहूँपुष्पकेयानसाटी। रामकानामसेरामकोचरितहैसालइकवीसकाबिकाव्यछाटी

श्रीधर कह्यो जो हनुमान विजय ताको पाठ करै या मंत्रको मयूरके पक्षसों झाड़ देवै तो दृष्टि

मुष्टि भूत प्रेतादिक दूर होयँ, अन्न, धन प्राप्ति होय ग्रहपीड़ा दूरि होय, राजमान्य होय इति फलम् ॥

इति श्रीहनुमानविजय श्रीधरकृतसंपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीकृष्णमंगलप्रारंभः ॥

छन्द ॥ जनमेंश्रीकृष्णमुरारिभक्तहितकारने। मथुरालियोअवतारगोकुलझूलैंपालने ॥ तिथिअष्टमीबुधवारभादौंबदिकीकरी। रोहिणीनक्षत्रआधीरातजनमलियोशुभघरी ॥ धनिदेवकीवसुदेव जहाँप्रभुअवतरे। धन्ययशोदाबाबानन्दमहरघर पगधरे ॥ धन्यधन्यसुरनरमुनिसबजयजयकरैं। दुंदुभिबजतअकाशसुमनवर्षाकरैं ॥ ब्रजबासीगोरसभारिभारिकरिल्यावहीं। दधिकांदौबाबानन्दसुकीचमचावहीं ॥ बाजततालमृदङ्गबीनऔबाँसुरी। निरततगोपीग्वालचरणचितचावरी ॥ यशुमतिचीरपहिरायनौरङ्गभईग्वालिनी। सुन्दरवदनानिहारिचकृतभईभामिनि ॥ श्रीबलभद्रजीकेवीरअसुरदलखण्डना। भक्तवत्सलमहाराजयादवकुलमंडना ॥ शङ्करधरतहैंध्यानसुगोदाखिलावहीं। सोसुखचूमतिमाइसुपलनाझुलावहीं ॥ श्रीनन्दयशुदा

सेनेहचरणचितल्यावहीं । हरिगुणमङ्गलगायगो विंदगुणगावहीं ॥७॥

इति श्रीकृष्णमङ्गलसंपूर्णमस्तु ॥ शुभम् ॥

॥ अथ राधामंगलप्रारम्भः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ चौपाई ॥ बरसानेवृषभानुदुलारी । चन्द्रवदनिमृगलोचनिप्यारी ॥ पङ्कजवपुगुणरूपरसाला । खेलनगईजहाँनँदलाला ॥ निरखरूपनँदजीकीरानी । गोदउठायभवनमेंआनी ॥ छन्द ॥ गोदउठायभवनमेंआनीआभूषणपहिराइयाँ । माँगमुक्तापीतपटउरतारसुमनसुहाइयाँ ॥ बिंदुकाजलकीदईकुलदेवमानमनाइये । सूरकेप्रभुसाजिनखचखकुँवरिघरांपठाइये॥१॥चौपाई॥ आवोमेरीप्राणजुप्यारी । मोरहिखेलनकहाँजुसुधारी ॥ कुमकुमभालातिलककिनकीन्हो । किनमृगमदको बिंदा दीन्हो ॥ छन्द ॥ बिंदा तो मृगमद दियो मस्तक निरख शशि संशय पस्यो । एकशरदनिशिकीकलापूरणमानमनगंधर्वहस्यो॥ हँसिहेरमुखसोंकहतजननीअलकवेणीकेंगुही । सूरकेप्रभुमोह व्यापैसांचि कहमोहेभईउही ॥२॥

चौपाई ॥ नंदजीकेघरनीयकसोहै । मेरोबदनत
नुफिरफिरजोहै ॥ खेलतडोलतनिकटबैसारी । म
नमेंआनंदकियोहैभारी ॥ छंद ॥ आनंदमनमें
कियोभारीनिरखसुखबलिबलिगई। बाबाजूकोना
मलेलेतोहिंहँसगारीदई ॥ पाटीतोपारीसवांरभूषण
गोदलेमेवाभरी । सूरकेप्रभुहर्षहियमेंबिधिनासों
बिनतीकरी ॥३॥ चौपाई ॥ सुनतबातकीरतिमुस
कानी । मैंनँदरानीकेजियकीजानी ॥ मेरीसुता
रूपगुणरासी । कान्हउदासीवनकोबासी ॥ छंद ॥
कान्होउदासीबनकोबासीरंगढंगक्युंबणें । इकर
तनअमोलनीलमणियजुकांचकंचननहिंजुड़ें ॥ ल
लताबिशाखासूंकहैतेरीललीअबतककहँरही । सूर
केप्रभुभवनबाहरजानमतिदीजोसही ॥४॥ चौपाई
दिनदशपांचहटकजबकीन्ही । कुँवरिकोकृष्णदि
खाईआनदीन्ही ॥ मूर्छिपरीजब तनु न सँभास्यो
। लाड़लीकोडस्योरीभुजंगमकास्यो ॥ छंद ॥ ला
ड़लीकूंडस्योभुजंगमकारोगारडूहान्यासबै। नंदनं
दनमंत्रकाजुयहविषदाप्यानहिंदबै ॥ पठयसखी
गोपालकाजैल्यावोआनंदकंदको। सूरकेप्रभुलह
रउतरैमिलैब्रजकेचंदको ॥५॥ चौपाई ॥ करमनु

हारकृष्णजबल्याये। देखतहीविषदूरहोजाये। उठ बैठीमनकियोहैहुलासा॥ कीर्तिचलीअपनेपतिपा सा॥ छन्द॥ कीरतिचलीअपनेपतिपासेप्रीतिरीतिवधारिये। ब्याहकायकमन्त्रकाजोसखियांमङ्गलगाइये॥ वृन्दातोबनमेंरच्योस्वयम्वरकुंजमण्डप ठाइये।सूरकेप्रभुश्यामघनश्रीराधिकावरपाइये॥८॥

इतिश्रीललितराधामङ्गलसमाप्तम्। श्रीराधाकृष्णार्पणमस्तु।

॥ अथ जानकीमंगलप्रारम्भः ॥

छन्द॥ प्रथमसुमिरिगुरुदेवगणेशमनाइये। शारदकोशिरनाइरामगुणगाइये॥ प्रभुगुणसिन्धु समानकौनबर्णनकरै। जैसीजाकीबुद्धितैसिहृदय धरै॥ तबबोलेऋषिरायअवधपुरजाइये। रामभये अवतारयज्ञहितलाइये॥ करिसरयूस्नाननृपतिगृहआइये। बहुबिधिपूजाकरिसिंहासनबैठाइये॥ कहततपोधनअवधपतिदोउकुँवरहमकोदीजिये। यज्ञपूरणहोइहमरोविप्रकोयशलीजिये॥ सुनिऋषिकेबचननृपशोचकीनोघनी। कीजकौनउपाय बातगाढ़ीबनी॥ तबबोलेगुरुवशिष्ठनृपतिशोचन हिंकीजिये। येपूरणअवतारयज्ञहितदीजिये॥ प्रे

मकोउपकारकरनृपसुतदोऊगोदीलिये । महामु
निनकीभेंटलैंआरामअरुलक्ष्मणादिये ॥ रत्नजडित
पटबाँधधनुषलियोहाथसों । कीनोबहुतप्रणामपि
ताअरुमातुसों ॥ नयनरहेजलपूरिपिताअरुमात
के । इनकोनीकेराखियेपुत्रअनाथके । आगेआ
गेविश्वामित्रमहामुनिपाछेलक्ष्मणरामजी । सज
लतनघनश्यामसुंदरसकलपूरणकामजी ॥ राजत
वदनविशालबाँकेदृगसोहना । नाशापरमसुढार
मदनमनमोहना॥ यहछबिबिबिधप्राकररामगुणगा
यहैं । गौरश्यामदोउभ्रातमुनिकेमनभायहैं ॥ उ
ठीराक्षसीघोरमहाप्रभुबाणएकैसोंहनी । विप्रकोम
खकियोपूरणकृपाकरिकौशलधनी ॥ मारीगर्वगुमा
नध्यानहरिसोंधरो । चौकिपरीजियमाँभरामसर
सोंडरो ॥ ब्रह्मअस्त्रकरधारिमारीचसुमारियो ।सौ
योजनतनुपरयोसुरतिबिसराइयो । मारीचटारिसु
बाहुमारेमुनिनकेमंगलभये ॥ सुरबिमाननपुष्पव
र्षैंहर्षजैजैजैकिये । रच्योहैस्वयंवरजनकरामचलि
देखिये ॥ आयेहैंबहुभूपसबैमिमिलिपेखिये । भ
लीकहीऋषिरायजनकपुरजाइये ॥ शिवधनुकठि
नकठोरकोदरशादिखाइये । चरणकीरजलागिअह

ल्यातुरतहींछविसोभरी ॥ करजोरिअंजलिभईठा
ढ़ीश्रीरामकीप्रस्तुतिकरी । चरणपरशिकुलतारितु
रतपतिपुरकोगई ॥ ऐसोकौतुकदेखिनौरनौकाग
ही । टेरतहैंरघुनाथकरिनौकाल्याउरे ॥ वेगिउता
रौजुपारडरौजिनबावरे । करजोरिकेवटयोंकहैप्रभु
वाहनपैपारउतारिहों ॥ शिलाज्योंउड़िजायनौका
कुटुंबकिसविधिपालिहौं । जोनौकाउड़िजायधरि
लागिपाँवकी ॥ तातेदूनीदेहुँगढ़ाइनावकी । केवट
चरणप्रक्षालिश्रीरामबैठाइया ॥ क्षणमहँनौकाखेय
केपारलगाइया । करुणासिंधुदयालुरघुवरतारिदा
सअपनोकियो ॥ योगीसुरनकोहोतदुर्लभसोपद
रीझकेवटकोदियो । नौकाउतरेपारश्रीरामजनक
पुरकोचले ॥ तीरगेशिवधनुषशकुनभेंटभले । व
नउपवनबहुबागविविधबैठकबनी ॥ कंचनहूमेंज
टितहैमरचनावनी । ठौरठौरबहुभूपउपमाजनकपु
रअतिसोहना ॥ बसेजनकपुरलोगसुंदरमदनको
मनमोहना । जनकसभाकेमध्यभूपलाखिछकिरहे ॥
ठगकेलडूखायमनोसबथाकिरहे । पूँछतहैंमिथि
लेशकुँवरऋषिकौनके ॥ पूरणजिनकेभाग्यदोऊ
सुतजौनके । महासुभटरणधीरदोऊगुणलायके ॥

रघुवंशीमहाराजश्रीदशरथरायके। नरनारीयोंकेहैं येदोउवयाकिशोरहैं ॥ शिवधनुकठिनकठोरकैसेकरितोरिहैं। येछविश्यामलगौरहरषिनिरखिकरलीजिये॥ वारैंकामकोटिस्वरूपसुंदरनयनभरिभरिपीजिये। अष्टसौमलकष्टकरिकैधनुसभामध्यआनियो॥ लागेहैंवड़ेवड़ेभूपयोधाधनुषकहुनतानियो। कहतासियासुनतातधनुषप्रणताजिनकरौ॥ नातरतजिहौंप्राणकेजेईबरमैंवरौ। करुणासागररामजीयकीजानिये॥ पीतांबरकटिबाँधिधनुषलैतानिये। जैजै कारभई तिहुँलोकभूपसबैमुरझाइये ॥ श्रीरामचंद्रमुखनिरखिसियाकेसुमनमालपहराइये । सोहतसीतारामकंचनमंडपतरे ॥ शिरसोनेकोमुकुटमंजुमुक्तागरे। राजतअमलकपोलकिमुक्तामोलके ॥ सुंदरलोचनलालकमलजनुभोरके। सुरँगचूनरीनिपटपीतपटछारही ॥ मानोअरुणघनश्यामचपलताह्वैरही। यहभूषणप्रतिबिंबरामछबिउरधरैं॥ मनौयमुनाजलमध्यदीपदीपकवरैं। रामसुजाकेनिकटसियाभुजयोंलसे॥ मरकतमणिकेखंभमनोकंचनकसे। रामभयेतनुगौरसियाभइसाँवरी॥ सादरसोबुधिवन्तवधूभइबावरी ॥ रामभयेघनश्या

मसियाभइदामिनी। मुनिभयेचन्द्रचकोरचकृतभ इभामिनी ॥ पुष्पनवर्षनमेघमुनीसवथरहैं। हो तजनकपुरव्याहराममामारिपरैं ॥ रामसियाकोध्या नसदाशङ्करधरैं। ब्रह्मारूपानिहारिइंद्रपूजाकरैं ॥ सु रनरमुनिआनंदसुमनवर्षाकरैं। ब्रह्मादिकसवदेव मुदितजैजैकरैं ॥ तुलसीसीतारामसहितउरआ निये। रामभजनविनुजन्मसुमिथ्याजानिये ॥

इति जानकीमङ्गल सम्पूर्णम् ॥

गोपियोंकाउद्धवप्रतिउत्तरसूरदासकृत

उद्धव कमलनयन बिनु रहिये ॥ इक हरि हमैं अनाथ करि छांड़ी दुजे विरह किमि सहिये ॥ जैसे ऊजर खेरे की मूरत को पूजे को मानै ॥ ऐसी हम गोपाल बिन ऊधो कठिन व्यथा को जानै ॥ तनु मलीन मन कमलनयन सों ता मिलवे की आशा ॥ सूरदास स्वामी बिनु देखे लोचन मरत पियास ॥१॥ इति ॥

॥ श्रीकृष्णचन्द्र की गोपी प्रति हांसी ॥

ऐसे जनि बोलो नँदलाला। छांड़िदेहु अँ-

चरा मेरो मोको जानत औरसि बाला ॥ बारबार मैं तुमहिं कहति हौं परिहौ बहुरि जञ्जाला । यौवन रूप देखि ललचाने अबहीं ते यह ख्याला ॥ तरुणाई तनु आवन दीजै कत जिय होत विहाला । कृष्णविहारी उर ते कर टारहु टूटैगी मोतिन माला ॥१॥ इति ।

वृषभानुलली का यशोदाप्रति उराहना

॥ कवित्त ॥

मारवन चुरावै मेरा दही ढरकावै कान्ह गारी मोहिं गावै करै निज मन मानकी । अङ्ग माहिं लपटिकै अँगिया को नोचिलेत यशोदाजी सांची कहौं बात मैं प्रमान की ॥ यामें झूठी है न सौंह ककाकी कृष्णबिहारी सुनि नन्दरानी कह्यो ऐसी वृषभानकी । मैं नहीं प्रतीति करौं तेरी है सहज बानि मुरि मुसकानि औ ककाकी सौंह खानकी ॥

॥ गंगाजीकी स्तुति ॥

कवित्त

छूटीशिव शीशतेप्रचण्डतेज धाराधँसी काटत अघऔघनकेपातकाहितैहितै ॥ कृष्णबिहारी गङ्ग तेरीही तरङ्ग देखि गये सुरलोक सब पातक विते

चितै ॥ सुरसरि महारानीकी महिमा बखानै कौन वेद और पुराण यश गावत नितै नितै । यम आगे पाप रोवें पाप आगे यम रोवें चित्रगुप्त आप रोवें कागज चितै चितै ॥१॥ ॥ इति ॥

॥ अथ विज्ञाननौकाप्रारम्भः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ तपोयज्ञदानादिभिःशुद्धबुद्धिर्विरक्तोनृपादौपदेतुच्छबुद्ध्या । परित्यज्य सर्वंयदाप्नोतितत्वंपरंब्रह्मनित्यंतदेवाहमस्मि ॥१॥ दयालुंगुरुंब्रह्मनिष्ठंप्रशांतं समाराध्यमत्याविचार्य स्वरूपम् । यदाप्नोतितत्वंनिदिध्यासविद्वान्परंब्रह्म० ॥२॥ यदानंदरूपंप्रकाशस्वरूपंनिरस्तप्रपंचंपरिच्छेदशून्यम् । अहंब्रह्मवृत्यैकगम्यंतुरीयंपरंब्र० ॥३॥ यदज्ञानतोभातिविश्वंसमस्तंविनष्टंचसद्योयदात्मप्रबोधे । मनोवागतीतंविशुद्धंविमुक्तंपरंब्रह्म० ॥४॥ निषेधेकृतेनेतिनेतीतिवाक्यैः समाधिस्थितानांयदाभातिपूर्णम् । अवस्थात्रयातीतमद्वैकमेकंपरंब्र० ॥५॥ यदानन्दलेशैःसमानंदविश्वंयदाभातिसत्वे तदाभातिसर्वम् । यदालोचनेरूपमन्यत्समस्तंपरं ब्रह्म० ॥६॥ अनंतंविभुंसर्वयोनिंनिरीहंशिवंसङ्ग

हीनंयदोंकारगम्यम् । निराकारमत्युज्ज्वलंमृत्यु हीनंपरंब्रह्म०॥७॥यदानंदसिंधौनिमग्नःपुमान्स्या दविद्याविलासःसमस्तप्रपञ्चः । यदानस्फुरत्यद्भु तंयन्निमित्तंपरंब्रह्म० ॥८॥ स्वरूपानुसंधानरूपांस्तु तिंयः पठेदादराद्भक्तिभावोमनुष्यः । शृणोती हवानित्यमुद्युक्तचित्तोभवेद्विष्णुरत्रैववेदप्रमाणात् ॥९॥ विज्ञाननावंपरिगृह्यकश्चित्तरेद्यदज्ञानमयंभ वाब्धिम् । ज्ञानासिनायोहि विच्छिद्यतृष्णांवि ष्णोःपदंयातिसएवधन्यः ॥१०॥

इति श्रीविज्ञाननौकासंपूर्णम् ॥

॥ अथ सुदामाजीकीबाराखड़ी ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ककाकमलनैननारायण स्वामी । बसैंद्वारकाअंतर्यामी ॥ वासुदेवसंकर्षण छाजैं । प्रद्युमनअनिरुद्धविराजैं ॥ ककाकलियुग नामअधारा । प्रभुसुमिरौउतरोभवपारा ॥ साधुसंग तिकरिहरिरसपीजे । जीवनजन्मसफलकरिलीजे ॥ ॥१॥ खखाखोजोसकलजहाना । जाकोगावैंवेद पुराना ॥ निर्भयनामहरीकोलीजे । चरणकमल कोध्यानधरीजे ॥२॥ गगागुणगोविंदकेगावो ।

मायाजालभूलिजनिजावो ॥ धनयौवनतनुतुरँग पतङ्ग । छिनमेंक्षारहोतयहअङ्ग ॥३॥ घघाघट घटबोलेभाई । जलथलमेंप्रभुरहेसमाई ॥ ऊंचरुनी चज्ञानकरिदेखो । एकैब्रह्मसकलमेंलेखो ॥४॥ न नानिमिषखोजकरिदेखो।दूजेऔरनहींकोइलेखो॥ सातोंद्वीपअवरब्रह्मांडा । नामहिछायरह्योनवखं डा ॥५॥ चचाचितनिश्चयकरिराखौ । मिथ्याबात झूठमतिभाखौ ॥ सत्यशब्दतपहोइप्रमाना । झूठ वचनसोपापसमाना ॥६॥ छछाछलबलतजोवि कारा । निर्मलनामजपौयकसारा ॥ कामक्रोधको तजोप्रसंगा । सदारहोसंतनकेसंगा ॥७॥ जजा जपोजगतपतिईसा । जाकोध्यावैंसुरतेतीसा ॥ निशिवासरजुरहोलवलाई । हरिपदकमलसदासु खदाई ॥८॥ झझाझेरनकीजोभाई । शिरपरका लरह्योमड़राई । चेतनाहैहरिशरणैरहिये ॥ काल त्रासकाहेकोसहिये ॥६॥ ननानिमिषनिमिषहरि रूपनिहारो । चिततेध्याानपलकनहिंटारो ॥ आ ठौंयामरहौलवलाई । चित्तचरणमेंरहोसमाई १०॥ टटाटोरुजगतकोनाता। नहिंकोइमातुपितासुतभ्रा ता ॥ हरिसोंहितूनहींकोइअपना । जगव्यवहार

रैनिकोसपना ॥११॥ ठठाठाकुरपरमसनेही। जिन
एदीनीसुन्दरदेही ॥ नरदेहीकोलाहोलीजै। प्रेम
मगनह्वैहरिरसपीजै ॥१२॥ डडाडामाडोलचित्तज
निकरो। हृदयेध्यानहरीकोधरो ॥ आनदेवकाहे
कोध्यावो। दृढ़विश्वासविष्णुगुणगावो ॥१३॥
ढढाढूंढ़नकोकहँजइयेभाई। रोमरोमप्रभुरहेसमाई॥
पिंडब्रह्मांडरहोसबपूरा। सदानिकटहरिनाहिंनदू
रा ॥१४॥ ननानामहरीकोलीजै। हरिभक्तनकी
सेवाकीजै ॥ साँचीभक्तिभगवानकोभावै। प्रेमस
हितरसनागुणगावै ॥१५॥ ततातेरीसफलकमाई।
नरदेहीसुमिरनकोपाई॥ हरिभजगर्भवाससेछूटो।
रामनामएमोधनलूटो ॥१६॥ थथाथोराजीवनभाई
। हरिबिनजन्मअकारथजाई ॥ चेतनह्वैहरिनाम
उचारो। तनकोत्रिविधातापनिवारो ॥१७॥ ददा
देखतहीजगकोव्यवहारा। मायाजालबँध्यासंसा
रा ॥ बंधनतेछूटनजोचहिये। शरणजाइसंतनकेर
हिये ॥१८॥ धधाधरणीधरहिरदैधरभाई। संतनके
प्रभुसदासहाई ॥ सदासमीपनिमिषनाहिंटरहीं।
भक्तजनौंकीसेवाकरहीं ॥१९॥ ननानेहहरीसोंला
वो। प्रेममगनरसनागुणगावो ॥ दुविधाभर्मतजो

मनभ्राता । संतजननकोकीजैसाथा ॥२०॥ पपा
परेपरेसबजन्मगमायो । गुणावादप्रभुकोनहिंगा
यो ॥ मायाभर्मभूलिरह्योअन्धा । जन्मगमायो
करिकरिधंधा ॥२१॥ फफाफिरिफिरिपरेमोहकेफंदा ।
अजहुँनचेतैमूरखअंधा ॥ गुरुचरणनकोधरुमन
आसा । हरिभजमेटौयमकीत्रासा ॥२२॥ बबाबो
लोअमृतबानी । स्नेहप्रीतिरसनागुणसानी ॥ ह
रिहीराहिरदयधरिराखौ । कटुकवचनमुखतेजनि
भाखौ ॥२३॥ भभाभूल्यौमनसमुझावो । जासों
भवजलफेरिनआवो ॥ ऐसीभक्तिकरोमनमेरा ।
जरामरनह्वैनहिंतेरा ॥२४॥ ममामोहजालभव
सागरभारी । भीमरकालमीनसंसारी ॥ जाललि
येयमफिरतअहेरा । हरिविमुखनपरदेतदरेरा २५॥
ययायहअवसरनहिंवारम्वारा । तातेपुनिपुनिकर
तपुकारा ॥ मानवमित्रतुमचतुरसुजाना । विषर
सछांड़िभजोभगवाना ॥२६॥ ररारटनहरीसोंला
वो । हीराजन्मजानिवादिगमावो ॥ ऐसोहीराजो
गमजाई । अवसरचूकेफिरपछिताई ॥२७॥ लला
लालअमोलकमनमलहरना । तनुभंडारजतनक
रिधरना ॥ प्रभूलालगुरुदेवलखाया । तृष्णालोभ

सबदूरिगमाया॥२८॥ववाबारबारनावौंपदमाथा। उनपदकमलचरणचितदाता ॥२९॥ ससासतगुरु कीकाकरौंबड़ाई। महिमामुखतेवरणिनजाई॥ चितलागोसतगुरुकेचरणा। रसनाएककहाँलगि वरणा ॥३०॥ षषाखींचिलियोगुरुअपनीओरा। मायाफंदपलकमेंतोरा॥ निर्भयभयेपापसबत्यागे। जबगुरुचरणोंमेंचितलागे ॥३१॥ शशाशोचवि चारमिटेजियजबते। दीपकज्ञानदियेगुरुजबते॥ नाश्योतिमिरभयोपरगासा। मानौरविपूरणकरि भासा॥३२॥ हहाहरिगयेपापपराचितआपू। श्री गुरुचरणकमलपरितापू॥ जैसेधुंधचहूँदिशिघेरा। प्रगटभानुजबभयोउजेरा ॥३३॥ लेवेकोहरिजाको नामा। देवेकोअन्नदानसमाना॥ धरनेकोप्रभुजी कोध्याना। सेवनकोगुरुचरणसमाना ॥३४॥ छ छाछाँड़नाविषयबदनसोंचाहिये। संतगुरुचरणनि होरहिये॥ नाममधुररसपिवोसुजाना। गर्भवास नहिंहोइपयाना ॥३५॥ बाराखड़ीअनन्तगुणगा वों। सबसंतनकोशीशनमावों॥ दीनपतितहै दाससुदामा। नमस्कारगुरुदेवसुनामा ॥३६॥

इति श्रीसुदामाजीकीबाराखड़ी समाप्ता॥

॥ अथ षट्त्रिंशवाजित्राभिधान ॥

छप्पय–

मंडल बीन रबाव अनोप तंबूर उपंगह। वर बस्तु सुरद पिनाक कुमायच पुंग सुरंगह ॥ बंसी परिगह बांस कानुटक ताल सुपिंगी। तूर भेर सहनाय पावरण सँग दरसिंगी ॥ करनाट पनव आनक मुरजडफ सुडाक डमरूलजे। जलतरंग झांज मंजीर मिलि षटहत्रिंश बाजनबजे ॥

॥ षट्त्रिंश आयुधाभिधान ॥

चक्र शूल धनु बज्र बाण कैबान तुफंगह। परशु कटारह छुराशेल खेटक गदखंगह ॥ तोमर पाश भुशुण्डि बांक खंजर जंबूलट। यंत्र सु अंकुश भाल हलह मूशल खगवरबट ॥ जंजाल जरह गुर्सा गुजर दाव पटा पिस्तोल लिय। आयुध षड़ांग षट्त्रिंशयुत नीतपालसेना चलिय ॥

॥ गणेशस्तुति ॥

सवैया।

शैलसुतासुत सिंदुर आनन संकट गंज सदा शिवनंदा। एकरदी सुरदी बरदीवर बंदन भाल

बिराजित चंदा ॥ मूषकरूढ़ प्ररूढ़ महातम गाय क मूढ़ गिरागुण छंदा। नायक देव महासिधि दायक पायक पच्छ बिनायक बंदा ॥

॥ मन शिक्षा ॥

कवित्त

छारसम काया सब माया धूम छाया जैसी तमोगुण तजरे तू तजि देवागारी को। तजिदे बड़ाई तू आदर अनादर तज तज शोक मोह चिंता झूठ नेहनारीको ॥ तप जप दान पुण्य बिना किये बैठ रह्यो जानत न तेरे शिर दण्ड दण्ड धारीको। अहो मनमूढ़ तोसों कहा कहों बेर बेर राखरे भरोसो एक कुंजके बिहारीको ॥

॥ राधिकाछबिबर्णन ॥

सवैया

साजिशृंगार चढ़ी है झरोखन ठाढ़ी है भानु सुता सुखदाई। हारनके दबि भारनसे कुच दोउ नपाई मनो लघुताई ॥ चूरन भार उतार मनो मनमत्थन हत्थ किये सुघराई। सोहत है त्रिवली सुमनो कचके लचके कटिहे दरकाई ॥

॥ नवग्रह फलम् ॥

॥ शनिफलम् ॥

छन्दत्रोटक

चतुरं सुवसे खगमंद जिहीं, अति उन्नत थान हरम्य तिही । उन ग्राम घने बनबागलता, सबसे अरुची मन व्याकुलता ॥

॥ भृगुफलम् ॥

भृगु सप्तमथानक जासुरहैं, अतिचतुरता पति तासु कहै । वह दंपतिको मन एक सदा, सुख होय लखे अलखे दुखदा ॥

॥ केतुफलम् ॥

षटमे गृहकेतु जिहीरहतं, अति चातुरताइ उदारचितं । तनु व्याधि न व्यापततासुयथा, भय आतुर मानसि आधिविथा ॥

॥ भौमफलम् ॥

सपतंगृहमें पुनिभौम रहैं, मन कंतमिलें तनु ना मिलि है । बिरहा तनु तापस आतुरता, सुरतं न थियं सुरता सुरता ॥

॥ बुधफलम् ॥

नवमें शशिसून सुशीलवती, तपतीरथ सेवित पुण्यमती । गुणवान सुमंत्र संगीत पढ़े, रति संमृति देवनसेव बढ़े ॥

॥ रविफलम् ॥

दशवें रवि उच्चग्रहे गति है, परतापबड़ो दिन ही प्रति है । विविधं वह राजसुनीतलहे, क्रमकी रति योग विशेषकहे ॥

॥ शशिफलम् ॥

एकदशम जासुशशी सुबसे, रतनांबरईभ अनेकअसे । बुधि दीनदयालुकमी न धनं, शुचिता रुचि प्रेम प्रकाश मनं ॥

॥ राहुफलम् ॥

बसि द्वादश राहुरह्यो जिनको, अनुराग विराग बढ़े तिनको । भयभीत सुचित्त नहीं थिरता ग्रह एफल जातक उच्चरता ॥

॥ षटऋतु बर्णन ॥

॥ शरदऋतु वर्णन ॥

दोहा—अम्बरजरी सुसोसनी, पना सु भूषण

धार। चंद्रोदय जल कमलछवि, शरद सुकरतबिहार॥

॥ हेमंतऋतु वर्णन ॥

नील निचोल सु अंबरी, माणिक भूषण सार।
अतिहि उष्ण उपचार तन, हेमँत करत बिहार ॥

॥ पुनः हेमन्तऋतु वर्णन ॥

छप्पय ॥ भूमि भवनमय भोग तैल मर्दन तनु तापन । है जलकेलि हमाम तप्त भोजन तरुणी तन ॥ बहु मृगमद तंबोल तल्पघन तूल तलाई । सुजनी सुभग दुसाल सदल सरपाउ सुहाई ॥ शुभमाणिक भूषण सकल कोक कुतूहल रसकबित। विलसैविलासनिशिदिन विविध रससागर हेमन्तऋत ॥

॥ शिशिरऋतु वर्णन ॥

दो०—अंबरसरपीसितवसन, नीलमणीसुअपार । दंपति प्रेम अनन्त उर, शिशिर सुकरत बिहार ॥

॥ बसंतऋतु वर्णन ॥

श्वेत विचित्रत तनु वसन, सकल अंग शृंगार।
केसर चन्दन कुमकुमा, करत बसंत बिहार ॥

॥ वर्षा वर्णन ॥

सुही कसूँबी पट सकल, नीक जटित शृंगार। अटा घटा निरखत नवल, वर्षा करत बिहार॥

॥ ग्रीष्मवर्णन ॥

चेल गुलाबी केसरी, सब शीतल उपचार। मुक्ता मंडन बाग बसि, ग्रीषम करत बिहार॥

॥ स्वरनाम ॥

छंद चन्द्रायणा—षर्ज ऋषभ गंधार सुमध्यम जानिये। पंचम धैवत और निषाद बखानिये॥

॥ सप्तस्वर अनुमान भेद ॥

छप्पय ॥ वरहि बान सुर षर्ज ऋषभ चातकी उचारन। अंगुचार गंधार मध्यकुरची कल धारन॥ पंचम कोकिल शब्द बाजध्वनि धैवत जाने। घन गर्जन सुनिषाद सप्तसुर भेद बखाने॥ षट सुर फिरन्त षाड़व वहें पंचसु ओडव धारिये। स्वरसप्तसोय पूरन कहे रागन धाम बिचारिये॥

॥ सप्तरागोत्पत्ति भेद ॥

भैरवहरतेभयो मालकोशहु विष्णुमुख। ब्रह्म गातहिंडोल और दीपक दिनमणिरुख॥ शेषहु

तेश्रीराग मेघगाजत अकाशहुव । इक इक इक प्रतिराग पञ्च रागिनी प्रकट भुव ॥ सुत पञ्च पञ्च प्रतिरागनी पञ्च पञ्च पुत्री कहे । विस्तार बढ्यो सम्बन्धसे तीनिलोक फैल्यो वहे ॥

॥ श्रीभैरवपञ्चरागिनी नाम भेद ॥

चौपाई ॥ भैरूं राग भैरवीनारी । वैरारी माधवी विचारी ॥ सिंधू बंगाली सुकहावे । यहैरीत संगीत बतावे ॥

॥ श्रीमालकोशपञ्चरागनी ॥

मालकोशहूकी यह बाला । टोडी गोडी रूप रसाला ॥ पुनि गुणकलीखमायचिनारी । कुंकुम युक्त पंचो हितकारी ॥

॥ हिंडोर पञ्चरागनी नामभेद ॥

चौ० ॥ रामकली देसास सुवामा । ललता अरु बिलावली नामा ॥ पटमञ्जरी पंचमी नारी । एहिंडोरकी आज्ञाकारी ॥

॥ दीपकपंचरागनी नाम ॥

देशी और कमोद कहावे । नरकेदारदार गुण गावे ॥ बहुरि कान्हराऋपविसाला । यहैपंचदीपककीबाला ॥

॥ श्रीरागपंचरागनी ॥

मालसिरी मारू शुभनामा । धन्यासरी वसंत सुवामा ॥ आसावरी युक्त यह जानी । श्रीराग के पंच मनमानी ॥

॥ मेघरागपंचरागनी नामभेद ॥

टेक मलार गुञ्जरी नारी । पुनि भूपाली अति हितकारी ॥ देशकार युत पंचगमाई । मेघराग हूके मनभाई ॥

॥ दशदोषाभिधान ॥

छप्पय ॥ प्रथम काकसुर कहत तालहीनहु सुरभङ्गा । भ्रूमुख ग्रीवडुलंत और पुनि डोलत अंगा ॥ सुरभेदन जानंत और सुरग्रहत कपाल हि । समय बिना संगीत राग उपजे न रसालहि ॥ दश दोषराग संगीतमत गावत गुणी क्चाव हीं । श्रोताप्रवीनतबसुखलहैंमंगन मोजसुपावहीं॥

॥ शठलक्षण ॥

मुख सुमिष्ट हृदिकपट अडर अपराधि सदाही । स्थूल भुजाउर पृथुल श्रोणि बड़ तनु कठुराही ॥ कूर्मोदर दृग चपल क्रूर देही लज्जातनु । लंपट

काम सुकेल अतिहि आतुर मर्कट मनु ॥ साँचहि समान क्रूरहि कहे निज स्वारथ नितही चहे। अतिहानिवृद्ध अनुमाननह शठ सुजानतासेकहे॥

॥ अथ शिवस्तुतिअष्टकप्रारंभः ॥

श्रीः ॥ असारेध्यानशिवहरीहरकाहरकरआस बाघंबरका । अगड़बंअगड़बंडिमाकडिमाकडिम् बाजेडमरूशिवशंकरका ॥ टेक ॥ अङ्गविभूतिल गावसदाशिवहाथलियेनिशिदिनगोला। कैलास छोटकरलोटमशानमोंऐसाहैशङ्करभोला ॥१॥ असारे० ॥ अगड़ ॥ खोपरीमेंभोजनकरतागिरिजा हैसोअर्द्धंगा। सुरनरमुनिवरध्यानधरैंकोइदेवताहै अद्भूता ॥२॥ असारे० ॥ अगड़० ॥ त्रिशूलसे त्रिपुरासुरमास्योतीनलोकमेंअधिकारी। नागनके राकुण्डलविराजैचढ़ैबैलकीअसवारी ॥३॥ असारे० अगड़० ॥ कुंडीसोंटालेकरगौराघोटपिलावैंनिशि दिनभंगा। गलेरुण्डकीमालविराजैंजटाजूटशिरहैं गंगा ॥४॥ असारे० ॥ अगड़० ॥ विषसेकंठहुवा जबनीलारामनामसुखसेबोला। ठंढाशीतलहर हुवाजबप्रेममगनमेंशिवडोला ॥५॥ असारे० ॥

अगड़०॥ जोकोइमाँगेउनकूँदेवेऐसाहैशङ्करभोला।आकधतूरोआपआरोगे दूधभातकोइकूंदेता॥६॥ असारे० ॥ अगड़०॥ शृङ्गीशेलीशिवकूंसोहैहाथलियाझोलीचंगा । बहुरंगकरशिरछत्रविराजैओढ़ेगोदड़ीनगरंगा ॥७॥ असारे० ॥ अगड़० ॥ यकरानीतोरेगोरापार्वति दूजीरानीशिवअर्द्धंगा। तीजीरानीअसलाभिलादेजटाजूटशिरहैगंगा ॥८॥ असारे० ॥ अगड़ ॥ यकरानीतोरेचंदनघस्तीदूजीजलभरलावेगी । तीजीरानीधूपदीपलेचौथीज्योतिजलावेगी ॥९॥ असारे० ॥अगड़०॥ तुकारामउस्तादनाममोसाहेबहैसोबहुरंगा । देखदाखलेपोथीपुराणमेंमतकरबाताँअड़भंगा ॥१०॥ असारे० ॥ अगड़बंअगड़बंडिमाकडिमाकाडिम्बाजेडमरूशिवशङ्करका ॥

इति शिवस्तुतिअष्टकसमाप्तम् ॥

॥ अथ संकटमोचनहनुमानाष्टक ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ मत्तगयंदछंद ॥ बालसमयरविभक्षलियो तबतीनहुलोकभयोअँधियारो । ताहिसुँत्रासभईजगकोयहसङ्कटकाहुसुँजातनटारो

॥ देवनिआनिकरीविनती तबछाँड़िदियोरविकष्ट निवारो । कोनहिंजानतहैजगमेंकपिसङ्कटमोचन नामतुम्हारो ॥१॥ बालिकित्रासकपीशवसैगिरिजा तमहाप्रभुपंथनिहारो । चौंकिमहामुनिशापदियो तबचाहियकौनाविचारविचारो ॥ कैद्विजरूपलि वायमहाप्रभुसोतुमदासकुशोकनिवारो । कोन०॥ ॥२॥ अंगदसंगगयेसियखोजनवैनकपीशतवाहिं उचारो । जीवतनाबचिहौहमसोंजुबिनासुधिलेइ यहाँपगुधारो ॥ हेरिथकेतटसिंधुसबैतबलेसियकी सुधिप्राणउबारो । कोनहिं० ॥३॥ रावणत्रासदई सियकोतबराक्षसिसोंकहिशोकनिवारो । ताहिस मयहनुमानमहाप्रभुजायमहारजनीचरमारो ॥ चा हातिसीयअशोकसुआगिसुदैप्रभुमुद्रिविषादनिवा रो।कोनहिं०॥४॥बाणलग्योउरलक्ष्मणकेतबप्राण तजेसुतरावणमारो । लेगृहवैद्यसुषेणसमेततबीगि रिद्रोणसुबीरउपारो ॥ आनिसजीवनिहाथदईतब लक्ष्मणकेतुमप्राणउबारो।कोनहिं० ॥५॥ रावण युद्धअजानाकियोतबनाग किपाशसबैशिरडारो । श्रीरघुनाथसमेतसबैदलमोहभयोतबसंकटभारो ॥ आनिखगेशतबैहनुमानजुबंधनकाटिसुत्रासनिवा

रो। कोनहिं० ॥६॥ बंधुसमेतजबैअहिरावणलैरघु नाथपतालसिधारो। देविहिपूजिभलीविधिसोंब लिदेहुसबैमिलिमंत्रविचारो॥ जायसहायभयेतब हींअहिरावणसैन्यसमेतसँहारो। कोनहिं० ॥७॥ कार्यकियेबड़देवनकेतुमवीरमहाप्रभुदेखविचारो। कौनसुसंकटमोरगरीबकूंजोतुमसोंनहिंजातहिटारो ॥बेगिहरोहनुमानमहाप्रभुजोकछुसंकटहोयहमारो। कोनहिं० ॥८॥ दोहा ॥ लालदेहलालीलसै, अरुधरिलाललँगूर ॥ वज्रदेहदानवदलन, जय जयजयकपिशूर ॥१॥ यहअष्टकहनुमानकी, विर चितुलसीदास ॥ गंगादासजुप्रेमसों, पढ़ेहोय दुखनास ॥२॥

इति श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृतसङ्कट मोचनहनुमानाष्टकसम्पूर्णम् ॥

॥ पुष्पाबिननलीला वर्णन ॥

फूल बिनन नहिं जाउँ सखीरी हरिबिन कैसे बीनों फूल। सुनरी सखी मोहिं राम दुहाई फूल लगत तिरशूल॥ वे जो दिखियत राते राते फू लन फूली डार। हरिबिन फुलझारीसी लागत झरि झरि परत अँगार॥ कैसेके पनिघट जाउँ

सखीरी डोलों सरिता तीर। भरि भरि यमुना उमड़ि चली है इन नयननकी नीर॥ इन नयननिके नीर सखीरी सेज भई घरनाउँ। चाहतहौं याही पर चढ़िकै श्याम मिलनको जाउँ। प्राण हमारे बिन हरिप्यारे रहे अधरन पर आय। कृष्ण बिहारी के प्रभुसों सजनी कौन कहै समझाय इति॥

॥ प्यारेका बिदेशपयान बर्णन ॥

कवित्त

रोकहिं जो तो अमंगल होय औ प्रेमनशै जो कहैं पिय जाइये। जोकहैं जाहु न तो प्रभुता जो कछू न कहैं तो सनेह नशाइये॥ कृष्ण बिहारी कहैं तुम्हरे बिन जोहै नतो यह क्यों पतिआइये। ताही पयान समै तुम्हरे हम का कहैं आपै हमैं समझाइये॥१॥ इति॥

॥ हनुमानयुद्ध प्रशंसा॥

कवित्त

नाचि नाचि कूदि कूदि किलकि किलकि कपि उछरि उछरि राहलेत आशमानकी। बलकि बलकि बल करि करि छरि दरि छरत छरेद भेद कृतगत भानकी॥ ग्यालनसों रुगड अरु मुगडन

सों मुण्ड करि भारीभट झुण्डन घुमण्डन मारु धानकी। शाबस कहत राम हिये हरषात जात देखो बीर लषण लड़नि हनुमानकी ॥१॥ इति॥

॥ अथ पुरातनकथा प्रारम्भः ॥

चौपाई ॥ पौढ़ौलालकहतमहतारी। कहौंक थाइकश्रवणनिप्यारी ॥ हर्षेहयसुनिमनवनवारी। पौढ़िगयेहँसिदेतहुँकारी ॥ नगरएकरमणीकसुहा वन। नामअवधअतिसुंदरपावन॥ बड़ेमहलतहँ अगमअटारी। सुंदरबिशदचारुगचढारी ॥ बहुत गलीपुरबीचसुहाई। रहेंसदासबसुगंधसिंचाई ॥ भांतिभांतिबहुहाटबजारू। अतिसुंदरजनुबिश्व शृंगारू॥ तहांनृपतिदशरथरजधानी। तिनकेना रितिनिपटरानी ॥ कौशल्याकैकयीसुमित्रा। तिन जन्मेसुतचारपवित्रा ॥ रामभरतलक्ष्मणरिपुहंता। चारौअतिसुंदरगुणवंता॥ तिनमेंएकरामव्रतधारी। अतिसुंदरजनकेहितकारी ॥ बिश्वामित्रएकऋ षिराई। तिनाहिंसतावौंनिशिचरआई ॥ तिननृप सोंढैसुतालियेमांगी। अपनीरक्षाकेहितलागी ॥ ॥ दोहा ॥ रामलषणऋषिलैगये, दनुजहतेतिन

जाय ॥ ऋषिदीनीविद्याबहुत, तिनकोअतिसुख पाय ॥ सोरठा ॥ तहांजनकइकभूप, धनुषयज्ञता नेरच्यो। कन्यातासुअनूप, जुरेतहांभूपतिअमित॥ चौपाई ॥ ऋषिलैगयेकुँवरतहँदोऊ। जनकरायस नमानेसोऊ ॥ धनुषतोरिभूपनमुखमारी। रामबि वाहीजनककुमारी ॥ चारहुकुँवरव्याहतहँआये। भयेअवधपुरअनँदबधाये॥ रामहिदेनलगेनृपराजू। सज्यो सकलअभिषेकसमाजू ॥ ताहीसमयकै कयीरानी। चेरीकीमतिसोंबौरानी ॥ वचनमांगि राजासोंलीनो। बनकोवासरामकोदीनो ॥ सुनि पितुबचनधर्महितधारी। नारीसहितभयेबनचारी॥ तिन्हैंचलतभ्रातासँगलाग्यो। उनकेजातपितात नुत्याग्यो ॥ चित्रकूटभयोभरतामिलनजब। दैपद पांवरिकृपाकरीतब ॥ युवतीहेतुकपटमृगमारा। राजिवलोचनरामउदारा ॥ रावणहरणकियोतब नारी ॥ सुनतश्यामघननींदबिसारी। चौंकिकह्यो लक्ष्मणधनुदेहू ॥ देखभयोयशुदाहिसंदेहू ॥ छंद॥ संदेहजननीमनभयोहरिचौंकिधौंकाहेपस्यो। कहुँ दीठखेलनमेंलगीधौंस्वप्नमेंकान्हरडस्यो ॥ बहुभां तिदेवमनायपढ़िपढ़िमंत्रदोषनिवारई। लैपियंति

पानीवारिपुनिपुनिराइलोनउतारई ॥ दोहा ॥ सांझहितेबिरुझायहरि, करींचंद्रहितआरि। झिझक उठ्योधौंताहिते, रह्योसुरतउरधारि॥ सोरठा ॥ बड़भागिनिनँदनारि, महिमावेदनकहिसकैं। हरिको बदननिहारि, बिसरावातित्रयतापदुख ॥

इति पुरातनकथालीला सम्पूर्ण ॥

॥ अथ रागलावनीछंदचौपैया ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ जयतिजयतिजैजयतिजयतिजैजैरामानुजसुकृतपालम्। जययतिपतिजैजगदीश्वरजैजगकारणकरुणालयम् ॥ टेक ॥ वंदेअस्मद्देशिकगुरुश्रीरामानुज निजजनपालम् । जगातजनमीयतिराजयतनकारि कृतसुबोधकृतजगजालम् ॥ जिहिजिहियुगबिनशतसुधर्मजगहोइअधर्मअघविकरालम् । तबतबप्रकटस्वधर्मथापिअनधर्मउथापिततत्कालम् ॥ निजआश्रिततिहिदेतअभयपददुष्टसमूहनकहँकालम् ॥ जयति० ॥ ॥ १ ॥ सतयुगमेंशेषावतारकृतसहसरसनधृतमुखआलम् । त्रेतामेंलक्ष्मणलक्षयुतधरिशरीरखलदलकालम् ॥ द्वापरमेंबलरामधामबलधारिवपुबहुबलिबलशालम् । कलियुगमध्यप्रगटरामानुजकृत

प्रवर्तशुभश्रुतिचालम्॥शाक्तजैनशांकरकृपालमत मत्तगजगंजनहरिबालम् ॥ जयति० ॥२॥ शीर्ष शिखासित वसनसुवेष्टित शशिसममुखदृगसुवि शालम्। उदितप्रातमार्तंडअखंडितऊर्ध्वपुंड्रविल सिभालम् ॥ यज्ञसूत्रकटिसूत्रमेखलाकंठनलिनतु लसीमालम्। योगयुक्तियुतयज्ञक्रियामययज्ञरूप जनभयटालम् ॥ काषांबरकौपीनकमंडलुकरात्रिदं डतरमृगछालम्।॥ जयति० ॥३॥ करिदिगवि जैविजैकिये दुरजनआपुअजे अविगतलालम्। मायावादि विवादनिरतमन दहनप्रबलअगनज्वा लम् ॥ वृथावादवेदांतिध्वांतिविध्वंसिभ्रांतिभ्रमजं जालम्। प्रबलप्रलापन्नगारिसमग्रसनकरनदुरजन व्यालम् ॥ श्रीगुरुतुलसीदासदयाते जाह्नविजन नीगदितरुव्यालम् ॥ जयति० ॥४॥

॥ सावनमासवर्णन ॥

॥ कवित्त ॥

कूकै लगीं कोकिलै कदम्बनपै रातो दिन मोर पिक शोरहू सुनात जहूँ पासहै। मन्द मन्द गर्जत घनेरी घटा झूमि झूमि बहत समीर धीर संयुत सुवासहै ॥ जित तित नारी नर गावैं सुखपावैं

अति झूलतहिंडोरे लाल चाढ़त हुलास है। हिय हरसावन को काम सरसावनको बुंद बरसावन को सावनसुमासहै ॥ ॥ इति ॥

॥ आषाढ़मासवर्णन ॥

कवित्त

आई अषाढ़ कि कारीघटा घहरानलगे बदरा चहुँ ओरके। दूजे जो कंत बिदेश गये सुधिपाई ननेक रही मग हेरिके ॥ उमराय स्वभाव बिहंग कहे मृदुबैन कहै जो सखी कहै टेरिके। सोनेसों चोंच मढ़ैहौं तेरी बलि जैहौं पपीहा पिया कहु फेरिके ॥१॥

॥ हारचोरनलीला ॥

कहु राधाक्यहिं हारचुरायो। ब्रज युवती सबहीमें जानति घर घर लैलै नाम बतायो ॥ श्यामा कामा रसिका चतुरा नवला प्रमदा नारि। सुखमा शीला अवध अनन्दा वृन्दा यमुना सारि ॥ कपिला तारा बिमला चन्द्रा चन्द्रावलि सुकुमारि। अमला अबला कुंजा मुक्ता हीरा नीलाप्यारि ॥ सुमना बहुला चम्पा जुहिला ज्ञाना भाना भाम। प्रेमा दामा रूपा हंसा रंगा हरषा

नाम ॥ द्रुमिला रम्भा कृष्णा ध्याना मैना नैना रूप । रत्ना कुमुदा मोहा करुणा ललना लोभानूप ॥ इतनिन में कहु कोने लीन्हेउ ताको नाम बताव । कृष्णबिहारी चोर तुम्हारो मैं जानति सब दांव ॥१॥

॥ बिरहनीबिलाप ॥

कबित्त

कारे कारे बादर डरावने लगत अब दादुरकी ध्वनि सुनि भूलै दशातनकी । बूंदकी छकोर झक झोर पुरवाईकरै हरै मन मोर शोर चहूं ओर बनकी ॥ हरीहरी लतिका करावें घरीघरी याद इन्द्रगोप लखि लाल गुंजमाल गनकी । कृष्ण बिहारी बिनलागै उर आर ऊधो पपीहा पुकार झनकार झिंगुरनकी ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ शिक्षाककाबत्तीसी प्रारम्भः ॥

श्रीः । ककारेकर्मधर्मकुलरीतिसँभारो ॥१॥ ख खारेखाडैखूचैपगमतिधारो ॥२॥ गगारेगर्वछांड़बे गर्वारहिज्यो ॥३॥ घघारेघरआयांकोआदरकरिज्यो ॥४॥ ङङारेनमस्कारनित्यसूरजदेवन ॥५॥

चचारेचतुरपुरुषकीसंगतिसेवन ॥६॥ छछारेछली
बलीकेसंगनाहिंफिरज्यो ॥७॥ जजारेजगतसुहायो
कारजकरज्ये ॥८॥ झझारेझगड़ैजायझूठमतिबोलो
॥९॥ ञञारेञाञाञाञायोंमतिडोलो ॥१०॥ टटारे
टकापईसाभेलाकरिये ॥११॥ ठठारेठाकठीकबोवणी
करधरिये ॥१२॥ डडारेडाकणकीनिंदानहिंकीजे
॥१३॥ ढढारेढगढंगसोंदूरारहिजे ॥१४॥ णणारेना
तजातमेंपहलीजइये ॥१५॥ ततारेतातोभोजनक
बहुँनखइये ॥१६॥ थथारेथरकणबिनादूधनहिंपीजे
॥१७॥ ददारेदयाधर्महितचितसूंकीजे ॥१८॥ ध
धारेधनदेकरनिर्धननाहिंहोजे ॥१९॥ ननारेनाराय
णनयनानितजोजे ॥२०॥ पपारेपरमेश्वरकीआ
शाकरिये ॥२१॥ फफारेफलवंतातरुवरपगधरिये
॥२२॥ बबारेबणडबुरारकचरोदेखिजे ॥२३॥ भभारे
भणवामेंआलसनहिंकीजे॥२४॥ ममारेमातापिता
कीआज्ञापालो ॥२५॥ ययारेयादकरोगुरदेवसंभा
लो ॥२६॥ ररारेरमवामेंवेलामतिखोवो ॥२७॥ ल
लारेलाभहानितनमनसूंजोवो ॥२८॥ ववारेवर्तमा
नकीविद्यालीजे ॥२९॥ शशारेशस्त्रपरायेहाथनदी
जै ॥३०॥ षषारेषटकर्मआराधनकरजे ॥३१॥ सस

रेसमजबूझयगआगेधरजे ॥३२॥ हहारेहँसतांहँस तांशरनकरिये ॥३३॥ ललारेलक्षणसीखकुलक्षण हरिये ॥३४॥ क्षक्षारेक्षमाकरैजासोंनितबोलो ३५ त्रत्रारेतृणसमानमूरखमनतोलो ॥३६॥ ज्ञज्ञारेज्ञान विनापशुपूंछविहाणो ॥३७॥ अ अआरेअर्थबिना विद्याधनकाणो ॥३८॥ आ आआरेआदरभावसब नसोंकीजे ॥३९॥ इ, इइरेईश्वरकोसुमरणचितदी जै ॥४०॥ ई ईईरे ईर्षाद्वेषत्यागजोमनकी ॥४१॥ उ उउरेउधरइधरत्तोदेखोतनकी ॥४२॥ ऊ ऊऊरेऊं चपदीपरमेश्वरदेसी ॥४३॥ ए एएरेएकवारसुखदु खकीकहसी ॥४४॥ ऐ ऐऐरेऐसीकरणीतोकचहुन रहिये ॥४५॥ ओ ओओरेओलंभोप्रभुकोक्यूंस हिये ॥४६॥ औ औऔरेऔरकामतौसबहीदूणा ॥४७॥ अं अंअंरेअङ्गहीनहरिभक्तिविहूणा ॥४८॥ अः अःअःरेअःअःकरतोजलनाहिं पीजे ॥४९॥ ऋ ऋऋरेऋणमाथेकबहूंनाहिंकीजे ॥५०॥ लृ लृ लृरे लृलृकरतोघरघरनाहिंफिरजे ॥५१॥ ॠ ॠॠरे ॠद्धिसिद्धिदाताहियधारिजे ॥५२॥ दोहा ॥ यह शिक्षाबत्तीसको, जोकोइबांचैसार । श्रीधरसांचा हेतसू, परजाकरैजुहार ॥१॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीरामचन्द्रजीकी विनती ॥

छप्पय

जयतिराम सुखधाम काम अरि चाप बिभञ्जन । जयतिबाहुबल अतिविमूढ़ नृपकुलमदगंजन॥ जयति सत्यब्रत जनक कठिणतर प्रणपरिपालक । जयतिदेव दुष्करचरित्र माया नर बालक ॥ जैजयति मोहनी सहज छवि बिबश नारि नर मनहरण । जय जयति नवल घन वरण श्रीरामचन्द्र करुणाकरण ॥१॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीकृष्णचन्द्रजीकी विनती ॥

॥ छप्पय ॥

जयति यशोदानन्द सुखद सुर मुनि द्विज त्राता। जयतिदेव वसुदेव देवकी अभिमतदाता॥ जयति रासमण्डल विलास मण्डन गुणमण्डित। जयति मत्त कन्दर्प दर्प भञ्जन अतिपण्डित ॥ जै जयति तृप्त महिपाल मिष प्रबल दितिजकुल दलदरण । जै जयति कृष्ण वपुधरण ममइच्छा पूरण करण ॥१॥ ॥ इति ॥

॥ अथ चीरहरणलीला ॥

हमरो अम्बर देहु मुरारी । टेक ॥ लै सब चीर

जाघरतुमसेपुत्रहैं, उजरतवाकोगाम ॥६॥ कृष्णव
चन ॥ बसैकिऊजरहोयनहींपरवाहतिहारी। तुम
सीहैंलखचारनंदघरगोबरहारी ॥ लाखरहैंदरबार
खड़ि, लखआवैंलखजाँय। लखनितउठदरशनक
रैं, सुन्दरमनपछिताँय ॥७॥ सखीबंसीदेना॥ ग्वा
लिनिचतुरसुजानबांसुरीआपुहिदीन्ही। मोहन
चतुरसुजानसाँवरेहँसकैलीन्ही॥ लैबंसीग्वालिनि
मिली, घूँघटबदनदुराय। सूरदासप्रभुहारीहैंग्वा
लिनि, जीतेहैंयदुपतिराय ॥८॥ (श्रीकृष्णकामु
रलीबजाना) ॥ लैबंसीयदुरायजाययमुनातटकी
न्ही। सुरतेतीसोकोटिवहाँसरवनजोलीन्ही॥ भ
क्तवत्सलसुखदायक, राखोसबकोमान। तिनमें
तुमप्रभुआपुहो, गुणगावतसूरसुजान ॥९॥

इति श्रीसूरदासकृतबंसीलीलासमाप्तम्॥

॥ अथ चुगुलखोरनको कबित्त ॥

चूकजात जौंहरी जवाहिर परखजानै चूकजा
त पण्डित पढ़ैया वेदचारीके। चूकजात घोड़ेको
चढ्यो असवार पूरो चूक जात बाजे रोजगार
रोजगारीके॥ चूकजात मेघ मेघराजनकी वातहू

मैं कैवो चूकजात या लिखैया लेखधारीके । बाण किरपाणको घलैया पूरो चूकजात एक नहीं चूकै है चुगुल कर्म ख्वारीके ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ नागलीला ॥

छन्द ॥ शुभघरीशुभदिनमुहूरतनंदकेलालाभयो । लाइयेब्रजराजपंडितसुरनरनकेदुखगयो ॥ धनिधनियशोदाभाग्यतेरेगोकुलाकोसुखभयो । कंसआज्ञाफूलकारणकृष्णबनमालीभयो ॥ मारोगेंदगिरोयमुनामेंकूदिकालीदहगयो । जहँनागसोवैनगिनिजागैकृष्णपहुँचेजाइकै । करजोरिविनतीकरतनागिनिजाहुलालनभागिकै ॥ नहिंनागतुमरेशब्दपैहैजागउठिहैरिसाइकै । नागजागेहमैंलागैअबतोभागेनाबनै ॥ होनिहोइसोहोयनागिनिनागअबनाथबनै । करजोरिविनतीकरतनागिनिऐसाललनमतिकहो ॥ जाकेसहसफनदोसहसजिह्वातासेसरबरिमतिलहो । कंसकेसंगपँसखेलैंनागकोसँहारिकै ॥ नागनाथबफूललादबगोकुलाकोजाबरे । पीठीठोंकिजगाइनागिनिनागउठोहैरिसाइकै ॥ अबसहसफनफुफुकारछाँड़ैकृष्णका

लेहोगये। कृष्णउठिजबगरुड़टेरागरुड़पहुँचेधाइकै ॥गरुड़आवतनागदेखानागकेमूर्च्छाभयो।नाग केमूर्च्छाभयोतबकृष्णपहुँचेधाइके ॥ लादलीना कमलडंडीनागनाथेउजाइके। करजोरिविनतीक रतनागिनिमाँगिपीतमपाइहौं। अहिवातदेयशुदा केनंदनबंदिछोरकहाइहौ॥ येजीतबतोनागिनिसे योंबोलेअबतुविनतीकैंबकरे। तेरोनागछीनहिंस केकेऊचरणचिह्नलखातरे ॥ कंसमारिनिजयश कीन्हसंतसबसुखपावहीं। अबसूरकेप्रभुनागली लारहसमंडलगावहीं ॥

इति श्रीनागलीलासमाप्ता ॥

॥ अथ विद्याबत्तीसी ॥

दोहा ॥ श्रीकृष्णकीशरणहूं, सुधबुधिदेतत्का ल। विघ्नहरणसबसुखकरण, नमोनमोगोपाल ॥ ॥१॥गादीजेसलनगरकी, राजेश्वररणजीत॥ यह विद्याबत्तीसको, म्हेताकरीअजीत ॥२॥ प्रातहिउ ठ्युरुध्यानधर, प्रभुकेचरणसँभार। सादरगणपति सुमिरकै, करविद्याउपचार॥३॥ कानांसूंगुरुवाक्य सुन, मुखसोंकरोउच्चार । फेरिहृदयधरकरलिखो,

अक्षरनयननिहारि ॥४॥ पंचवर्षसेआदिलै, कर विद्याअभ्यास । जबलगकारेकेशहों, छाँड़नवि द्याआस ॥५॥ अक्षरमात्राअंकशिख, शिरसंयोग विचार । इनविद्याकोपारनहिं, होयअपारअपार ॥६॥ तजछलआलसअंगते, ढीलापनमतधार । विद्याश्रमअरुलगनसे, सदासँभारसँभार ॥७॥ एकचित्तह्वैबैठकरि, पूरणगुरुसेपाय । सुधविद्याकूंसमझकै, सीखोनितप्रतिजाय ॥८॥ थोड़ैहीपढ़वो भलो, श्रद्धासे नरश्रेष्ठ । बेश्रद्धाको विरुधहोय, बहुत पढ़ै फिर कष्ठ ॥ ९ ॥ क्रमक्रम विद्या सीखियां, मूरख पण्डित होय । बूंद बूंद जल वरखियां, सागर पूरण सोय ॥ १० ॥ विद्या को संग्रह करो, विद्या रत्न रसान । विद्या जग मेंगुप्तधन, लोहाकंचनमान ॥११॥ कामधेनुयाजगतमें, जाहरविद्यायोग । मूरखनरसमझैंनहीं, भुगतैंअपनाभोग ॥१२॥ विद्यारूपीव्यसनरख, राखहर्षहियमाहिं । विद्यादेशविदेशमें, मंत्रहोयकरिसाहिं ॥१३॥ हिम्मतकबहूंनहारिये, विद्यापढ़िबेमाहिं । हिम्मतसेकीमतबढ़ै, देखविद्याकीछाहिं॥१४॥ पढ़वेमेंकबहूंनहीं, खालीदिनमतखोय । पीछेपछ

तानोघणा, कारिलगैनकोय ॥१५॥ भलिविद्या कीत्रासना, जासेसबसुधहोय। विद्यासेभलपनमि लै, पाछेबहुसुखजोय ॥१६॥ विद्याकोसुखबहुतहै, त्रसिहैअधिकाय। वाघरमाहेसुखकरै, औघटमेंसु खथाय ॥१७॥ मोटेकुलमेंजनमले, विद्यासीखीना य। धृगलीनोवाकोजनम, पशुसंज्ञामेंआय॥१८॥ विद्यासबकुलरीतिहै, नीचहिउत्तमदीख। कुलको कारणनाहिंहै, विद्यासोंनरतीख ॥१६॥ राजकाज विद्याबिना, कहाकरौपरबंध। न्यायरीतगुणरीतस ब, बिनविद्यानरअंध ॥२०॥ विद्यासेबुद्धीबढ़ै, बि द्यारोजीसार। विद्याबिनभागनखुलै, वड़विद्या उपकार ॥२१॥ विद्यासेआदरमिलै, विद्यासेसन्मा न। विद्यासेउक्तीबढ़ै, विद्यायुक्तीज्ञान ॥२२॥ वि द्याबिनबुद्धीनहीं, विद्याबिननहिंसिद्ध। विद्याबि नवृद्धीनहीं, विद्याबिननहिंरिद्ध ॥२३॥ विद्यानू चोरनलगे, वरत्यांखूटेनाहिं। ज्यूंखरचैत्यूंबहुबढ़ै हैयशजगकेमाहिं ॥२४॥ विद्यासागरहैबड़ो, वि द्याकोनाहिंछेह। जोचाहौसोफललहौ, विद्याबड़ पनएह ॥२५॥ विद्यारूपसभानमें, विद्यारूपावि वाद। विद्यारूपाविरूपकी, विद्यारूपसंवाद ॥२६॥

वैद्यकज्योतिषतरकमत, सबविद्याआधीन। विद्या
विननरनेसुरत, कहाकरैपरवीन ॥२७॥ कुलमेंवि
द्यावंतइक, दीपकहोयउजास। अंधेरोसौशठनसे
कहाकरैपरकास ॥२८॥ दृष्टीविद्यावानकी, चहुँदि
शिपहुँचैजाय। विद्यामेंसबगुणबसैं, विद्याविनान
काय ॥२९॥ विद्यामेंलज्जातजौ, देखोग्रंथअनेक।
तंतसारसेप्यारकर, ऐसीधारोटेक ॥३०॥ गुरुकृपा
खातिरजमें, ह्वैजोवारंवार। आछीबुधिह्वैशिक्षकी
विद्यासारंसार ॥३१॥ विद्यासोंदिग्विजयह्वै, विद्या
सेसबजीत। विद्यासेपूरणपुरुष, होयअजीतअजी
त ॥३२॥ बातांचतुराईविद्या, आसीकेदिनयाद।
जातांजुगानजावगी, निभसीआदिअनाद॥३३॥
धनहैविद्यावानकूं, धनजननीधनतात। धनधन
हैंगुरुदेवकूं, धनहैउनकीजात ॥३४॥ अरजकरत
अगजीतये, बहुतनमोमेंबोध। चूकभूलकूंजांच
कर, शुद्धकरोकविशोध ॥३५॥ उगनीसौअट्ठार
वै, दीपमालशनिदिन्न। कियोसंपूरणग्रंथकूं, पढ़
मनहुवैप्रसन्न ॥३६॥

इति श्रीविद्याबत्तीसीम्हेताअजीतकृतसंपूर्णम् ॥

॥ प्रलम्बासुरवधलीला ॥

कवित्त ॥ एक ओर श्याम सुखधामसंग सखालीन्हे राम अभिराम दूजो ग्वालगनि लीन्हो है। फलको बुझावलागे खेलन सुमेल मिलि बालकेलि खेलमें सरस रस भीनो है ॥ असुर प्रलम्ब तहाँ ग्वालरूप आय मिलो वसाहीं चढ़ाय पीठ चाहै छल कीन्हों है। कसिकै मसकि बलि हँसिकै यों वश कीन्हों चसकि सक्यो न ससकनिप्राण दीन्हों है ॥ ॥ इति ॥

॥ दावानलपानलीला ॥

कवित्त ॥ एकदिन महर महरि गोपी ग्वाल निशि वनवासि मति गति आरलमें भीनी है। दावानल दुष्ट तहाँ आय चहूँ ओर छाय जाय लाय वनको जराय राख कीनी है ॥ लखिभय पाय ग्वाल पाहि त्राहि भाषी सुनि आँखिन मुँदाय आगिपान कीन्ही हीनी है। जहाँ ज्योति जोमतम तोमहि गिलत देख्यो हरिदास तमजाने ज्योति गिलि लीनी है ॥ ॥ इति ॥

॥ पनघटलीला ॥

कवित्त ॥ गोकुलकी नागरी लै गागरी उमँ

गि चलीं रूप गुण आगरी उजागरी सुभायकै। नागर नवलनट ठाढ़ो पनिघट घाट पीनपट मुकुट लकुटि अटकायकै॥ आवैं जे भरनघाट ताको दरकाइ देत लेत अपनाइ घटलाजनि घटायकै। निमिष बिसारिकै निहारैं ब्रजनारैं पतिब्रत पनि हारैं पै निहारैं तट जायकै॥

॥ चकई भौंरा खेलनलीला ॥

चौपाई॥ दे मैया भौंरा चक डोरी। खेलत रहिहौं ब्रजकी खोरी॥ हर्षि जननि आरे पर भाषे। तुमहित नये मोल लै राखे॥ लै आये हरि तुरत निकारी। भये मग्न हरि रङ्ग निहारी॥ बिहँसि चले फेरत चक डोरी। खेलत सखन सङ्ग ब्रज ओरी॥ गोपिनके यह ध्यान सदाई। नेक न अन्तर होहिं कन्हाई॥ मारग चलति तिन्हैं हरि रोके। खेलत माँझ जहाँ तहँ टोके॥ चकई भौंरा डोर फिरावैं। तिनके भूषणसों अरुझावैं॥ गेंद उरोजन माहि दुरावैं। याहि विधि हरिसों अङ्ग छुवावैं॥ कंचुकि फारि आपही लेहीं। यशुदहिं जाहि उराहनो देहीं॥ ॥ इति॥

॥ अघासुरवधलीला ॥

दोहा ॥ गावतखेलतहँसतसब, सखावृंदगोसाथ। पहुँचेवृंदावनसघन, वृन्दावनकेनाथ ॥

कवित्त ॥ अघ ओघ अघ नाम पापी अजगर तनु धारि मुखफारि उन वाट सबै रोंकि लीन। मन्दरकी कंदरसी सुंदरि निहारि ताके अंतर ग्वाल सब गायन गमनकीन ॥ बहर दहन जो दहन लागो तबै अहि धुनि सुनि श्याम ताके मुखमाहि भये पीन। मुख नहिं सक्योमीच भयो मीच वशनीच आपै प्रभु कीन्हो ताको जीव निज ज्योति लीन ॥ ॥ इति ॥

॥ माटीखानलीला ॥

कवित्त ॥ आनि नंदरानीसों कह्यो है काहू आनि आज माटीखात देख्यो अबै तेरोरी नंदन मैं। सुनत रिसाय सुत बोलि मुख खोलि देख्यो एकै ब्रह्मदूनो भेद तीनों देवतनमें ॥ चारौ वेद पाँचो भूत छहो ऋतु सातौ ऋषि आठौ वसु नवौ ग्रह दशहूं दिशनमें। ग्यारहौं महेश औ

दिनेश बारहौं विलोकि तेरहौं रतनलोक चौदहौं बदनमें ॥ ॥ इति ॥

॥ भोजनकरनलीला ॥

छन्द ॥ बैठे जो जेवननंदके सङ्ग श्याम औ बलराम । भोजन बने कै भांतिके अब सुनौ तिन के नाम ॥ पापर जलेबी और पूरी भात उज्ज्वल अति करै । मूंगकी है दालि सुन्दर चनाके व्यं जन धरै ॥

चौपाई ॥ मिश्रीदधिओदन मिश्रितकर। लेत श्याम सुन्दर अपने कर ॥ आपनखात नंदमुख नावैं । सो छवि कहत कौनपै आवैं ॥

सोरठा ॥ कोकरिसकैबखान, भाग्ययशोमति नंदकी। ब्रह्मरह्योरुचिमान, बालरूपजिनकेसदन॥

॥ पयछुटावनलीला ॥

कबित्त ॥ बैठे श्यामसुंदर यशोदागोद आँ- गनमें अतिहि हरषयुत क्षीरपान करे हैं। बारबार कहति जननि सुनौ लाल मेरे क्षीर नहीं पिवौ हँसत ग्वाल खरे हैं । जैहैं दंत बिगरि अधिक क्षीरपान कीन्हे कवि हरिदास कहैं मातु मुखहेरे

हैं। मुख झांपि अंचरसों तब नंदलाल रहे देखि मातु छबि अतिमोद मनभरे हैं॥

॥ वृंदाबनवर्णनलीला ॥

कवित्त॥ श्याम सुखधाम बृन्दाबनकी ललाम छबिराम अभिराम प्रति भाषी सुखदाईकी। वेलि भुजवेलिनकी तरुगरे मेलिनकी वेलन चमेलिन की महक सुभाई की। शाखा फलफूलन की भारभरीझूलनकी यमुनाकेकूलनकी अनुकूलताई की। शोभा मंजु कुंजनकी भौंर पुंज गुंजनकी वंजुल के कुंजनकी रंजन सुहाई की॥ इति॥

॥ कर्णछेदनलीला ॥

दोहा—महरि तबहिं इमिनंदसों, कहतभईकरजोर।
हरिको कर्णछेदन करहु, होइ मनोरथ मोर॥

छंद॥ बाजी बधाई नंद के गुरु नारि सब हर्षित भई। प्रथम मुंडनको कियो फिरि कर्णवेधन विधि लई॥ सुर निरखि अतिमन हर्षसों तब सुमन की झरिझरि दई। धरि सुपारी पानपर तब नारि गुरु भेली दई॥ दोहा॥ यहि विधि कर्ण छेदन कियो, नारि उठीं तब गाइ। पहिराई ब्रज बधुन कहँ, सारी नई मँगाइ॥

॥ चलनलीला ॥

कवित्त॥ अलख अगुण अज अचल अनादि आदि अलह अनंत अंत जाको न कह्यो परै। पूरण परमपुरुषोत्तम प्रकाश पाँचौ पावकपुहुमि पौनपाणि परते परै। शिव सनकादि सरस्वती शेष श्रुति जाहि जैसो है सो कहि न सकत मति हूँ हरै। सोई शिशुधारि रूप यशुदाकी बसुधामें हँसि हरिधावै भावै जानुपाणि बिहरै॥

॥ अथ शिक्षाबतीसीप्रारम्भः ॥

श्रीगणेशायनमः॥ दोहा॥ श्रीवल्लभविट्ठलप्रभू, गिरिधरगोविंदराय। बालकृष्णकोकुलरघू, यदूश्यामघनसाय॥१॥ गढ़जेसाणैपैतपै, रावलश्रीरणजीत। यहशिक्षाबत्तीसका, म्हेताकरीअजीत॥२॥ मंत्रीसेवनकीजिये, नृपसेवनकेकाज। केवलनृपनहिसेविये, सेव्याहुवैअकाज॥३॥ पहलोभयभगवानको, भयदूजोभुवपाल। तीजोभयलौकीकको, राख्यांविनमतचाल॥४॥ देखइष्टअरिगुणपरस, पैदाखरचसँभार। हरयककारजकीजिये, समयाविचारविचार॥५॥ सबदिनहोयनएकसे

समझविचक्षणबात। वरतनऐसीवरतिये, आदि अन्तनिभजात ॥६॥ खावोपीवोखर्चलो, करलो सुकृतकाम। तनमनधनथिरनाहिंरहै, थिररहैगोविंदनाम ॥७॥ नितउद्यमकरिआपनो, नितगोविंद गुनगान। नितविद्याअभ्यासकरि, नितप्रतिबड़ी सुजान ॥८॥ वृथाकालनाहिंखोइये, वृथानबकिये वाद। वृथानानिंदाकीजिये, बृथाशोचउनमाद ६ अतिलालचअतिलालसी, अतिनिद्राअतिघात। अतिसर्वत्रनकीजिये, अतिहाँसीउत्पात ॥१०॥ नृपरानीअरिचोरजन, कपटकूटचुगलान। नदीन खीशृङ्गीअगन, यहविश्वासनमान ॥११॥ हिकमतकरअरुउदरभर, किसमतपररहुनाहिं। हिकमत मोंकिसमतबसै, करिदेखोजगमाहिं ॥१२॥ भावे ज्यूखावोमती, बहतोजगतसुहाय। जैसीजहँयुक्ती हुवै, तैसीउक्तिमिलाप ॥१३॥ षटभाषाविद्याचवद कलाबहत्तरजान। विनदेखेसीखेकरे, सुनेविनान हिंज्ञान ॥१४॥ बुद्धिवानबोलीयसे, विनबोलीन हिंबुद्धि। वक्तदेखिकैबोलबो, सबबातनमेंशुद्धि ॥ ॥१५॥ सज्जनतोसकड़ाभला, दुर्जनभलाजुदूर। निजजनतोनैड़ाभला, बुधिजनसदाहुजूर ॥१६॥

त्कविगारैबड़नकूं, सुधरैबखतसमाज। बिगरैसुध
बिखतसे, बखतबड़ीहैराज ॥१७॥ कलौकालसूंदूर
रह, धननरधर्मछिपाय। मूरखसचिवनकीजिहै,
तनकोजतनरखाय ॥१८॥ वसीबखतबखथापनो,
विद्यारीतिविवेक। सतसंगतसंसारमें, उनसमान
नहिंएक ॥१६॥ तनसुखधनसुखनारिसुख, सुखसं
ततिसुखराज। सुखथानकविमित्रसुख, पुनिपूरब
सेसाज ॥२०॥ सीरहोयसोईमिलै, विनासीरनहिं
जान। कर्मकृपाविननाखुलै, विधिकेअङ्कप्रमान॥
॥२१॥ शीततपतवर्षासहै, प्रभुइच्छाप्रतिपाल। स
र्वंवस्तुसंग्रहकरो, प्रापतफलकोकाल ॥२२॥ दिशा
विदिशाकूंदेखके, तीखीतरकनिकाल। स्वपनंतर
सोख्यालह्वै, कटैजालजञ्जाल ॥२३॥ थिरतातेवि
पताकटै, जतनकियादुखदूर। श्रमसेसुखउतपन्नह्वै
धर्मसेधनह्वैपूर ॥२४॥ धरणीसेधरध्यानतू, हटेहा
नश्रमजान। धरनबड़ीयाजगतमें, ढकैदोषपरखा
न ॥२५॥ जलजमीनकेयोगसे, पैदायसजरहोय।
जोबोवैसोहीहुवै, मेहनतकरिफलजोय ॥२६॥ राग
बशीरसचोजरंग, चञ्चलगुणउजलान। धनखोवन
कूमनहुवै, करोप्रीतिगणिकान ॥२७॥ रैसीसुखमें

मित्रसब, दुखमेंरहैनकोय। विपतिविड़ारनकोख
री, दुखमेंमंत्रीहोय ॥२८॥ रीतरहेतेयशरहै, गया
रीतसबजाय। जनममरनयाजगतमें, रीतविनान
हिंकाय ॥२९॥ सबहीस्वारथकेसगे, परमारथको
कोय। सोसोस्वारथसेसधै, परमारथमतखोय ३०
तजजारीतजतस्करी, तजपरद्रोहाविज्ञान। तजकु
सङ्गतजकूटकृत, तजदुर्मतितजहान ॥३१॥ भक्ति
कियाभगवतमिलै, शक्तिकियासिधकाम। उक्ति
कियाआदरमिलै, युक्तिकियाजगनाम ॥३२॥ रख
नरमीरखसाँचवड़, रखलिहाजरखरीत। क्षमादया
रखशीलसत, रखसंतोषसुधप्रीत ॥३३॥ जुरतफुरत
अरुसुरतसे, सिधकारजसबहोय। म्हेताअजीतको
कियो, निश्चययहकरिजोय ॥२३॥ भूलचूकसब
समझकै, करिकवीन्द्रसुधसोध। सुनअजीतकी
वीनती, मोमैंनहिंबहुबोध ॥३५॥ शतउनीसअट्ठ
ारसे, आश्विनसुदिदशराव। भयोसमापतग्रंथये
हरिअजीतसिंहचाव ॥३६॥

इति शिक्षाबत्तीसीम्हेताअजीतसिंहकृतसंपूर्णम् ॥

छन्दघनाक्षरी ॥ छापेहैंसुधाकर विद्याअरु
शिक्षाज्ञामें दोहराछत्तीसदूजेछत्तिसप्रमानहै। वि

पतिविड़ारिबेको विद्यासोंनऔरकछुसंपतिकेसुधा रिवेमें शिक्षाबलवानहै ॥ कुसङ्गतिकेनाशिवेकेवि द्यासीनखड्गऔरशिक्षाविनानरदेही पशुकेसमा नहै । कहैकविश्रीधरश्रीरणजीतनरेशपैमहताअ जीतसिंहमंत्रीबुद्धिवानहै ॥१॥ कुंडलियाछन्द ॥ गादीजेसलनगरकी, श्रीरणजीतनरेश । राजत अपनेदेशपै मानौद्धितियादिनेश ॥ मानोद्धितिय दिनेशधर्ममर्यादाजानैं । राजनीतिरसरीतिन्याय अन्यायपिछानैं ॥ श्रीधरकविताकहैमंत्रिकीबुद्धि अनादी । सुबसबसोसबदेशअटलश्रीनृपकीगादी ॥२॥ दोहा ॥ पुष्करछायामध्यहै परशुरामसुखधा म। विप्रसलेमाबादको श्रीधरकविहैनाम॥३॥इति॥

॥ अथ शिवस्तुतिप्रारंभः ॥

टेर ॥ भोलानाथअमलीम्हाराशंकरअमली । बगियामेंभाँगियाबुवायरखली ॥ काईबाउकाशी जीमांकांईजीपराग । काईबाउहरकीपीड़ीकांईजी कैलाश ॥ भोला० ॥१॥ काशीजीमेंकेसरबोऊंचं दनपराग । हरकीपैड़ीविजयाबोऊंधतूरोकैलास ॥ भोला० ॥२॥ काईमाँगेनादियोजीकाईंजीगणेश ।

कांईमांगेभोलोशंभूयोगियाकेभेस ॥ भोला०॥३॥ दूर्वामांगेनादियोजीमोदकगणेश । विजयामांगे भोलोशम्भूयोगियाकेभेस ॥ भोला० ॥४॥ घोट घोटनादियोजीछाणतगणेश । भरभरप्यालादेवे गौरापीवैंभोलेनाथ ॥ भोला० ॥५॥ आकडाकी रोटीपोऊंधतूराकोसाग । विजयाकीतरकारीछिम कूंजींमेंभोलानाथ ॥ भोला० ॥६॥ भूखोमांगेअन्न धन्नराजामांगेरूप । कुष्ठीमांगेनिर्मलकायाबांझमां गेपूत ॥ भोला० ॥७॥ भूखादेताअन्नधन्नराजादे तारूप । कुष्ठीदेतानिर्मलकायाबांझदेतापूत ॥ भो ला० ॥८॥ नाचनाचनांदियोजीनाचजीगणेश । नाचम्हारेभोलोशंभूयोगियाकेभेस ॥ भोला० ९ घोटतगणेशबाबोछाणभैरूंनाथ ॥ भरभरप्याला पीवैम्हाराशंभूभोलानाथ ॥ भोलानाथअमली म्हाराशङ्करअमली ॥ ब० ॥१०॥

इति शिवस्तुतिसंपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीधरकृतकुण्डलिया ॥

मूसा बिल्लीसों कहत, सुन मंजारी बात । डरती रहियो बापड़ी, नहिं तो मारूँ लात ॥ नहिं

तो मारूँ लात हाथ पगहोसी लूली। वह तेरा दिन गया भरोसे भटकै भूली॥ कह श्रीधरकवि राय हुवो इकडंक्या धूसो। समयबड़ो बलवान कहै बिल्लीसों मूसो॥ १॥ छालीबोली सिंहसों सुनहो बनकाराउ। सिंहभोग स्याला भखै, कीजे कौन उपाउ॥ कीजे कौन उपाव तेज सतपुरुषा नाहीं। पूजनलगे अपूज पूजकहुँ देखे नाहीं॥ कहश्रीधरकविराय कामकर च्याल्यो ल्याली। समय बड़ो बलवान सिंहसों बोली छाली॥ २॥ जोरू खाविंदसों कहै, घूँसासों धमकाय। चुपचुप घर में घुसरहो, घीसों रोटीखाय॥ घीसों रोटी खाय रहो घुस मेरे पीछे। मैं पौढूँगीसेजपरो तुम पौरी नीचे॥ कहश्रीधर कविराज जणै खुबसूरत छोरू। समयबड़ोबलवान लड़ै खाविंदसोंजोरू॥ ॥३॥ दोहा॥ श्रीधरसांचीबातसों, जोकोइराखत हेत। समयपाइकैनीपजै,ज्योंकिसानकोखेत॥४॥ कुंडलिया॥ मानेलोचनयुगसभै, जानतहैनरना र। त्रयलोचनविद्याकही, ताकोकरौविचार॥ ता कोकरौविचार बालपनविद्यासीखो। मानुषदेह अमोलबोल विद्याको नीको॥ श्रीधरकविताक

हैं सभामें आदर आनै। जाके विद्या कंठ ताहि को राजा मानै॥ ५॥ राजासीखै नीतिको, पर जाकेहितकाज। मंत्रीसीखेमित्रता, मानैमोटाराज॥ मानैमोटाराजकाज विद्यासोंपावै। हुंडीलिखैअपार साहपदविद्यालावै॥ श्रीधरकविताकहै संपदामिलसीताजा। विद्यापढ़ो सुजानमानसन्मानैराजा॥ ६॥ जानैपौरुषआपके, नहींबापकोकाम। बलिबंधनकेकारणे, वामनपायोनाम॥ वामनपायोनामरामनिःक्षत्रीकीनी। रघुबररावणमार भक्तकोलंकादीनी॥ श्रीधरकबिताकहैगुणीसँग आदरआनै। करैकृष्णकोयाद पिताकोकोइनजानै॥ ७॥ पाँचोकथापढ़ाइये, पंचाख्यानविचार। राजनीतिजाकोकही, हितउपदेशअपार॥ हितउपदेशअपार बालपनकंठाकीनी। सुखपावै संतानसभामेंबातनवीनी॥ श्रीधरकविताकहैपढ़ै सोईनरसांचो। चतुरकरैसबकाज पढ़ैजोनीतीपांचो॥ ८॥ जामेंमित्रमिलापहै, मित्रलाभसोंजान। तामेंछूटैमित्रता, सुहृदभेदसोंमान॥ सुहृदभेदसोंमानतीसरीविग्रहजानों। युद्धकरावनरीतिपरस्परश्रद्धामानों॥ श्रीधरकविताकहैसंधिचौथी

मिलिजानों । पांचोलब्धप्रनाशमिलैफिरपाछीमानों ॥ ६ ॥ दोहा ॥ श्रीधरशोभाजगतकी, विद्यानीतिविशेष । स्वारथपरमारथसबै, विद्याविनयविवेक ॥ १० ॥

॥ इति श्रीधरकृतकुण्डलिया समाप्ता. ॥

॥ राधाजूकी प्रथम मिलनलीला ॥

कवित्त—खरक निकास श्याम सामुहें निहारत अचानक चखत चकचौंधीसी चमकिकै । गोरीसी ठगोरीसी निपट बैस भोरी भोरी कीरति कुँवरि कोरि आवति ठमकिकै ॥ पागिगये प्रेमकी पगनि दृगचारिहोत लागिगये मनदौरि दोऊके झमकिकै । जानिकै पुरानीप्रीत नेहनयो मानि घर जानको चहतचित्त चाहुयो चमकिकै ॥

दोहा—बतरानेदोउ परसपर, अपनेहीं चितचाय ।
आवोमिलिसँगखेलिहैं,योंकहिभयोबिदाय ॥

॥ ब्रह्माजीकीस्तुति ॥

कवित्त—मायनको गायनको चायनसोंसुख दैकै बरसबितायो इहि भायन जबै हरी । तबसुधि कीन्ही विधि सुधिबुधि हीनीजानि मतिहिमलीन मानि दीनता हियेधरी । शोकउरछायो निजलोक

तजि धायो बालवत्स संग लायो ब्रज आयो रज आचरी। जोरी करढोरी शिरकोटिक निहोरिकरि बक्रशो किशोरकहि खोरिमें करी खरी॥

॥ भजन कीर्त्तन ॥

सीतापति रामचन्द्र रघुपति रघुराई। दशरथ सुत रामचन्द्र नंदके कन्हाई॥ टेक॥ रसना रस नाम लेत संतनको दरश देत विहँसत मुखचन्द्र मंद सुंदर सुखदाई॥१॥ दशनदमक चतुरचाल ऐन बैन दृग विशाल भ्रकुटी मनो अनल पाइ नासिका सुहाई॥२॥ केशरको तिलकभाल मानो रवि प्रातकाल श्रवण कुंडल झलमलात रति पति छबि छाई॥३॥ मोतिन को गले माल तारागण कर विहार मानोगिरि शिखरपैंड़ सुर सरि चलिआई॥४॥ सांवर तिरभङ्ग अङ्ग काछ- निकर कासि निषङ्ग मानो मयाकी छबि आपु बनि आई॥५॥ सुर नर मुनि सकल देव शिव विरंचि करत सेव कीरति ब्रह्मांड खंड तिहूँलोक गाई ६ सुखासहित सरयुतीरबैठेरघुवंश वीर हरषि निरखि तुलसिदास चरणन रजपाई॥७॥

॥ लक्ष्मीवेङ्कटेशायनमः ॥

॥ बारामासी संग्रह ॥

॥ अथ श्रीरामचंद्रजीकीबारहमासी ॥

चैत्रअयोध्याजनमेरीराम। चंदनसोंलिपवाये रीधाम ॥ जगमोतियनकोचौकपुराय। सोनेके कलशादियेभरवाय ॥ धेरेघटमंदिर ॥ पठयेतुमना रिबैरिनिबनबालकमोरे ॥१॥ वैशाखमासऋतुग्री षमलागि। चलइपवनमानोबरसतआगि ॥ जैसे जलबिनुतलफतमीन। सोगतिहमरीकैकयीनेकी न ॥ दियेदुखदारुण ॥ पठये० ॥२॥ ज्येष्ठमासलु अलागतअंग। रामलषणऔरसीतासंग॥ रामचंद्र पदकमलसमान। परचतधरतीऔरअसमान ॥ चलैंमगकैसे ॥ पठये० ॥३॥ आषाढ़मासघनगर्ज तघोर। रटतपपीहाकुहकतमोर ॥ ठाढ़ीकौशल्या अवधपुरधाम। भीजतहैहैंलषणसियराम ॥ खड़े तरुवरतर ॥ पठये० ॥४॥ सावनमेंसरसानेरीनीर। कैसेधरैंकौशल्याधीर॥ छोटीछोटीबुंदनबरसतनीर। भीजतहैहैंसियारघुवीर ॥ झमकझड़लागी ॥ पठ ये० ॥५॥ भादोंमेंबरषैनीरअपार। घरअपनेसबही

संसार ॥ गुञ्जतगुंजिलफिरतभुजङ्ग । रामलषण औरसीतासङ्ग ॥ रैनिअँधियारी ॥ पठये० ॥६॥ लागोरीसखीमासकुँवार । धरमकरतसबहीसंसार॥ जोघरहोतेलषणसियराम । विप्रजिमावतीदेतीमैं दान ॥ थालभरमोती ॥ पठये० ॥७॥ लागोरी सखीकार्तिकमास । उठतकलेजेमेंदुखकीफांस ॥ घरघरदीपकजोवतनारि । मेरीअयोध्यापड़ीअँधि यारि ॥ करीकैकेयी ॥ पठये० ॥ अगहनमेंसखी करतीशृंगार । कपड़ासिमातीमैसोनेकेतार ॥ पट पीतांवरकुलयक्कमान । शिरमेंचीरजरदसीपान ॥ गलेवैजंती ॥ पठये० ॥६॥ लागोरीसखीपूषजोमा स । रैनिभईजैसीखांड़ेकीधार ॥ कुशआसनकैसे पौढ़ेंगेराम । कैसेकरैंवनमेंविश्राम ॥ भोजनमजरी के ॥ पठये० ॥१०॥ माहमासऋतुफूलेबसंत । कैसे जियोंरीबिनाभगवंत ॥ मेरीअयोध्याकेशिरकेमौर। ठाढ़ेभरतजीढोरतचौंर ॥ वसंतकरोरी ॥ पठये० ॥ ॥११॥ फागुनरंगरच्योसबकोय । चंदनअतरसुगं धिततोय ॥ ठाढ़ेभरतजीघोरैंअबीर । कापैछिड़कें बिनारघुवीर ॥ मैंकैसीकिरौंरी ॥ पठये० ॥१२॥ जो गावैयहबारहमास । सोपावैवैकुंठनिवास ॥ कहत

भवानीअवधपुरधाम। बनसेआयेलषणसियराम॥ मिलेकैकेयीसौं ॥ पठयेतुमना० ॥१३॥

इति श्रीरामचन्द्रजीकीबारहमासीसंपूर्णम् ॥

॥ अथ भरतजीकीबारहमासी ॥

श्रीः ॥ चैत्रपीछिलेपाखरामनौमीकोजन्मलियो। अवधपुरीसुखधामसखिनमिलिमङ्गलचारकियो ॥ खबरिजबदशरथनेपाई। दियेदानगजबाजिगाइदिनथोरेकीव्याई ॥ सभासबप्रफुलितह्वैआई। कर्मलेखनाहिंमिटैकरौकोइलाखनचतुराई ॥१॥ लागतहीवैशाखकैकयीबावरिकरिडारी । धृकजीवनधिकारभईजबतुमसीमहतारी ॥ दुःखतैंनेनगरकोदीनो। तीनलोककोनाथरामतैंनेबनवासीकीनो॥ क्रूरमतिकैसीबनिआई ॥ कर्मलेखनाहिंमिटै० ॥२॥ ज्येष्ठपञ्चामिलिकहींभरतकोगादीबैठारो। भरतधरतकाननपरहाथनाथमोहिंगरदनक्योंमारो ॥ सरैनहिंइनबातनकाजा । तीनलोककेनाथरामवेअयोध्याकेराजा ॥ बातयहसबकेमनभाई। कर्मलेखनहिंमिटै० ॥३॥ आषाढ़आशारामामिलनकीमनमें लागिरही । रामकौनवनहमैंबतावोभरतजुबातकही ॥ नगरकेनरअरुसबनारी। रथडोलागजबाजि

भीरभइभरतसङ्गत्यारी ॥ नदीजैसेसागरकूंधाई। कर्मलेखनाहिंमिटै० ॥४॥ सावनशृङ्गवेरपुरपहुँचेभीरभईभारी । भीलनकटकजोरिदललीनेलड़नेकीत्यारी ॥ भरतसेपूछिकैरारिकरौ । रामलषणसियकाजतीरगङ्गाकेजूझमरौ ॥ खबरयहभरतहुनेपाई। कर्म०॥५॥ भादौंभरतभीलसेभेंटभक्तजानिमनमें। कंदमूलफलतोरिभीलनेभेंटकरीवनमें ॥ भीलजबअगुआकरिलीनो । भारद्वाजप्रयागआनिकेदरशनदेदीनो ॥ प्रयागकीदुनियासबधाई ॥ कर्म०॥६॥ कुवाँरकरीमहमानीमुनीनेपूंछीकुशलाता । दोउकरजोरेदेतिपरिक्रमाकौशल्यामाता ॥ आजमेरोजीवनसफलभयो । इतनीबातसुनीमुनिनेजबआशिर्वाददियो ॥ भरतकीमातासमुझाई। कर्म० ॥ ॥७॥ कार्तिककूचप्रयागते कीनोचित्रकूटआये । चीरवल्कशिरजटाजूटसियरामलषणपाये ॥ भरतजबचरणनजायपरे । भरतउठायरामउरलायेनैननीरभरे ॥ भरततुमभाइसुखदाई । कर्म० ॥८॥ अगहनवारंवारभरतकोरघुवरसमुझावैं । भरतउलटिघरजाउराज्यतुम करौ अयोध्यामें ॥ लोगसुखजबहीपावेंगे । चौदहवर्षबीतिजावैंगीजबहमहूंआ

वैंगे ॥ भरतकौंएसेसमुझाई। कर्मलेखनाहिंमि० ॥
॥९॥ पूसमाससियरामलषणकेज्जुरिगइभीरघनी ।
जनकवसिष्ठगुरूसमुझावैंकहैंअपनीअपनी ॥ वि
नतीबहुतभांतिकीनी । रामआपश्रीचरणखड़ाऊं
भरतहिंदैदीनी ॥ उलटघरजाउभरतभाई । कर्म०
॥१०॥ माहमहीनामानिरामनेसुखपायोमनमें। ज
नकजनकपुरकोपहुँचायेभरतअयोध्यामें ॥ खड़ा
ऊंगादीधरिदीनी। रामचन्द्रतेकठिनतपस्याभरतहु
नेकीनी ॥ बड़ाईयाहीमेंपाई। कर्मलेखनहिंमि०॥
॥११॥ फागुनफेरहरी सीताजबरावणवशकीनो।
रावणमारोराज्यज्जुविभीषणकोदीनो ॥ जीतिकै
अवधपुरीआये । शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक
दरशनकोधाये ॥ रामकूंगादीठहराई । कर्मलेख
नहिंमिटैकैरकोइलाखनचतुराई ॥१२॥ नव्वेसाल
लोंदकीभादौंअगहनगहनपस्त्रो । बांसबरलीके
लालदासनेरामनामउचस्त्रो ॥ भरतकीयहबारहमा
सी । गावैसुनैपरमपदपावैकटैयमकीफांसी ॥ वेद
मिलिऐसेहीगाई । कर्मलेखनहिंमिटैकरौकोइलाख
नचतुराई ॥१३॥

इति श्रीभरतजीकीबारहमासीसंपूर्णम् ॥

॥ अथ वेणीमाधवकीबारामासी ॥

कार्तिककिलोलकरैंसबसखियांराधाविचारक रैंमनमेरे। माधोपियाकोआनिमिलाओ नाहींतो प्राणतजौं छिनमेरे॥ हमकोछांड़िचलेबेनीमाधो राधाशोचकरैंमनमेरे॥१॥ अगहनगेंदबनायसां वरेजायखेलैंतटयमुनाकेरे। खेलतगेंदगिरोयमुना में कालीनागनाथ्योछिनमेरे॥ हम०॥२॥ पूसमासहमसेछलकीनो आपचलेसैंयांमधुबनकूं॥ तुमनँदलाल जनमकेकपटीहमसोंकपटकियोमन में॥ हम०॥३॥ माहमासपियाजाड़ोलगतहै नींदनआवैमेरेनयननकूं॥ हमकोयोगिनिकीनी माधोजीघरघरअलखजगावनकूं॥ ह०॥४॥ फागुनरंग बनाय साँवरे जायखेले सँगकुब्जाके॥ फेंटगुलालहाथपिचकारी मारतहैताकि२ घूँघटमें॥ ह०॥५॥ चैतमासफूलेबनटेसू ऊधोआयेसमु झावनको॥ सुमरनहाथगलेमृगछालाअंगविभू तिलगावनको॥ ह०॥६॥ मासबैशाखसैसबरी नारीआपनआयेसइयाँमधुबनमें। ऋतुग्रीषमअरु विरहसतावैविरहकीहूकलगीतनमें॥ हम०॥७॥ ज्येष्ठमेंज्वालाफुकैतनमेरऊधोकहियोघरआवनको।

एक तो अकेलीदूजेविरहसतावत आयगईऋतुब रषाकी ॥ ह० ॥ ८ ॥ लागेअषाढ़घुमड़िआयेब दराबिजलीचमकेमेरेआंगनमें ॥ चौंकिचौंकिचहुँ ओरनिहारोंजैसेमीनफिरेजलमें ॥ ह० ॥ ९ ॥ सा वनस्वामीहमसेछलकीन्हों प्रीतिकरीजायकुबिजा से ॥ अहोनँदलालप्राणकैसेराखूं नहींआयेश्याम वृंदाबनमें ॥ ह० ॥ १० ॥ भादौंभवननींदनहिंआवै मोरवाबोलेंयाहीमधुबनमें ॥ कोयलह्वैमैंबनबनढूँ ढूँसूखेतालवृंदावनके ॥ ११ ॥ बारामासनिर्मलअ येचंदागोरीसोवैअपनेआंगनमें ॥ सूरदासतबआ नमिलेहरिसुखीभईराधामनमें ॥ हमकोछांड़चले बेनीमाधो राधाशोचकरैमनमेंरे ॥ १२ ॥

॥ इतिबेनीमाधवजीकीबारामासीसंपूर्णम् ॥

अथ श्रीकृष्णचन्द्रजीकीबारामासी ।

प्रथममहीनाआषाढ़लगाबर्षाऋतुआई । पी तमहमरेश्यामसलोनेपातीभिजवाई ॥ कहौवेकै सेनहिंआये ॥ ऐसेचतुरसुजानश्यामचेरीनेबिल माये ॥ डालगएजादूकीफांसी ॥ श्रीराधागोपी त्यागकरीघरबारीकुबिजासी ॥ १ ॥ सावनमेंमन भावनहमतौदामनसोंलागी ॥ जबलोहमसोंप्रीति

बढ़ीहरिअबकाहेत्यागी ॥ सुनोंतुमऊधोमेरीसों॥
लाजशरमकितगईप्रीतिजबकीनीचेरीसों ॥ नहीं
मोहिंआवतिहैहांसी ॥ श्रीरा० ॥२॥ भादोंरैनिअँ
धियारीबोलेपीतमकीप्यारी ॥ अन्ननभावैनींदन
आवैसंकटअतिभारी ॥ मिटावैसंकटक्योंऊधो ॥
ऐसेकुटिलकुजातश्यामकोजानतिहीसूधो ॥ मा
रिगयेविरहाकीगासी ॥ श्रीरा० ॥३॥ लागतक्वार
कनागतआयेसबकोइधर्मकरै ॥ मैंभीधर्मकरौंगी
जबहींप्रीसमनजरपरै ॥ मिलावैहैकोईऐसा ॥ लै
अक्रूरगयोमथुराकोकारियेरीकैसा ॥ बुद्धिवाकीने
अभिमानी ॥ श्रीरा० ॥ ४ ॥ कात्तिककौतुककि
योकृष्णनेहमसबकोउजानी । आखरजातअहीर
श्यामकेकुबिजामनमानी ॥ कंसकीहैआखिरचे
री ॥ याहीतेदिनरैनआँखमेरीफरकतहैडेरी ॥ ल
गीमेरेजियकोचौरासी ॥ श्रीरा० ॥ ५ ॥ अगह
नमें मनचमकनलागा धड़कतिहैछाती ॥ उद्धव
हाथसँदेशाभेजाबाँचौरीपाती ॥ लिखौकुछतुमभी
बालमकूं॥जोन मिलोगे वेगीजियतनहिंपावोगे
हमकूं ॥ हमारेजियकेसुखराशी ॥ श्रीरा० ॥६॥
पूषमासमेंचलेगयेमेरेप्रीतमसेप्यारे ॥ काननलागे

दूतकरीहमनयननसेन्यारे ॥ हमैंयहमदनसतावत
है। जियकेजारनकाजसंदेशोऊधोलावतहै ॥ ख-
बरतुमलीजोअविनाशी ॥ श्रीरा० ॥ ७ ॥ माह
नाहकेडाहापियातुमछोड़ीहमजानी। रोवति उठ-
तिकराहिबातसबऊधोनेजानी ॥ ज्ञानकी बातेंदर
शाईकृष्णहिदेहुँमिलायलायसबगोपीसमुझाई ॥
झूठसबहीकेमनभासी ॥ श्रीरा० ॥ ८ ॥ फागुन
फींकोलगैरैनिदिनहोयरहीविसमें ॥ पातीबाँचत
नेमसखीयक्योंबोलीरिसमें ॥ लगेअबसाहकरन
चोरी ॥ हमरेजियतकान्हकितबांदीसंगखेलेंहोरी॥
खबरमेरीलीजैकैलाशी ॥ श्रीरा० ॥९॥ चैताचिंता
मेंजरौंबरौंमैंगिरतीकुइयाँमें ॥ कहियोमदनगुपाल
संगकुबिजाकूलेआमें ॥ कछूइनबातनकोडरना॥
हमगोपीदरशनकीप्यासीऔरनहींकरना ॥ खबर
मेरीलीजैब्रजबासी ॥ श्रीरा० ॥ १० ॥ लागतही
बैशाखसाखसबहीकेघरआई ॥ ऊधोजीनेजायकृ-
ष्णसेऐसासमुझाई ॥ पैजतुमहकनाहकरोपी ॥
हाड़माँसगलिगयेबावरीह्वैगईसबगोपी ॥ लेहिंगी
करवटहूकासी ॥ श्रीरा० ॥ ११ ॥ ज्येष्ठमासमेंमि
लेकृष्णजबराधागोपीसे ॥ ब्रजबासिनआनंद भ-

योछूटेसबबाधासे ॥ कृष्णकीयहबारहमासी। पढ़ै सुनैवैकुण्ठसिधारेछूटैयमफांसी ॥ साँचयहमेरेमन भासी ॥ श्रीरा० ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीकृष्णचन्द्रकीबारहमासी संपूर्णम् ॥

॥ अथकौशल्याजीकी बारहमासी ॥

कार्तिककूचप्रयागसेकीनोकौशल्या शोचकरैं मनमेरे। रामलषणसियाबनकूंसिधारेदशरथप्राण तजेघरमेरे ॥ दरशनदेवोमेरे प्राण पियारेतुमबिन कोईनहींऔरहमारे ॥ १ ॥ अगहनगैलचलोजब प्यारेदरदहोतमोरेतनमेरे। चलतचलतजबपैंयांपि रानेकोईनतुम्हरोबाबनमेरे ॥ दर० ॥ २ ॥ पूषभ रतजबचलेलेनकूंसौतिनदाहभयोमन मेरे। मैंजा नीरघुबरघरआयेहैंफूलीनमांऊमोनयननमेरे ॥ दर शन० ॥ ३ ॥ माहैमासभरतफिर आयेहूकउठीमेरे उरमेरे। तलफातीफिरौंअयोध्यामाहींजैसेमीनफिरै जलमेरे ॥ दरश० ॥ ४ ॥ फागुनफिरबैठेबनमाहीं सीताहरनसुनाजबमैंरे। रामलषणअबढूंढतहोंय गवैदेहीकोकाननमेरे ॥ दरशन० ॥ ५ ॥ चैतमें चिंताकरैं भरतजी कैसेराज्यकरूंअबमैंरे। विनरघु

वरमेरोजीवननाहींमैंभीप्राणतजौंछिनमेरे ॥ दर-
श० ॥ ६ ॥ मासवैशाखभरतनहिंमानोशोचभयो
सबनगरीमेरे । रामलषणप्रभुसीयसमेताध्यानधरौं
सबनिजउरमेरे ॥ दर० ॥ ७ ॥ जेठमिलापभयोसु
ग्रीवावालीप्राणहतेशरमेरे । वालीमारिशैलफिरि
छायेताराबिकलभईमनमेरे ॥ दर० ॥ ८ ॥ लागो
अषाढ़घुमड़रहेबदराशोचभयोअबमोमनमेरे । बि
नमोरेलालबागसबसूनेशोकपड़ोसबनगरीमेरे ॥
दर० ॥ ६ ॥ सावनघनगरजतचहुँओरारामलषण
मोरेपर्वतपेरे । बिनसियसंगशोचउरहोयहैमेरेहूप्रा
णधरेउनमेरे ॥ दर० ॥ १० ॥ भादौंमेबंदरसबधाये
पूरबपश्चिमदक्षिणमेरे ॥ कूदसमुद्रहनुमानसिधा
रेसीताखबरदईछिनमेरे ॥ दर० ॥ ११ ॥ क्वांरत्रिकूट
लंकजबजारीरावणप्राणबसेउनमेरे ॥ रावणमारि
रामघरआयेआनँदबधाईमोगृहमेरे ॥ दर० ॥१२॥
देवीसिंहासियारघुबरकोध्यानधरेंघरबाहरमेरे ॥ तु-
मबिनस्वामीकोईनहींमेरापाँयधरोअबमेरेशिरपैरे ।
॥ दरशन० ॥ १३ ॥

॥ इति श्रीकौशल्याजीकीबारहमासी संपूर्ण ॥

॥ अथ युगुलकिशोरकी बारामासी ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ आषाढ़आशाकरौंजुप्रणकरोकृष्णफेरी। कालीघटाघुमड़िचढ़िछाईपवनचलैसीरी ॥ बिजलीचमकेहियरालरजेधीरजनहिंधरती। बिनानीरजैसेमीनतलफैदुखियादुखभरती ॥ १ ॥ सावनसमुझिपरीमनमेरे आवैंगेबलमा। सादीकरौंपियाघरआवें आईऋतुबामा ॥ योवनखोलधरोंउनआगे अन्तरनहिंरखना। सादीकरौंपियाघरआयेवेरसकीबतियां ॥ २ ॥ भादौंगहरगँभीरपियानहिंआयेरीमाई। सूनीसेजतड़फरहिकामिनिविरहविथाछाई ॥ जलथलनीरभस्योनंदियनमें चातकमरैंप्यासे। अपनेसुखकेलोगबहुतहैंकुटुंबसासुससुरे ॥ ३ ॥ कांरकरारकियोसखियनसेनहिंआयेबलमा। मैंनिरभागीत्यागिपियापरदेशगयेरीमा ॥ परदेशिनकाबुरामामलासुनिफाटैछाती ॥ ४ ॥ वर्षागईशरदऋतुआईनिर्मलभयेचंदा ॥ कार्त्तिकसुंदरखिलीचांदनी डरपैजीमेरा ॥ प्रीतममेरेबनेलहरियाओछीचंपकली ॥ अबकेबिछुड़ेरामामिलावैंज्योंबेरसमोती ॥ ५ ॥ मृग

शिरभाग्यभरीनखशिखसौंशीशफूलटीका । का
हिसखीरीपहिरिदिखाऊंपियबिनसबफीका ॥ ६ ॥
पूसपियापरदेशगयेकछुखबरनहींपाई । पंडितपू
छोश्रौरज्योतिषीकहांबसेसांई ॥ महादेवपूजाफल
पाऊंमहादेवदेवा ॥ शंभुसहायनकरोहमारोपूरील
च्छविचारी ॥ ७ ॥ माहमासभोगीऋतुश्राइ जो
काहूपैबनश्रावै। तोसकतांकियासौंडनिहालीपिया
कंठलावै ॥ ८ ॥ शरदीगईगरमऋतुश्राई बसन्त
कीत्यारी । हाथमेंलालगुलालफेंटमेंरंगभरीझारी॥
काहूसखीनेपियाभिजोयेश्रापभीजश्राई। कहाक
रोंकछुवशनाहिंमेराबाहरडफबाजै ॥ ६ ॥ चैतेचिं
तालगीजियामेंफूलोबनराई । सुंदरफूलखिलेमधु
बनमेंमैएकलिमुरझाई ॥ १० ॥ भरबैशाखलालभ
येकेसूश्यामवरणगोरी । महीपियानेकछुनहिंकी
नोसोमोहबततोरी ॥ ११ ॥ जेठमासमेंधूपपड़ैहैल
गैकठिनभारी । ऐसेमेंकोई गैलचलेगाछांड़करू
गहरी ॥ १२ ॥ जगन्नाथकीबारहमासीगावैयुगल
किशोरी । सीखैसुनैपरमपदपावै श्रौरकटैयमफां
सी ॥ १३ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ इति श्रीयुगुलकिशोरजीकीबारामासीसंपूर्णम् ॥

॥ अथगोपीबलदाऊजीकी बारामासी ॥

श्रीः ॥ जीबलवीरगयेजबते हरिआपनआये नपातीपठाई ॥ छलबलकीन्होंहरिबहुतकहमसों जायबसेहैंसमुद्रतटमाहीं ॥ जपतपनेमकियोहरि सोंहममाघहनायहरीबरपाये ॥ १ ॥ फागुनफाग खेलेंहरिहमसों कीन्हीप्रीतिकुबिजामनमानी ॥ मा माकंसमधुपुरीमोसिधारेदुष्टनकोप्रभुमारिगिराई ॥ २ ॥ चैत्ररुक्मिणीपत्रलिखिभेजोदेखतपत्रकुण्डि नपुरजाई ॥ रुक्मिणीप्रियअतिलागीहरीकूं प्रेम प्रीतिकछुकहीनजाई ॥ ३ ॥ मणिकेकाजगयेबै शाखमों जाम्बवन्तसोंकीन्हलड़ाई ॥ जाम्बवती भेंटकरीहरिकेतबसबसंकोचदीनामिटाई ॥ ४ ॥ ज्ये ष्ठमासप्रभुगयेसुतदेवकीविप्रभयेमनकोहरषाई ॥ ब हुलखनामराजसुखदीन्होंभक्तनकेघरबजतबधाई॥ ५ ॥ आषाढ़कामिनीसुखबहुदीन्हों आठोंपहरात्रि याकरेंसेवकाई ॥ गरजतबादलचमकतबिजलीदा दुरशोरकरेंअधिकाई ॥ ६ ॥ श्रावणबूंदबरसतझूम झूमसत्यभामासँगरहेलुभाई ॥ झूलतरंगहिंडोला मोहनप्रेमतियनकेकहीयनजाई ॥ ७ ॥ भादौंको

यलबोलतबनमें पीवपीवपपिहारटलाई ॥ उपजत कामसतावतनिशिदिन हरिबिनजियकैसेसमझा ई ॥ ८ ॥ क्वाँरअगस्त्यजलसोखलियोहै पंथचले जोमनुजसुखपाई ॥ पांडवकोवासुदेवासिधारेका शिपुरीत्तणमाहिंजराई ॥ ९ ॥ कार्त्तिकदीपउजरैं सबसखियांघरघरआनँदबजतबधाई ॥ सोलाहजा रसखियांसँगरमनेएकसौआठप्रभुकेमनभाई ॥१०॥ अगहनतिलकअनिरुद्धकोदीन्हों सौंपआपअप नीप्रभुताई ॥ राजपाटसबहीसुखदीन्होंआनँदमं गलहर्षबधाई ॥ ११ ॥ पूषहरीहमसोंजदभेंटकुरुत्ते त्रकोग्रहणनहाई ॥ बारबारमनहर्षभयोअतिकिंक रप्रभुगुणकरतबड़ाई ॥ १२ ॥

॥ इति किंकरप्रभुकृतेगोपीवल्लभऊमीकीबारामासीसंपूर्णम् ॥

॥ कुबरीसंगविहारवर्णनबारहमासी ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ कृष्णअकेलेगयेद्वारका छाँड़गयेसबब्रजबाला । कुबजादासीकंसरायकी मोहनपरजादूडाला ॥ अषाढ़आशाकरलीजेतुम्हा रीनारिअकेलीकुञ्जनमें । हमकूंछांड़िबसेजायकुब जासंगमाधोवनमें ॥ दासीसेतोप्रीतिलगाई मोह

लियाबैरिनाछिनमें । सौतहमारीजन्मकीबैरिनवि
लमायाहरिनैननमें ॥ पतियांलिखतीमतलबगर
जीकैसेलिखूंदेगयेटाला ॥ कुब० ॥१॥ सावनआ
वनकहगयेसज्जनहमसेमोहनवचनकिया । मैंख
ड़ीदेखतीराहसखीरी अजहुँनआयेकृष्णपिया ॥
तीजनकोत्यवहारनगरमेंसबसखियांशृङ्गारकिया।
काजलटीकीदियेशीशपरवस्तरओढ़नयानया ॥
श्यामबिनामेरीसेजअलूणीबागनमेंभूलाडाला ।
कु० ॥२॥ भादौंमहीनेगणेशचौथहैसबसखियांग
णपतिपूजै । धूपदीपसिंदूरपुष्पनैवेद्यचलैंलपटेगुंजै
॥ हाथजोड़करखड़ीजीराधिकानाथअरजमैंकरूंतु
जै । श्यामहमारामिलायदेवोबिनमोहनकछुना
सूजै ॥ इतनाकारजसारोगजाननऋधिसिद्धिके
करणेवाले । कुब० ॥३॥ आसोजमहीनेदेवीअं
बिकाराधापूजैंअपनीगरज । हाथजोड़करकरूंजि
विनतीमातामेरीसुनूंअरज ॥ पियागयेपरदेशद्वा
रकापिवकारणहुईपीलीजरद । पीवपीवकरतीरैन
दिनयेतोमेरेवड़ादरद ॥ इतनाकारजसारोजीअंबि
काभेंटचढ़ाऊंछत्तरमाला । कुब० ॥४॥ कार्तिकउ
त्तमबड़ामासहैसबसखियांकार्तिकन्हावें । बड़ेसबेरे

उठकरहरिमंदिरहरियशगावैं ॥ दुलैमहलअरुघर घरमंदिरआजादिवालीदरशावें । पूजैंलक्ष्मीनारी नरपतिब्रतासबशिरनावें॥ श्यामबिनामेरीसेजअ लूनीऔरजगतमेंउजियाला । कुब० ॥५॥ मृग शिरमेंमोहनघरनाहींसोडगिंदवाभरवाती । मैंतेरे वास्तेरेसमीपलँगबिछनाकरवाती ॥ आपविगर मैंसोऊंजीअकेलीसूनीसेजफटेछाती॥दिलअपनेकूं शोचकैलाखजतनकरसमझाती ॥ डालगलेमेंफां सिगयेब्रजवासिबतावोहमकूंलाला । कुब० ॥६॥ पौषरोषमैंकरूं जिकृष्णपरइसऋतुमेंआयानाहीं । मारीठंढकीनींदनहिंआवैमुझसेजमाहीं ॥ जाड़ा नेमोयबहुतसतायाफेरकामनेडसखाई । मैंझुरझुर पिंजरहुईआयचेहरेपरस्याईछाई ॥ ज्यूंज्यूंयादमें याआवैहृदयमेंत्यूंत्यूंवदनपड़ैकाला । कुब० ॥७॥ माहमहीनेवसंतपञ्चमीजोघरहोतामेराकंत । सबस खियनमेंखेलतीखूबमचातीआजवसंत।मैंखेलनकूं कैसेजाऊंनहींमिलेरीमुझकूंकंत । दिलअपनेमेंशो चकरबैठरहीमैंआपनिचंत ॥ चैननहींदिनरैनसाँ वरादरशद्योमुरलीवाला । कुब० ॥८॥ फागुनमें मोहनघरनाहींफागपियाविनलागीअगन । गो

रात्रदनमेंबुझतीनाहींआयकरोकोइक्रोड़जतन ॥ संघकीसहेलीबनिअलबेली होरीखेलेंसङ्गसजन । श्यामहमाराजायकरआपलगाईकुबजासेलगन ॥ फागुनआगलगीजीवदनाबिचतनके बीचउठीज्वाला । कुब० ॥६॥ चैत्रमहीनालग्योसखीरीसबस खियांपूजेंगणगोर । उनकाबालमल्यावसीहरीहरी दूबजीयुलातोर ॥ मैंभीपूजूंभाइगवरजावेगीमिलावोमोहनाचितचोर । गयेद्वारकाप्रीतिकरकुबजासों होगयेकठोर ॥ इतनोकारजकरोजिगवरजानहिं तोहाथलेऊँमाला । कुब० ॥१०॥ लग्यामासवैशाखग्यारवांग्रीषमऋतुआईहेली । बिनाश्यामकेब असबत्यागगलेडालूंसेली ॥ कितोबारवांमासबीचआवेंगेंकृष्णमेरीजोअली । करकैयोगिनकाभेषजायढूंढूंगीकृष्णकूंगलीगली ॥ यहीनेममेंलियाजीवबिचराखो पतमुरलीवाला ॥ कुब० ॥११॥ ज्येष्ठमासमेंपड़ेधूपलूलागेअंगमेंराजीवले । वेगिपधारोआयसाँवरालपटावोमोयआयगले ॥ बीतेबारामासआगयोअधिकमासआगेज्योभले । लागेजोफरकनेअंगसनमुजानेत्रसुखामचले ॥ यही शकुनपरमिलेंकृष्णबांद्वज्यों बधाईसबव्रजबाला

कुबजा० ॥१२॥ अधिकमहीनेकृष्णपधारेराधेकूंदी यादरशन। कसअँगियादीजोट्टटकरखुशीहुईमन मेंपरसन॥ श्यामपधारेआजसखीरीसबब्रजहोरही हैधनधन। बटैबधाईहोरहीखुशवक्तीसबहीकेमन ॥ प्रेमसागरमेंअमृतबरसैतनुकीतृषामिटीज्वाला। कुबजा० ॥१३॥

इति श्रीकृष्णकूबरीमंगलविहारवर्णनबारहमासीसमाप्ता॥

॥ राधाजीकीबारहमासी ॥

सावन बिना गिरधारी, सूनीहै सेज अटारी। सावनमो सब साँवरी, झूलत पियके संग॥ हमरो तो नंदलाल बिन, जरोजात सब अङ्ग। भादौं भवनना भावे, नित रैनि बिरहा सतावे॥ भादौं में मुहिं कंत बिन, घर अँगना न सुहात। जैसे माछी शहदकी, कर मलिमलि पछतात॥ क्वारकमलजल फूले, केहि देश बिदेशी भूले। क्वारमास मोंजल सब कमल, रहत हैं जलबिच फूल॥ हमरे तो नंदलाल बिन, उठै करेजे शूल। कार्तिक अधिक दुःखदायी, उन बिन कछु न सुहाई॥ कार्तिक प्यारे कृष्णजी, केलि करें चहुँ

ओर। हमरो तो बिन श्यामके, भयो जातहै भोर॥ अगहन पड़न लागो शीता, अजहुँ न घर आये मीता। अगहन मों बिनश्यामके, रोमरोम भह रात॥ सुधिआये छाती फटे, पाती लिखी न जात। पूसै पिया जो न अइहैं, जीवत हमैं ना पैहैं॥ पूस दुःख कासों कहों, मोसों कहो न जाय। उन बिन कोऊ ऐसखी, नाहीं देत दिखाय॥ माहै न जग बिच चैन, हमैं बिथा दिनरैन। माहमास में ऐसखी, मरीजात बिन पीव॥ जैसे खाल लो हार की, सांस लेइ बिन जीव। फागुन फाग सब खेलैं, अबीर गुलाल रंगमेलैं॥ फागुनमें यह शोच है, हरिहैं केहिके सङ्ग। हमरो तो यहि शोचमें, सूखि गयो सब अङ्ग॥ ऋतु चैत सकल बनफूले केहि देश सजनवां भूले। चैतमासमों फूल सब रहे सखीरी फूलि। हमरो तो नँदलाल अब, रहो कहांहै भूलि॥ वैशाखसाख क्या उसकी, जानी न बिथा मेरे जिवकी॥ वैशाखमासकी थी खबर अजहुँ न आये श्याम। साखगई मोहिं श्याम बिन, नेक नहीं आराम॥ जेठतपनतन जारी खन नीचे खन जात अटारी॥ जेठतपन मोरी

ऐसखी, जारे देत है देह। पिव सुखमें अस हम जरैं, ऐसो होत सनेह ॥ माह आषाढ़ जबलागा परदेशी देशको भागा ॥ आषाढ़ मासमों ए सखी, पिवनहिं आये तीर। उनबिन दोनों नैन से रक्त बहै जिमिनीर ॥ लौंद मोहन सूरत आये दुःख सब तनके बिसराये ॥ लौंदमास मों आय के, कन्तलियो लपटाय। तनुके दुःख सारेहरे, दिये सकल सुख आय ॥१॥ ॥ इति ॥

॥ ललितासखीकी बारामासी ॥

कौन उपावकरौं मोरी आली, श्याम भये कुबरी बश जाई ॥ चैतमास मोहिं मदन सतावै, बैशाखमास बहुतै दुख पावै ॥ ज्येठमास तनुतपै घामज्यों, अंगचीरमोहिंएकोनसुहाई ॥ आषाढ़ मासघनघेरिआयेबदरा, सावनमासबहैपुरवाई ॥ भादौंअगमपंथनाहिंसूझै, जलसेभरिगईतालतलाई ॥ क्वारमास श्याम नहिं आये, कार्त्तिक दियना अकाश बराई॥ अगहन अग्रसनेह श्याम बश, कोपतियां हमरी लैजाई ॥ पूषमास मोहिं शीत सतावत, माघ बिना पिय जाड़ न जाई ॥

फागुनफगुवा खेलब केकरे सँग, बिना श्याम अ-
रु बिनु बलराई ॥ इति ॥

॥ बालमुकुन्दकृतबारामासी ॥

शुरू आषाढ़ ऐ प्यारे ॥ छुवे बँगले जगत सारे ॥ भरे आकाशघन कारे ॥ अजहुँ आया न निर्मोई ॥ मिलावे मेरे दिलबरसे है ऐसा जक्त में कोई ॥ १ ॥ हुवासावनशुरू जबसे ॥ जलैदूना जिगर तबसे न पाया वो किसी ढबसे ॥ बयस योंहीं सभी खोई ॥ मिलावे मेरे दिलबर से है ऐसा जक्तमें कोई ॥२॥ ये भादोने दिखायारंग । करैं बिरहिनसो दादुर जंग ॥ जो होती प्राण प्रीतम संग न डरपाता मुझे कोई । मिलावे मेरे दिलबरसे० ॥३॥ महीना कारका आया । पिया ने नेह बिसराया ॥ करै अब सौत मन भाया ॥ जलनतीहै मुझे सोई। मिलावै मेरे दिलबरसे० ॥ ॥४॥ महीना कातिक के आली । पुजै घर २ में दीवाली ॥ हमैं ये ऋतु गई खाली । योंहिं बरसात भररोई॥ मिलावै मेरे दिलबरसे० ॥५॥ कहां है आय मिल मीता। अरे मृगशिर तलक बीता॥

न छोड़े तव बिरह जीता। जलाकर क्या नफा होई ॥ मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥६॥ महीने पूष श्रो साजन। बहुत ढूंढ़ा मैं बन जोगन ॥ न पाया पर तेरा दरशन मिलो अभिलाषहै योई। मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥७॥ आय फिर माहने घेरा। न प्रीतमका हुवा फेरा ॥ लिया तरसाय बहुतेरा। दिखा अब आय मुख लोई ॥ मिलावैं मेरे दिलवरसे० ॥८॥ मस्त फागुन महीनाहै। ध्यानतैं कुछ न कीना है ॥ उन्हीका सत्यजीना है। जो सोवैं मिल जने दोई ॥ मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥९॥ चैत चिंता हुई भारी। न आया प्राण आधारी ॥ रही रोती बिरहमारी। कवन अघदुःख असहोई ॥ मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥ ॥१०॥ लगा वैशाख एप्यारे। बिरहलूने जिगर जारे ॥ खबरले प्राण आधारे। प्रीत क्यों चित्त से धोई ॥ मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥११॥ जेठमें मिलगया दिलदार। सलूनो पायता उजियार ॥ सजनसँग सब करूँ त्योहार। कथननहिंबालकी गोई ॥ मिलावैमेरेदिलवरसे है ऐसा जक्तमें कोई१२

इति श्रीबालमुकुन्दकृतबारहमासीसम्पूर्णम् ॥

॥ अथ बिरहिनीकी बारहमासी ॥

महीना आषाढ़का आया। विरहका जल जगमें छाया ॥ चलत पगछाड़ जिगरखाया। चमकै बिजुली डरपै काया ॥ दोहा ॥ पवन शरद तनु लगतही, उठे करेजे हूक। कूक करै कोयल जभी, करै जिगरके टूक ॥ सेजहै खाँड़ेकी धारे। तुझ बिना ओ दिलवर प्यारे ॥१॥ हुवा जब सावनका आवन। हिंडोले मिल झूलें कामन ॥ गावती मलार मन भामन। बरस्ता मेह दमकै दामन ॥ दोहा ॥ मैं बौरी देखूँ खड़ी, थमैं नैन नहिं नीर। सावनमें क्यों बिछुड़कै, दुखदीना बेपीर ॥ हुवाक्या भला दई मार। तुझ० ॥२॥ महीना भादोंका बरजै। घटाकालीशिरपरगरजै ॥ देख अंधेर हिया लरजै। कामतनु चढ़ दौड़ा करजै ॥ दोहा ॥ मरा पपीहा ना मरे, करै मेरे ढिग पीय। सुनत ताहिकी पीयपी, निकसत मेरो जीय ॥ डरूँमैं लख बादर कारे। तुझ० ॥३॥ महीना असौजका लागा। पियाने नेह सभी त्यागा ॥ कहो जाकर येही कागा। तजा क्यों

नेह अरु अनुरागा ॥ दोहा ॥ हाय दई कैसी भई, बूड़ मरूं कितजाय । खबर न उस दिलदार की, कोऊ आय सुनाय ॥ मरी इसही गमके मारे। तुझ० ॥४॥ लगा कार्तिक शुभ अतिसुंदर। होत उजियार सभीमंदर ॥ ताश गंजीफा और चौंसर खेलते नर नारी घरघर ॥ दोहा ॥ पूजत हैं श्री लक्ष्मी, निज २ प्रीतमसंग । मुझ बिरहिनके हृदयमें, देखत उठत तरंग ॥ थके मेरे पौरुष सारे तुझ० ॥५॥ महीना आयगया अगहन । न पाया पर तेरा दरशन ॥ रहम खाकर आ मिल साजन । करूं वारी तुझपर तन मन ॥ दोहा ॥ बहुतेरा समझात हौं, मनुवाँ मानत नाहिं । बार२ येही कहै, चल प्यारेके पाहिं ॥ सभी समझाके हैं हारे । तुझ० ॥६॥ पूषमें पड़ताहै पाला । बदन सगरा होवै काला ॥ खिले हैं नरगिस गुल्लाला । हुई लख तुझ बिन बेहाला ॥ दोहा ॥ पवन बहै सुख अति सरस, शीतल मंद सुगंध । हे चित चोर कठोर हिय, तुझ बिन कहँ आनंद ॥ जरा तो ध्यान इधरलारे । तुझ० ॥७॥ महीना पूषसे आयामाह । बहुतमैं देखी तेरीराह ॥ हमेंयहऋतु

खालीगइआह। तुझबिना कैसेहो निर्वाह॥ दोहा॥ फूलखिले हरचमनमें, तरह २ के गुल। भौंरे फूलों पर फिरें, फिरती हैं बुलबुल॥ तेरे बिन काँटेहैं सारे। तुझ०॥८॥ महीना फागुन का रंग गीर। सभी रँगरंगें चोलिया चीर॥ तड़े रँग और गुलाब अधीर। हरतरफहैमस्तोंकीभीर॥ दो०॥ देख २ ये ऋतु मेरे, दिलते निकलै हाय। तुझ बिन ऐजानी जिगर, यों ऋतु खाली जाय॥ मरीहरतरह बिनामारे। तुझ०॥९॥ चैतमेंचित्तन मानैधीर॥ पड़ै गरमी ज्यों मारे तीर। खिले टेसूदै दिल्कू चीर॥ इन दिनों सुधि भूले बेपीर॥ दोहा॥ अरीचमेली बावरी, कहा रिझावे मोय। जो प्रीतम होतो निकट, तौउ बतातीतोय॥ पर करूंक्याहूंलाचारे। तुझ०॥१०॥ लगा बैशाखत पनपरती। जलै असमान और धरती॥ मैं तुज बिन सेजोंपै जरती। रातदिनहै गमकी भरती॥ दोहा॥ सबनरनारी हँसतहैं, देख २ ममढंग। कोइकहै बौरीभई, कोइकहै पीभंग॥ सहूं निशि दिन तपनि सारे। तुझ०॥११॥ जेठ जब लागा गर्मी पड़ी। बदनमें लुवै लवै है कड़ी॥ भला

कब आवैगीवोघड़ी ॥ गले मिल तेरे खुशी हो बड़ी। दोहा ॥ अरे बावरे कागरे, कहा मनावै काँय। मोरे भाग लिखो विरह, साजन मिलनो नाँय ॥ हायमें गये मास बारे। तुम्ह० ॥१२॥ लौंद में मिले गुरू घासी। कही सुंदर बारहमासी ॥ कथनकी बालमुकुंद आसी। है ठाकुरद्वारेकावासी ॥ दोहा ॥ ले आज्ञा गुरु देवकी, पूरण विश्वे बीस। चैत्रशुक्ल तिथि अष्टमी, संवतसैंतालीस ॥ सदा पड़ते हैं पौबारे। तुम्ह० ॥१३॥

इति बारहमासी संग्रह सम्पूर्णम् ॥

॥ भांगके गुण ॥

कवित्त ॥ मिरचमसाला संफकासनी मिलाय भांगखायेते अनेकरोगअङ्गकेउबारती। जारती जलंधरभगन्दरकठोदरऔबवासीरसन्निपातबावन विदारती ॥ सुकविशिवरामदादखाजकोखराबक रिछींकछईछअननसूरको निकारती। पीनसप्र मेह बीसबावन तरहकेरोग कमर दरदको गरद करिडारती ॥१॥

॥ परमेश्वर स्तुति ॥

राम राम राम राम रामहीका हूं गुलाम सेवा आठ याम पर पलकौ न होती । राम राम सीता राम राम राम सीताराम रोम रोममें रमें हमेस इच्छा होती ॥ धराधर धरन भरन जग जगन्नाथ मेरे हू अनाथ पै जु दायादृष्टि होती । सीतापति राम राम सीतापति राम राम कृष्णबिहारी मेरी कुदशा न होती ॥

इति १०० पुस्तक संग्रह समाप्तम्।

पुस्तक मिलने का ठिकाना :—

पण्डित हरिशंकरजी शास्त्री
अध्यक्ष संस्कृत महाविद्यालय
हरद्वार

नजायर चारों हाईकोर्टों के बम्बई टाइप में मोटे सफेद कागजपर अत्यन्त शुद्धतापूर्वक छपा है यह हमारे राजा गवर्नमेन्टका धर्म शास्त्रहै और हम उनकी प्रजा हैं इसकारण इसग्रन्थ को प्रत्येक मनुष्य को लेना चाहिये इस पुस्तक में यह विषय वर्णन किया गया है कि अमुक अपराध करने से इतना दंड (सजा) होताहै इस पुस्तक के द्वारा सम्पूर्ण अपराधों से मनुष्य बचकर अपनी मान मर्यादा रखकर इस रामराज्य में शेष आयु बिता सक्ता है ऐसे सर्वोपयोगी पुस्तकका मूल्य सुन्दर विलायती कपड़ेकीजिल्द बँधी का डाकव्यय के खर्चे सहित घर बैठे १॥) और सादी जिल्द का १।=) में मिलेगा। जाप्ता दीवानी छपता है २) जाप्ता फौजदारी छपता है २॥)

६४ तंत्रोंकासार सर्वतंत्रोत्तम-

श्यामारहस्यतंत्र.

भाषाटीकासहित।

आज पुनः एकवार उसी महान् अद्भुत ग्रन्थको प्रकाशित करते हैं जिसकी उत्तमताको देखकर नैपाल उत्तराखण्ड, दक्षिण बंगाल, विहार, काश्मीर, ब्रह्मा, आदिक तमाम भारत के मंत्र शास्त्रज्ञ मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहे हैं भारतवर्षही क्यों लङ्का अफरीका, यूरुप आदि में जिसका प्रचार हुआ है जिसकी उत्त मता को निहार हजारों मनुष्य हमारे कृतज्ञ हुए हैं वास्तव में हमारे पास सैकड़ों तंत्रशास्त्रके ग्रन्थ हस्त लिखितहैं उन सब में सेही छांटकर यह ग्रन्थ प्रकाशित कियाहै इस ग्रन्थ द्वारा हजारों मनुष्य अपनी २ अभीष्ट कामनाओं को प्राप्त हुएहैं इस बृहत्ग्रन्थ

में पन्द्रह परिच्छेद हैं प्रत्येक परिच्छेदमें अत्यावश्यक विषय वर्णन कियाहै अनुमान छः हजार श्लोक भाषाटीका सहित हैं ऐसे वृहत् ग्रन्थ को हमने बम्बई छापे में छापकर विलायती जिल्द बँधवादी है मूल्य खर्चे सहित केवल २।=) मात्र रक्खा है ॥

जागतीकला दूसरीबार की छपी.

केवल भाषा—अब की बार यह पुस्तक बहुतही बड़ी हो गई है मृतक पुरुषों की आत्मा को बुलाना, उनसे बात चीत करना अपनी मृतक प्राण प्यारी से कथन करना, मृतक मा बापसे गड़े हुये धनका वृत्तांत जानलेना मैसमेरिजम करनेका उपाय त्रिकाल की बात जानलेना, अध्यात्म चिकित्सा योगाभ्यास छाया पुरुष को बुलाना तंत्रके अजीब गरीब लटके इत्यादि सभीबातें इसमें हैं। इस एकही पुस्तक के पढ़लेने में और इसके अनुसार व्यवहार करने से पूरी सिद्धि प्राप्त होजाती है। मूल्य डाकव्यय सहित १≡) है ॥

नवनिद्धि.

नौ आने में नीचे लिखे नौ पुस्तक एक साथ मँगाने में मिलैंगे खर्चा ≋) कुल ।।।) में घरबैठे पहुंचावेंगे शीघ्रता करो ॥

१—अन्नपूर्णा तंत्र भाषाटीका सहित =)
२—आसुरीकल्प (वैदिककल्प) भाषाटीकासहित =)
३—गायत्री तंत्र भाषाटीका सबको लेना चाहिये =)
४—हनुमत् दुर्ग /)
५—पुत्रकामिक तंत्र भाषाटीका सहित =)
६—वाराह चिन्तामणि भाषाटीका सहित =)

७—सरस्वती तंत्र भाषाटीका सहित ≈)
८—विनायक कल्प भाषाटीका सहित ─)
९—दशमहाविद्या तंत्र भाषाटीका सहित ≈)

बस यहही हैं अलाहिदा २ लेने में इस मूल्य में मिलेंगी ॥

शिलजीत.

यह पत्थरका मद है हमने विक्रियार्थ मँगवाई है शुद्ध शिलाजीत हम ।≈) आने तोला बेचते हैं यह दुग्धमें जरासी खाने सेसंपूर्ण प्रमेह को नष्ट करके शरीर को निरोग और पुष्ट करताहै और भी बहुत औषधी मिलती हैं जो जरूरतहो मँगाओ ॥

धातुचिकित्सा.

भाषाटीका. इस पुस्तक में सोना रूपा आदिक धातु उपधातु रस उपरस के शोधन मारण अनुपान दोष शांति आदि आदि हैं यह ग्रन्थ महान परिश्रमसे तैयार हुआहै इसमें जो कुछ लिखा है वह ग्रन्थकार ने परीक्षा किये हैं बंबई छापे में सुन्दर छपा है मूल्य ।।) खर्चा ≈) कुल ।।≈)

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

पण्डित हरिशंकरजी शास्त्री.

ऋषिकुल संस्कृत महाविद्यालय

हरद्वार